# गिनती

1 मिस्र देश से इस्राएलियों के बाहर निकल
आने के दूसरे साल के दूसरे महीने के
पहले दिन, प्रभु ने सीनै जंगल में 'मिलने के
तम्बू' में मूसा से कहा, 2 इस्राएलियों के सभी
कबीलों[a] और पूर्वजों के घरानों के अनुसार,
एक-एक जन की गिनती की जाए। 3 तुम और
हारून उन लोगों को गिनें, जो 20 वर्ष या उस
से अधिक उम्र के हैं और फ़ौज में काम करने
लायक हों। 4 तुम्हारे साथ एक-एक गोत्र का
एक एक पुरुष भी हो, जो अपने पूर्वजों के
घराने का खास आदमी हो। 5 तुम्हारे उन
साथियों के नाम हैं - रूबेन के गोत्र में से शदर
का बेटा एलीसूर 6 शिमोन के गोत्र में से सूरी
शद्दै का बेटा शलूमीएल 7 यहूदा के गोत्र में से
अम्मीनादाब का बेटा नहशोन 8 इस्साकार के
गोत्र में से सूआर का बेटा नतनेल 9 जबूलून
के गोत्र में से हेलोन का बेटा एलीआब
10 यूसुफ़ वंशियों में से एप्रैम के गोत्र में से
अम्मीहूद का बेटा एलीशामा और मनश्शे
के गोत्र में से पदासूर का बेटा गमलीएल
11 बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का बेटा
अबीदान, 12 दान के गोत्र में से अम्मीशद्दै
का बेटा अहीहेज़ेर 13 आशेर के गोत्र में से
ओक्रान का बेटा पगीएल 14 गाद के गोत्र
में से दूएल का बेटा एल्यासाप 15 नप्ताली
के गोत्र में से एनाम का बेटा अहीरा 16 पूरे
झुण्ड में से जो आदमी अपने अपने बुज़ुर्गों के
गोत्रों के मुखिया होकर बुलाए गए, वे सब
यही हैं और इस्राएलियों के हज़ारों में खास
आदमी थे 17 जिन आदमियों के नाम ऊपर
लिखे हैं, उन सभी को मूसा और हारून ने
साथ लिया 18 उन्होंने दूसरे महीने के पहले
दिन सभी को इकट्ठा किया। तब इस्राएलियों
ने अपने - अपने पूर्वजों के घराने के अनुसार
बीस साल या उस से से ज़्यादा उम्र वालों के
नामों की गिनती करवायी और अपनी-अपनी
वंशावली लिखवायी। 19 जिस तरह प्रभु से
मूसा को आदेश मिला था, वैसा ही जंगल में
उसने किया। 20 इस्राएल के पहलौठे रूबेन
के वंश के जितने आदमी अपने गोत्र और
अपने पूर्वजों के घराने के अनुसार बीस साल
या उस से ऊपर थे और युद्ध में शामिल
होने के लायक थे, वे सभी अपने -अपने
नाम से गिने गए 21 रूबेन के गोत्र से साढ़े
छियालीस हज़ार लोग थे 22 शिमोन के वंश
के जितने आदमी अपने गोत्रों और अपने
पूर्वजों के घरानों के अनुसार बीस साल या
उस से अधिक उम्र के थे, और जो युद्ध करने
के लायक थे, वे सभी अपने नाम से गिने
गए 23 शिमोन के गोत्र के गिने हुए आदमी
उनसठ हज़ार तीन सौ थे 24 गाद के वंश
के जितने आदमी अपने गोत्रों और पूर्वजों
के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उस से
अधिक थे, जो लड़ाई में शामिल होने लायक
थे वे सभी अपने -अपने नाम से गिने गए ।
25 गाद के गोत्र से पैंतालीस हज़ार साढ़े छै
सौ आदमी थे। 26 यहूदा के वंश के जितने
आदमी अपने गोत्रों और पूर्वजों के घरानों
के मुताबिक बीस वर्ष या उस से अधिक
आयु के थे और युद्ध करने में योग्य थे, उन
सभी का नाम गिना गया। 27 यहूदा के गोत्र
के चौहत्तर हज़ार छै सौ थे । 28 इस्साकार
के वंश के जितने आदमी अपने कुलों और
अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस साल

[a] 1.2 गोत्रों

या उस से अधिक आयु के थे और फ़ौज
में काम करने लायक थे उनकी भी गिनती
हुयी । 29 इस्साकार के वंश के वे पुरुष गिने
गए जिन की उम्र बीस सा उस से अधिक
थी । ये वे थे जो युद्ध में भाग ले सकते
थे। 30 और जबूलून के कबीले में जितने
आदमी अपने कुलों और पूर्वजों के घरानों
के मुताबिक बीस साल या उससे ज्यादा उम्र
के थे, और युद्ध करने के लायक थे, वे सभी
अपने नाम लिखवाकर गिने गए। 31 सत्तावन
हज़ार चार सौ पुरुष जबूलून के गोत्र के थे
। 32 यूसुफ़ के वंश में से एप्रैम के वंश के
वे पुरुष अपने कुलों और पूर्वजों के घरानों
के अनुसार चुने गए, जो बीस वर्ष या उस
से अधिक थे, और सैनिक का काम कर
सकते थे । 33 साढ़े चालीस हज़ार एप्रैम गोत्र
के पुरुष थे । 34 मनश्शे के वंश के वंश से
भी इसी तरह का चुनाव हुआ । 35 मनश्शे
गोत्र के पुरुषों की संख्या चालीस हज़ार थी
। 36 अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों
के अनुसार बिन्यामीन वंश के 20 वर्ष और
उस से अधिक आयु के वे पुरुष जो युद्ध कर
सकते थे, गिन लिए गए । 37 ये सभी गिनती में
पैंतीस हज़ार चार सौ थे । 38 दान के वंश के
भी योग्य बीस या उसके ऊपर के आदमियों
को चुना गया । 39 दान के इन लोगों की
संख्या बासठ हज़ार सात सौ थी । 40 आशेर
के वंश से भी इसी आयु के लड़ाई कर सकने
वालों की गिनती की गयी । 41 आशेर के
गोत्र से साढ़े इकतालीस हज़ार पुरुष थे ।
42 नप्ताली के वंश से भी इस तरह की गिनती
की गयी. 43 ये लोग तिरपन हज़ार चार सौ थे
। 44 इस तरह से मूसा, हारून और इस्राएल
के बारह प्रधानों ने, जो कि अपने अपने
पूर्वजों के घराने के मुखिया थे, उन सभी को
गिना । 45 बीस साल या उस से अधिक उम्र
के वे लोग जो युद्ध कर सकते थे, अलग किए
गए। 46 कुल मिला कर छैः लाख, तीन हज़ार
साढ़े पाँच सौ पुरुष थे । 47 लेवीय अपने
पूर्वजों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए ।
48 प्रभु ने मूसा को आज्ञा दी थी 49 कि लेवीय
गोत्र की गिनती इस्राएलियों के साथ न करें
। 50 लेकिन लेवियों की गवाही के तम्बू पर
और उसके सारे समान पर और जो कुछ उसे
से सम्बन्ध रखता है उस पर प्रबन्धक ठहराने
को कहा गया । उन्हें समान सहित निवास
को उठाने की ज़िम्मेंदारी दी गयी थी । वे ही
वहाँ सेवा करने के लिए ठहराए गए । तम्बू
के आस पास उन्हें डेरा डालने को कहा गया
। 51 निवास को कहीं और ले जाने पर लेवी
ही उसे गिराएँ। जब खड़ा करना हो तो वे ही
करें । किसी और के निकट आने पर उसे मार
डाला जाए। 52 इस्राएली अपना -अपना डेरा
अपनी अपनी छावनी में और अपने-अपने
झुण्ड के पास खड़ा करें । 53 लेवीय अपने
तम्बू गवाही के तम्बू के चारों तरफ़ खड़े करें
। ऐसा इसलिए कि इस्राएलियों पर गुस्सा न
भड़क उठे । लेवी साक्षी के तम्बू को सुरक्षा दें
। 54 मूसा को प्रभु से मिले आदेश के अनुसार
उसने किया ।

**2** एक दिन प्रभु ने मूसा से कहा,
“इस्राएलियों से कहो कि मिलने वाले
तम्बू[a] के चारों ओर, और उसके सामने
अपने-अपने झण्डे खड़े करें । वे अपने पूर्वजों
के घराने के चिन्ह के पास अपने तम्बू लगाएँ।
3 पूर्व की तरफ़ अपने दलों के अनुसार डेरे
लगाएँ । वे ही यहूदा की छावनी वाले झण्डे
लोग होंगे। अम्मीनादाब का बेटा नहशोन
उनका प्रधान होगा । 4 उनके दल के गिने

[a] **2.1** मिलाप-तम्बू

हुए चौहत्तर हज़ार छः सौ आदमी थे। 5 उनके
पास वे इस्साकार के गोत्र के तम्बू लगाएँ।
सुआर का बेटा नतनेल उनका प्रधान ठहरे।
6 गिनती में उनके दल के चौवन हज़ार चार
सौ पुरुष थे। 7 इन के पास ज़बूलून के गोत्र
वाले रहेंगे । हेलोन का बेटा एलीआब उनका
मुखिया ठहरेगा। 8 गिनती में उनके दल के
सत्तावन हज़ार चार सौ पुरुष थे । 9 इस तरह
से यहूदा की छावनी में जितने अपने -अपने
दलों के अनुसार गिने गए, वे सभी कुल मिला
कर एक लाख छियासी हज़ार चार सौ हैं ।
सब से पहले ये ही चल पड़ें। 10 दक्षिण दिशा
की तरफ़ रूबेन की छावनी के झण्डे के लोग
अपने दलों के अनुसार रहें। शदेऊर का बेटा
एलीसूर उस का अगुवा होगा । 11 उनके दल
के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हज़ार हैं।
12 शिमोन के गोत्र के डेरे उनके पास खड़े
किए जाएँ । उनका प्रधान सूरीशद्दै का बेटा
शलूमीएल होगा। 13 उनके दल के गिने हुए
पुरुष उनसठ हज़ार तीन सौ हैं। 14 गाद के
दल का प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा
। 15 उनके दल के गिने हुए पुरुष पैंतालीस
हज़ार साढ़े छैः सौ हैं। 16 रूबेन की छावनी
में जितने अपने अपने दल के अनुसार गिने
गए, वे कुल मिला कर डेढ़ लाख एक हज़ार
साढ़े चार सौ है । ये लोग फिर निकल पड़े।
17 इन लोगों के पीछे और सभी छावनियों के
मध्य लेवी लोगों की छावनी सहित मिलाप
वाले तम्बू को रवाना किया जाए । जिस
तरतीब से वे तम्बू लगाएँ,उसी तरतीब से वे
अपनी-अपनी जगह पर अपने-अपने झण्डे के
पास-पास चलें । 18 पश्चिम की ओर एप्रैम की
छावनी के झुण्ड के लोग अपने अपने दलों
के अनुसार रहें। उनका नेतृत्व अम्मीहूद का
बेटा एलीशामा करे। 19 उनके दल में कुल
आदमी साढ़े चालीस हज़ार हैं । 20 मनश्शे
के गोत्र उनके पास रहें । पदासूर का बेटा
गमलीएल उनकी अगुवाई करे । 21 उनके
दल के गिने हुए पुरुष बत्तीस हज़ार दो सौ
हैं । 22 इसके बाद बिन्यामीन गोत्र के रहें
। उनका प्रधान गिदोनी का बेटा अबीदान
होगा । 23 इस दल के पैंतीस हज़ार चार
सौ आदमी है। 24 एप्रैम की छावनी के गिने
हुए एक लाख आठ हज़ार एक सौ पुरुष
थे । इन का तीसरा गोत्र है । 25 उत्तर की
ओर दान की छावनी के झण्डे के लोग
अपने-अपने दलों के मुताबिक रहें । उनका
प्रधान अम्मीशद्दै का बेटा अहीऐज़ेर होगा ।
26 उनके पुरुषों की संख्या बासठ हज़ार सात
सौ है । 27 उनके पास आशेर गोत्र के डेरे
खड़े किए जाएँ। पगीएल जो ओक्रान का
बेटा है वह उनका मुखिया ठहरे। 28 उनके
दल में पुरुषों की संख्या साढ़े इकतालीस
हज़ार है 29 इसके बाद नप्ताली के गोत्र के
लोग होंगे और उनका अध्यक्ष एनान का पुत्र
अहीरा होगा । 30 तिरपन हज़ार उनके दल
के लोग होंगे । 31 दान की छावनी में गिने
लोग डेढ़ लाख सात हज़ार छैः सौ हैं। ये
लोग अपने-अपने झण्डे के पास से होकर
सब से बाद में निकले। 32 अपने पूर्वजों के
घराने के अनुसार जब गिनती की गयी तो वे
सब मिला कर छः लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच
सौ थे । 33 लेकिन प्रभु ने मूसा को जो आदेश
दिया उसके अनुसार लेवीय इस्राएलियों में
नहीं गिने गए। 34 जो निर्देष प्रभु ने मूसा को
दिए उसी तरह अपने गोत्रों, और पूर्वजों के
घरानों के अनुसार अपने झण्डे के पास डेरे
लगाते थे और निकल पड़ते थे।

**3** सीनै पहाड़ के पास मूसा से प्रभु की
बातचीत के समय हारून और मूसा की
वंशावली यह थी। 2 हारून के बेटों के नाम

नादाब, अबीहू, एलीआजार और ईतामार
थे। 3 हारून के जो बेटे अभिषिक्त पुरोहित[a]
थे और इस कार्य के लिए अलग किए गए
थे, वे यही हैं। 4 जिस समय सीनै के जंगल
में प्रभु के सामने नादाब और अबीहू ऊपरी
आग ले गए थे, वे मर गए थे । उनके कोई
सन्तान उस समय नहीं थी । तभी एलीआजार
और ईतामार अपने पिता हारून के सामने
पुरोहित का काम करते रहे । 5 फिर प्रभु
ने मूसा से कहा, 6 लेवी कबीले के लोगों
को पास ले आकर हारून के सामने खड़ा
करें, ताकि वे सेवा करें । 7 जो कुछ उसकी
तरफ़ से और सारी मण्डली की तरफ़ से उन्हें
सुपुर्द किया जाए, वे उसकी देख-रेख करें ।
8 वे मिलाप वाले तम्बू के सारे सामान की
और इस्राएलियों की दी गयी चीज़ों की भी
रखवाली करें । 9 तुम लेवियों को हारून और
उसके बेटो को सौंप देना । वे पूरी तरह से
इस्राएलियों की ओर से हारून को अर्पित
किए गए हों । 10 हारून और उसके बेटों
को पुरोहित पद पर रखा जाए। वे अपने पद
को संभाल कर रखें । किसी दूसरे व्यक्ति के
पास आने पर वह मार डाला जाए। 11 प्रभु
ने मूसा से कहा, 12 “इस्राएली महिलाओं के
सभी पहलौठों के बदले में इस्राएलियों में से
लेवियों को ले लेता हूँ। इसलिए लेवीय मेरे
ही ठहरें । 13 सारे पहलौठे मेरे ही होंगे ।
जिस दिन मैंने मिस्र देश में पहलौठों को मारा
था, उसी दिन से मैंने इन्सान और जानवर
दोनों ही के पहलौठों को अलग ठहराया ।
इसलिए वे मेरे ही होंगे, मैं प्रभु हूँ। 14,15 सीनै
के जंगल में मूसा से प्रभु ने कहा ‘‘ लेवियों
में से जितने नर महीने या उस से अधिक हों,
उनको उनके पितरों और गोत्रों के अनुसार
गिन लो । 16 प्रभु से यह आदेश पाकर मूसा
ने प्रभु के कहे अनुसार उनको गिन लिया
। 17 लेवी के बेटों के नाम ये हैं - गेर्शोन,
कहात और मरारी । 18 गेर्शोन के जिन बेटों से
उसके कुल चलते गए, उनके नाम हैं लिब्नी
और शिमी । 19 कहात के जिन बेटों के कुल
आगे बढ़े वे हैं - अम्राम, यिसहार, हेब्रोन
और उज्जीएल । 20 मरारी के बेटे जिन से
उसके कुल चले, वे हैं - महली और मूशी
। ये लेवियों के कुल अपने पूर्वजों के घरानों
के अनुसार हैं । 21 गेर्शोन से लिब्नियों और
शिमियों के कुल शुरू हुए । 22 इन में से
जितने लोगों की उम्र एक महीने या उस से
अधिक थी, उन सब की गिनती साढ़े सात
हज़ार थी । 23 गेर्शोन वाले गोत्र, निवास के
पीछे पश्चिम की ओर अपने डेरे डाला करें
। 24 गेर्शोनियों के मूल-पुरुष से परिवार का
मुखिया लाएल का बेटा एल्यासाप हो ।
25 मिलाप वाले तम्बू की जो वस्तुएँ गेर्शोन
वंशियों को सुपुर्द की जाएँ, वे होंगी - निवास
और तम्बू, आवरण और मिलाप वाले तम्बू
से दरवाज़े का पर्दा , 26 और जो आंगन
निवास और वेदी के चारों ओर है, उसके
पर्दे और उसके दरवाज़े का पर्दा और सभी
डोरियाँ जो उस में काम आती थीं। 27 फिर
कहात से अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों,
और उज्जीएलियों के गोत्रों की शुरूवात हुयी
। 28 जितने नर की उम्र एक महीने की या उस
से अधिक थी उनकी संख्या आठ हज़ार छः
सौ थी । उन्हें पवित्र स्थानों की रखवाली
करनी थी । 29 कहाती गोत्र निवास की उस
अलंग पर अपने डेरे डालें जो दक्षिण की
ओर है. 30 कहात वाले गोत्रों से मूल-पुरुष
के परिवार का मुखिया उज्जीएल का बेटा
एलीसापान है। 31 उनको सौंपी जाने वाली
वस्तुएँ सन्दूक, मेंज़, दीवट 32 हारून पुरोहित

[a] 3.3 याजक

का बेटा एलीआज़र लेवियों के प्रधानों का
प्रधान हों। पवित्रस्थान की वस्तुओं की
रक्षा करने वालों के ऊपर वह अधिकारी
है। 33 मरारी से महलियों और मूशियों के
कुल प्रारम्भ हुए। 34 एक महीने से अधिक
उम्र वालों की संख्या छैः हज़ार दो सौ
थी। 35 मरारी के कुलों के मूल-पुरुष के
घराने का प्रधान अबीहैल का बेटा सूरीएल
हो। इन के डेरे निवास के उत्तर की ओर
हों। 36 जो वस्तुएँ मरारी वंशियों को सौंपी
जाएँ, वे उनकी देख-रेख करें, वे निवास
के तख्ते, बेड़े, खम्भे, कुर्सियाँ और सारा
सामान। 37 चारों ओर के आँगन के खम्भे
और उनकी कुर्सियाँ, खूँटे और डोरियाँ हों।
38 पूर्व की ओर मूसा और हारून और उसके
बेटों के तम्बू हों। इस्राएलियों के बदले में वे
पवित्रस्थान की रक्षा करें। अन्य कोई यदि
पास आता है तो उसे मार दिया जाए। 39 एक
महीने से अधिक आयु वाले जितने लेवीय
पुरुष थे, उन्हें मूसा और हारून ने गिना।
इनकी संख्या 22 हज़ार थी। 40 प्रभु ने मूसा से
कहा : एक महीने से अधिक सभी पहलौठे[a]
की गिनती कर लो। 41 पहलौठों की जगह
लेवियों को और इस्राएलियों के पशुओं के
सब पहलौठों के बदले लेवियों के पशुओं
को लो । मैं प्रभु हूँ । 42 प्रभु का यह निर्देष
पाकर मूसा ने इस्राएलियों के सभी पहलौठों
को गिन लिया । 43 एक महीने से अधिक
आयु के लोगों की गिनती बाईस हज़ार दो
सौ तिहत्तर थी। 44 प्रभु ने मूसा से कहा,
‘‘ इस्राएलियों के सभी पहलौठों के बदले
लेवियों को और उनके पशुओं के बदले
लेवियों के पशुओं को लो। लेवीय मेरे ही हों।
मैं प्रभु हूँ। 45 इस्राएलियों के सभी पहलौठों
के बदले लेवियों को और उनके पशुओं के
बदले लेवियों के पशुओं को लो। लेवीय मेरे
हैं - मैं प्रभु हूँ। 46 इस्राएलियों के पहलौठों
में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियों
से अधिक है, उन्हें छुड़ाने के लिए 47 एक
आदमी के पीछे पाँच शेकेल लो। पवित्रस्थान
के शेकेल के हिसाब से वे हों, अर्थात् बीस
गेरा का शेकेल हो। 48 जो धन उन अधिक
पहलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून
और उसके बेटों को देना। 49 जो इस्राएली
पहलौठे लेवियों के द्वारा छुड़ाए हुओं से
अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने छुड़ौती का
रूपया लिया। 50 एक हज़ार तीन सौ पैंसठ
शेकेल पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से
वसूल हुआ। 51 प्रभु के हुक्म के अनुसार मूसा
ने छुड़ाए हुओं का रूपया हारून और उसके
बेटों को दे दिया।

**4** प्रभु ने मूसा और हारून से कहा, 2 लेवी
लोगों में से कहातियों की उनकी गोत्रों
और पूर्वजों के परिवारों के आधार पर गिनती
करो। 3 अर्थात उनकी जो तीस साल से लेकर
पचास साल तक की उम्र वालों को फ़ौज में
जितने मिलाप वाले तम्बू में काम-काज करने
को भरती हैं । 4 मिलाप वाले तम्बू में अलग
की गयी[b] वस्तुओं के बारे में कहातियों का
काम यही होगा । 5 जब -जब छावनी चल
पड़े तब-तब हारून और उसके बेटे अन्दर
आकर बीच वाले पर्दे को उतार कर उस से
गवाही पत्र के सन्दूक को ढाँप दें । 6 इसके
बाद वे उस पर सूईसों की खालों का आवरण
डालें । इसके ऊपर पूरे नीले रंग का कपड़ा
डालें और सन्दूक में झण्डों को लगाएँ ।
7 इसके पश्चात् भेंट वाली रोटी की मेंज़ पर
नीला कपड़ा बिछा कर उस पर थालियों,
धूपदानों, करछों और उण्डेलने के कटोरों

[a] **3.40** नर [b] **4.4** पवित्र

को रखें । हर दिन की रोटी भी उस पर हो ।
8 तब वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाएँ
और सुइसों की खालों के आवरण से ढांक
कर मेंज़ के डंडों को लगा दें । 9 नीले रंग का
कपड़ा लेकर दीयों गुलतराशों और गुलदानों
समेत रोशनी देने वाले दीवट और उसके सभी
तेल के बर्तनों को जिन से उसकी सेवा होती
है, ढाँपे । 10 तब वे समस्त सामान के साथ
दीवट को सुइसों की खालों के आवरण के
अन्दर रख कर झण्डे पर रख दें । 11 फिर वे
सोने की वेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाएँ,
सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपे और
उसके झण्डों को लगा दें । 12 तब वे सेवा
के सभी सामान को लें, जिस से पवित्रस्थान
में सेवा होती है, नीले कपड़े के अन्दर रख
कर सुइसों की खालों के आवरण से ढाँके
और झण्डे पर रख दें । 13 फिर वे वेदी पर
से सारी रख उठा कर वेदी पर बैजनी रंग का
कपड़ा बिछाएँ । 14 तब जिस समान से वेदी
की सेवा होती है वह सब - करछे, काँटे,
फावड़ियाँ, कटोरे आदि वेदी पर रख कर
उसके ऊपर सुइसों की खालों को आवरण
बिछा कर वेदी में झण्डों को लगाएँ । 15 जब
हारून और उसके बेटे छावनी के निकलते
समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान
को ढाँक चुकें तब उसके बाद कहाती उसे
उठाने के लिए आएँ । लेकिन किसी वस्तु को
न छुएँ नहीं तो मर जाएँगे। कहातियों के उठाने
के लिए मिलाप वाले तम्बू की ये ही वस्तुएँ
है । 16 हारून पुरोहित के बेटे एलीआजार को
रखवाली के लिए जो वस्तुएँ सुपुर्द की जाएँ वे
ये होंगी - रोशनी देने के लिए तेल, खुशबूदार
धूप, हर दिन अन्नबलि, अभिषेक का तेल,
सभी निवास और उस में की सभी वस्तुएँ
और पवित्र स्थान तथा उस का सारा सामान
17 फिर प्रभु ने मूसा और हारून से कहा,
18 कहातियों के कुलों के गोत्रियों को लेवियों
में से बर्बाद न होने देना । 19 हारून और
उसके बेटे अन्दर आकर एक-एक के लिए
उसकी सेवा और ज़िम्मेंदारी ठहरा दें ताकि
बेकार में कोई न मरे । 20 पवित्र वस्तुओं को
देखने के लिए वे एक सेकेण्ड भी अन्दर
न आएँ ताकि जीवित रहें । 21 फिर प्रभु
का वचन मूसा को मिला, 22 वह यह कि
गेर्शोनियों की गिनती उनके पूर्वजों के घरानों
और कुलों के अनुसार करे । 23 तीस साल
से पचास साल तक की उम्र वाले, जितने
मिलाप वाले तम्बू में सेवा करने के लिए फ़ौज
में भर्ती हो, उनकी गिनती कर ले । 24 सेवा
करने और बोझा उठाने में गेर्शोनियों के कुल
वालों का यह काम हो । 25 निवास के पटों
और मिलाप वाले तम्बू और एसके आवरण
और उसके ऊपर वाले तम्बू के दरवाज़े के
पर्दे, 26 और निवास और वेदी के चारों ओर
के आंगन के पर्दो और आंगन के दरवाज़े
के पर्दे और उनकी डोरियों और उन में काम
आने वाले सारे सामान को उठाया करें । इन
वस्तुओं से जितना काम होता है वह सभी
उनकी सेवकाई में आए । 27 गेर्शोनियों के
वंश की सभी सेवा हारून और उसके बेटों
के कहने से हुआ करे । मतलब यह है कि जो
कुछ उठाना हो, जो सेवा करनी हो उसकी
सारी ज़िम्मेंदारी तुम उन्हें सौंपो । 28 गेर्शोनियों
के कुलों की यह सेवा मिलाप वाले तम्बू में
हुआ करे । हारून पुरोहित का बेटा ईतामार
उन पर अधिकार रखे । 29 मरारियों को तुम
उनके कुलों और पूर्वजों के घरानों के अनुसार
गिनो । 30 मिलाप वाले तम्बू में तीस साल
से पचास साल तक की आयु वाले जो सेवा
में आए, उनकी गिनती की जाए । 31 मिलाप
वाले तम्बू की जिन वस्तुओं के उठाने का
काम उनको मिले वे ये हों - निवास के तख्ते,

बेंड़े, खम्भे और कुर्सियाँ । 32 चारों ओर के
आंगन के खम्भे इनकी कुर्सियों, खूँटे, डोरियाँ
और तरह के बर्तनों का सामान और जो
सामान ढोने के लिए उन्हें सौंपा जाए उस
में से एक -एक चीज़ का नाम लेकर तुम
गिनना । 33 मरारियों के कुलों की पूरी सेवा
जो उन्हें मिलाप वाले तम्बू के बारे में करनी
होगी, वह यही है । यह भी हारून के बेटे
ईजामार के अधिकार में हो। 34 तब मूसा,
हारून और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों
के वंश को उनके कुलों और पितरों के घरानों
के अनुसार 35 उन सभी की गिनती करना,
जो तीस वर्ष से पचास वर्ष की उम्र के थे । ये
लोग तम्बू की सेवा के लिए फ़ौज में भर्ती हुए
थे । 36 जो लोग अपने-अपने कुल के अनुसार
गिने गए थे, वे दो हज़ार साढ़े सात सौ थे
। 37 कहातियों के कुलों में से जितने लोग
मिलाप वाले तम्बू में सेवा करने वाले थे वे
ये ही हैं । जो आदेश प्रभु ने मूसा को दिया
था, उसी के आधार पर मूसा और हारून ने
इन्हें गिन लिया । 38 अपने कुलों और पितरों
के अनुसार गेर्शोनियों में से गिने गए वे वही
थे जो 39 से पचास साल के थे और तम्बू में
सेवा काम के लिए सेना में भरती हुए थे ।
40 उनकी संख्या उनके कुलों और पितरों के
घराने के अनुसार दो हज़ार छः सौ तीस थी
। 41 गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलाप
वाले तम्बू में सेवा करने वाले गिने गए, वे
इतने ही थे । प्रभु की आज्ञानुसार मूसा और
हारून ने इन्हें गिन लिया । 42 फिर मरारियों
के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के
घरानों के अनुसार गिने गए । 43 अर्थात् तीस
वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के जो
मिलाप वाले तम्बू की सेवा करने को सेना में
भरती हुए थे । 44 उनकी गिनती उनके कुलों
के अनुसार तीन हज़ार दो सौ थी । 45 मरारियों
के कुलों में से जिन्हें मूसा और हारून ने प्रभु
की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा
मिली थी, गिन लिया । 46 लेवियों में से मूसा,
हारून और इस्राएली प्रधानों ने उनके कुलों
और पितरों के घरानों के अनुसार गिना । 47 ये
वे लोग थे जिन की उम्र तीस से पचास साल
के बीच थी । इन का काम मिलाप वाले तम्बू
में सेवा का था । ये बोझा भी उठाया करते
थे । 48 इनकी संख्या आठ हज़ार पाँच सौ
अस्सी थी । 49 ये लोग अपनी अपनी सेवा
और बोझ ढोने के अनुसार प्रभु के कहने पर
गए । प्रभु की मूसा को दी गयी आज्ञा के
मुताबिक सब कुछ किया।

**5** मूसा से प्रभु बोले, 2 इस्राएलियों को
ऐसा आदेश दो कि वे कुष्ट रोग, प्रमेह
और शव के कारण अशुद्ध हुए लोगों को
छावनी के बाहर रखें । 3 ताकि मेरा निवास
स्थान गन्दा न हो जाए । 4 इस्राएलियों ने
प्रभु के आदेश के अनुसार किया भी 5 प्रभु
ने मूसा से कहा, 6 “यदि कोई महिला या
पुरुष परमेश्वर के खिलाफ़ कोई अपराध
करके प्रभु का विश्वासघात करे , 7 तो वह
कबूल कर ले, जिस के बारे में वह दोषी
हुआ हो, उसे वह मूल में पाँचवाँ अंश मिला
कर दण्ड के रूप में दे । 8 यदि उस व्यक्ति
का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला
भर दिया जाए, तो उस दोष का बदला प्रभु
को भरा जाए । वह पुरोहित का हिस्सा हो
। वह प्रायश्चित्त वाले मेंढ़े से हो जिस से
उसके लिए प्रायश्चित्त किया जाए । 9 जितनी
पवित्र की हुयी वस्तुएँ इस्राएली उठायी हुयी
भेंट करके पुरोहित के पास लाएँ, वे उसी
की हों । 10 सभी लोगों की पवित्र की हुयी
वस्तुएँ उसी की रहें। जो पुरोहित को दे, वह
उसी का ठहरे। 11,12 मूसा से प्रभु ने कहा,

“इस्राएलियों को बतलाओ कि यदि किसी
व्यक्ति की पत्नी बुरी राह अपनाकर पति
का विश्वासघात करे, 13 किसी पुरुष के साथ
कुकर्म की बात पति से छिपी रहे, लेकिन
न वह कुकर्म में पकड़ी गयी हो, या कोई
गवाह भी न मिला हो। 14 और उसके पति
के मन में क्रोध हो, अर्थात् वह अपनी पत्नी
से उसके भ्रष्ट होने के कारण नफ़रत करने
लगे या उसके भ्रष्ट न होने पर भी वह उस
से नफ़रत करने लगे। 15 ऐसे में वह व्यक्ति
अपनी पत्नी को पुरोहित के पास ले जाए और
उसके लिए एपा का दसवाँ और जव का मैदा
चढ़ावा करके ले आए। लेकिन यदि उस पर
तेल न डाले, लोबान न रखे, वह जलन वाला
और अधर्म को याद दिलाने वाला अन्नबलि
होगा। 16 तब पुरोहित उस महिला को पास ले
जाकर प्रभु के सामने खड़ी करे। 17 पुरोहित
मिट्टी के बर्तन में पानी लेकर निवासस्थान
की ज़मीन की धूल में से कुछ लेकर उस
पानी में डाल दे। 18 तब पुरोहित उस महिला
को प्रभु के सामने खड़ी करके उसके सिर
के बाल बिखराए। और याद दिलाने वाले
अन्नबलि को जलन वाला है, उसके हाथों
पर रख दे। पुरोहित अपने हाथ में कड़वा
पानी लिए रहे, जो शाप लगाने का कारण
होगा। 19 तब पुरोहित उस महिला को शपथ
धरवा कर कहे कि यदि किसी पुरुष ने तुम
से बुरा काम न किया हो और तुम पति को
छोड़ दूसरे से सम्भोग कर अशुद्ध न हुयी हो,
तो तुम इस कड़वे पानी के गुण से जो शाप
का कारण होता है, बची रहो । 20 यदि तुम
अपने पति को छोड़ दूसरे के साथ सम्बन्ध
करके अशुद्ध हो गयी हो और तुम्हारे पति
को छोड़ तुम्हारे साथ किसी और ने सहवास
किया हो। 21 पुरोहित उसे शाप देने वाला
प्रण करवाए,”प्रभु तुम्हारी जाँघ सड़ाए, पेट
फुलाए और लोग तुम्हारा नाम लेकर शाप
दें और धिक्कारें। 22 जो पानी शाप का कारण
होता है, तुम्हारी अतड़ियों में जाकर तुम्हारे
पेट को फुलाए और तुम्हारी जाँघ सड़ा दे।
तब वह महिला कहे ऐसा ही हो। 23 तब
पुरोहित शाप के ये शब्द किताब में लिख कर
उस कड़वे पानी से मिटा के 24 उस महिला
को वह कड़वा पानी पिलाए, जो शाप का
कारण होता है और वह पानी जो शाप का
कारण होता है, उस महिला के पेट में जाकर
कड़वा हो जाएगा। 25 पुरोहित महिला के
हाथ में से जलन वाले अन्नबलि को लेकर
प्रभु के आगे हिला कर वेदी के पास पहुँचाए
26 पुरोहित उस अन्नबलि में से उस का याद
दिलाने वाला हिस्सा, अर्थात् मुट्ठी भर लेकर
वेदी पर जलाए। उसके बाद महिला को वह
पानी पिलाए। 27 उसे वह पानी पिलाने के
बाद यदि वह अशुद्ध हुयी हो और अपने
पति का विश्वासघात किया हो तो वह पानी
जो शाप का कारण होता है, उस महिला
के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा। उस
का पेट फूलेगा, उसकी जाँघ सड़ जाएगी।
उस महिला के लोगों में उसकी बदनामी
होगी। 28 यदि व महिला अशुद्ध न हुयी हो तो
वह निरपराध ठहरेगी और गर्भवती भी हो
सकेगी। 29 जलन के सम्बन्ध में यही तरीका
है, चाहे कोई औरत अपने आदमी को छोड़
दूसरे की ओर फिकर अशुद्ध हो। 30 चाहे
पुरुष के मन में जलन पैदा हो और वह अपनी
पत्नी से नफ़रत करने लगे तो वह उसे प्रभु
की उपस्थिति में लाए और पुरोहित के निर्देष
अनुसार कारवाई करे। 31 तब पुरुष अधर्म
के परिणाम से बचा रहेगा लेकिन महिला को
अपनी गलती का भार खुद उठाना पड़ेगा ।

6 प्रभु ने मूसा से कहा, 2 “इस्राएलियों से
यह कहो कि जब कभी कोई आदमी
या औरत नाज़ीर की मन्नत[a] माने 3 तो वह
दाखमधु, शराब, सिरके आदि से परे रहे ।
यहाँ तक कि सूखे अंगूर भी न खाए । 4 जितने
समय तक वह अपनी इस स्थिति में रहे, उतने
दिन अंगूर की लता में से कुछ न खाए। 5 उतने
दिन अपने सिर के बाल भी न कटवाए। पूरा
समय हो जाने पर वह प्रभु के लिए अलग रहे।
तभी वह पवित्र ठहरेगा और अपने सिर के
बालों को बढ़ाए रहे। 6 उतने दिन वह किसी
शव के पास न जाए। 7 चाहे उसके निकट
सम्बन्धी :पिता, माता, भाई, बहन भी मरें,
उनके कारण वह अशुद्ध न हो। यह प्रभु के
प्रति समर्पण का चिन्ह होगा। 8 अपने अलग
रहने के दिनों में वह प्रभु के लिए पवित्र रहे।
9 यदि अचानक कोई मर जाए और उसके
रहने का जो चिन्ह उसके सिर पर होगा,
वह अशुद्ध हो जाए, तो वह शुद्ध होने के
दिन अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुड़ाए।
10 आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के
दो बच्चे मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़ों पर
पुरोहित के पास ले जाए। 11 पुरोहित एक को
अपराधबलि और दूसरे को होमबलि करके
उसके लिए प्रायश्चित्त करे, क्योंकि वह लाश
के कारण अपराधी ठहरा है। पुरोहित उसी
दिन उस का सिर फिर पवित्र करे । 12 वह
अपने अलग रहने के दिनों फिर प्रभु के लिए
अलग ठहराए। वह एक साल का एक भेड़
का बच्चा दोषबलि करके ले आए। जो दिन
इस से पहले बीत गये हो, वे बेकार समझ
जाएँ, क्योंकि उसके अलग रहने का चिन्ह
अशुद्ध हो गया । 13 नाज़ीर के अलग रहने के
दिन पूरे होने पर तरीका यह होगा - वह यह
कि उसे मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर
पहुँचाया जाए । 14 वह प्रभु के लिए होमबलि
करके एक साल की एक बिना किसी खोट
की भेड़ की बच्ची और मेलबलि के लिए
एक निर्दोष मेंढा 15 अखमीरी रोटियाँ की एक
टोकरी अर्थात् तेल से सने मैदे के फुलके,
तेल से चुपड़ी अखमीरी पपड़ियाँ और उन
बलियों के अन्नबलि और अर्घ : ये सब चढ़ावे
समीप ले आए । 16 इन सब को पुरोहित
प्रभु के सामने पहुँचा कर उसके अपराधबलि
और होमबलि को चढ़ाए 17 अखमीरी रोटी
की टोकरी सहित मेंढ़े को प्रभु के लिए
मेलबलि करके, उस मेलबलि के अन्नबलि
और अर्घ को चढ़ाए 18 तब नाज़ीर अपने
अलग रहने के निशान वाले सिर को मिलाप
वाले तम्बू के दरवाज़े पर मुण्डवा कर अपने
बालों को उस अग्नि पर डाले जो मेलबलि के
नीचे होगी । 19 जब नाज़ीर अपने अलगाव
के जीवन के कारण निशान वाले सिर को
मुण्डवा चुके तब पुरोहित मेंढ़े का पकाया
हुआ कन्धा टोकरी में से अखमीरी रोटी और
एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाज़ीर के हाथों
पर रखें । 20 पुरोहित इन को हिलाने की भेंट
करके प्रभु के साम्हने हिलाए। हिलायी हुयी
छाती और उठायी हुई जांघ सहित ये भी
पुरोहित के लिए पवित्र ठहरें। इसके बात
वह नाज़ीर दाखमधु पी पाएगा। 21 नाज़ीर की
मन्नत की और जो चढ़ावा उसने अपने अलग
होने के कारण प्रभु के लिए चढ़ाना होगा, उस
का भी यही तरीका है। जो चढ़ावा वह अपनी
पूँजी के अनुसार चढ़ा सके उस से अधिक
जैसी मन्नत उसने मानी हो, वैसे ही अपने
अलगाव के जीवन के तरीके के अनुसार उसे
करना पड़ेगा। 22 इसके बाद प्रभु ने मूसा से
कहा, 23 “हारून और उसके बेटों से कहो
कि तुम इस्राएलियों को इन शब्दों से आशीष

[a] **6.2** स्वयं को प्रभु के लिए अलग करने

दिया करना", 24 प्रभु तुम्हें आशीष दे और
रक्षा प्रदान करें। 25 वह अपनी उपस्थिति का
अनुभव तुम्हें दें । 26 प्रभु अपनी दृष्टि तुम्हारी
ओर करें और शान्ति दें । 27 इस तरह से वे
मेरे नाम को इस्राएलियों के सामने लाएँ मैं
उन्हें अपनी भलाई से तृप्त करूँगा।

7 फिर मूसा ने निवास को खड़ा किया ।
उसने सारे समान का अभिषेक किया ।
और सामान सहित वेदियों का भी अभिषेक
करके उसे पवित्र[a] किया । 2 तब इस्राएल के
मुखिया जो अपने अपने पूर्वजों के घरानों के
मुख्य-मुख्य पुरुष और गोत्रों के भी प्रधान
होकर गिनती लेने के काम कर नियुक्त थे
3 वे प्रभु के सामने भेंट लेकर आए । इस
भेंट में छः ढकी हुयी गाड़ियाँ और बारह बैल
थे। दो-दो प्रधान की ओर से एक एक गाड़ी
और एक -एक प्रधान की ओर से एक -एक
गाड़ी और एक -एक प्रधान की तरफ़ से एक
-एक बैल । निवास के सामने प्रभु के पास
उन्हें वे ले गए। 4 तब प्रभु ने मूसा से कहा,
5 "उन वस्तुओं के तुम उन से ले लो, कि
मिलाप वाले तम्बू की सेवा में काम आए।
इसलिए तुम उन्हें लेवियों के एक-एक कुल
की विशेष सेवा के अनुसार उनको बाँट दो।
6 इसलिए लेवियों को मूसा ने सब गाड़ियाँ
और बैल दे दिए। 7 गेर्शोनियों को उनके काम
के अनुसार उसने दो गाड़ियाँ और चार बैल
दिए 8 मरारियों को उनके काम के अनुसार
उसने आठ बैल और चार गाड़ियाँ दीं । हारून
पुरोहित के बेटे ईतामार के अधिकार में इन
सभी को रखा गया । 9 कहातियों को कुछ भी
नहीं दिया गया । उनके लिए पवित्र वस्तुओं
की सेवा यह थी कि वे अपने कन्धों पर उसे
उठाएँ। 10 वेदी के अभिषेक के समय प्रधान
उसके संस्कार की भेंट वेदी के पास ले जाने
लगे । 11 तब प्रभु ने मूसा से कहा, "वेदी के
संस्कार के लिए प्रधान लोग अपनी अपनी
भेंट अपने - अपने निश्चित दिन पर चढ़ाएँ ।"
12 जो पुरुष पहले दिन अपनी भेंट को ले गया
वह यहूदा गोत्र वाले अम्मीनादाब का बेटा
नहशोन था । 13 उसकी भेंट थी : पवित्रस्थान
के शेकेल के अनुसार से एक सौ तीस शेकेल
चाँदी की एक थाली, सत्तर शेकेल चाँदी का
कटोरा । ये दोनों ही अन्नबलि के लिए तेल
से सने मैदे से भरे थे । 14 धूप से भरे दस
शेकेल सोने का धूपदान 15 होमबलि के लिए
एक बछड़ा, एक मेंढ़ा, एक साल का भेड़ी
का बच्चा 16 अपराधबलि के लिए एक बकरा
17 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक साल के पाँच भेड़ी के
बच्चे । यह भेंट अम्मीनादाब के बेटे नहशोन
की थी । 18 अगले दिन इस्साकार का प्रधान
सूआर का बेटे नतनेल भेंट लाया । 19 यह
पवित्रस्थान के शेकेल चाँदी की थाली और
सत्तर शेकेल चाँदी का कटोरा था । ये दोनों
ही अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से भरे
थे । 20 धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने
का एक धूपदान 21 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा
और एक साल का भेड़ी का बच्चा होमबलि
के लिए 22,23 एक बकरा अपराधबलि के
लिए, दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक
-एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि
के लिए । यह भेंट सूआर के बेटे नतनएल
की थी । 24 तीसरे दिन जबूलूनियों का प्रधान
हेलोन का बेटा एलीआब यह सब लाया
25 पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार एक
सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थाली और
सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा । ये दोनों
अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से

[a] **7.1** अलग

भरे थे । 26 धूप से भरा हुआ दस शेकेल
सोने का एक धूपदान 27 होमबलि के लिए
बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का एक
भेड़ी का बच्चा 28 एक बकरा अपराधबलि के
लिए 29 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और
एक -एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि
के लिए यह भेंट एलीआब की थी जो हेलोन
का पुत्र था । 30 चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान
शदेऊर का पुत्र एलीसूर कुछ भेंट लाया ।
31 उसकी भेंट में पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
परात और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा
ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल सने मैदे से
भरे थे । 32 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल
सोने का धूपदान । 33 होमबलि करने के लिए
एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का
एक भेड़ी का बच्चा। 34 अपराधबलि के लिए
एक बकरा 35 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच
मेंढ़े पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच
भेड़ों के बच्चे । शदेऊर के बेटे एलीसूर की
भेंट यही थी । 36 पाँचवे दिन शिमोनियों का
प्रधान सूरीशद्दै का बेटा शलूमीएल यह सब
लाया 37 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से
एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थाली,
सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों
अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे से भरे
थे । 38 उसके बाद धूप से भरा हुआ दस
शेकेल सोने का एक धूपदान 39 एक बछड़ा,
मेंढ़ा और एक साल का एक भेड़ी का बच्चा
होमबलि के लिए 40 एक बकरा अपराधबलि
के लिए 41 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच
मेंढ़े, पाँच बकरे और एक साल की पाँच
भेड़ की बच्चियाँ । यह भेंट सूरीशद्दै के बेटे
शलूमीएल की थी । 42 गादियों का मुखिया
दूएल का बेटा एलयासाप यह भेंट छठवें दिन
लाया 43 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से
एक सौ तीस शेकेल चाँदी की एक थी । साथ
ही सत्तर शेकेल चाँदी का एक प्याला । ये
दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए मैदे
से भरे हुए थे । 44 फिर धूप से भरा हुआ दस
शेकेल सोने का एक धूपदान 45 होमबलि के
लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक वर्ष की
भेड़ी का बच्चा 46 एक बकरा अपराधबलि
के लिए, 47 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे,
एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि
के लिए एलयासाप जो दूएल का बेटा था,
उसी की यह भेंट थी । 48 सातवें दिन एप्रैमियों
का प्रधान अम्मीहूद का बेटा एलीशामा जो
भेंट लेकर आया वह यह थी 49 पवित्रस्थान
के शेकेल के अनुसार से एक सौ तीस शेकेल
चाँदी का एक था, सत्तर शेकेल चाँदी का
एक कटोरा - ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल
से सने हुए मैदे से भरे थे । 50 फिर धूप से
भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान ।
51 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का
एक भेड़ी का बच्चा होमबलि के लिए 52 एक
बकरा, अपराधबलि के लिए 53 दो बैल, पाँच
मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक वर्ष के पाँच
भेड़ी के बच्चे मेलबलि चढ़ाने के लिए । यह
कुर्बानी अम्मीहूद के बेटे एलीशामा की थी
। 54 मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र
गमलीएल कुछ भेंट आठवें दिन लाया ।
55 वह थी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब
से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का थाल, सत्तर
शेकेल चाँदी का प्याला- ये दोनों अन्नबलि के
लिए तेल से सने मैदे से भरे हुए थे । 56 धूप से
भरा दस शेकेल सोने का धूपदान 57 होमबलि
के लिए बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल
का एक भेड़ी का बच्चा । 58 अपराधबलि के
लिए एक बकरा 59 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच
बकरे और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ों के बच्चे
मेलबलि के लिए । 60 नवें दिन बिन्यामीनियों

का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदाब यह भेंट
लाया । 61 पवित्रस्थान के लिए शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीन शेकेल चाँदी का
एक थाल, सत्तर शेकेल चाँदी का प्याला -
ये दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने हुए
मैदे से भरे थे । 62 फिर धूप से भरा हुआ दस
शेकेल सोने का एक धूपदान 63 होमबलि के
लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा, और एक वर्ष
का एक भेड़ी का बच्चा 64 अपराधबलि के
लिए एक बकरा 65 मेलबलि के लिए दो बैल,
पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक -एक साल के
पाँच भेड़ी के बच्चे । यह भेंट गिदोनी के बेटे
अबीदान की भेंट थी । 66 दसवें दिन दानियों
का प्रधान अम्मीशद्दै का बेटा अहीएज़ेर यह
भेंट ले आया । 67 पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक
परात, सत्तर शेकेल चाँदी का प्याला -ये दोनों
अन्नबलि के लिए तेल मिले मैदे से भरे हुए
थे । 68 धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने
का एक धूपदान 69 एक बछड़ा, एक मेंढ़ा
और एक वर्ष का भेड़ी का बच्चा होमबलि
के लिए 70 अपराधबलि के लिए एक बकरा
71 दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच बकरे और एक
-एक साल के पाँच भेड़ी के बच्चे मेलबलि
के लिए । अम्मीशद्दै के बेटे अहीएज़ेर की
भेंट रही थी । 72 ग्यारहवें दिन आशेरियों का
प्रधान ओक्रान का बेटा यह सब लाया ।
73 पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक
सौ तीस शेकेल चाँदी का थाल, सत्तर शेकेल
चाँदी का कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिए
तेल से लिपटे मैदे से भरे थे 74 फिर धूप से भरा
दस शेकेल सोने का एक धूपदान 75 होमबलि
के लिए एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक वर्ष
का भेड़ का बच्चा 76 अपराधबलि के उपयोग
के लिए एक बकरा 77 दो बैल, पाँच मेंढ़े,
पाँच बकरे, एक - एक साल के पाँच भेड़ी
के बच्चे मेलबलि के लिए । यह भेंट ओक्रान
के बेटे पजीएल की थी । 78 बारहवें दिन
नप्तालियों का मुखिया एनान का बेटा अहीरा
कुछ भेंट लाया । 79 पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का
थाल, सत्तर शेकेल चाँदी से बना प्याला - ये
दोनों अन्नबलि के लिए तेल से सने मैदे से
भरे थे। 80 फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल
सोने का धूपदान 81 होमबलि के लिए एक
बछड़ा, एक मेंढ़ा और एक साल का भेड़
का बच्चा 82 अपराधबलि के लिए एक बकरा
83 मेलबलि के लिए दो बैल, पाँच मेंढ़े, पाँच
बकरे, एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ के बच्चे।
यह भेंट एनान के पुत्र अहीरा की थी। 84 वेदी
के अभिषेक के समय इस्राएल के प्रधानों
की ओर से संस्कार की कुर्बानी यही रही -
अर्थात् चाँदी के बारह थाल, बारह कटोरे
और सोने से बने धूपदान जिन की संख्या
बारह थी। 85 प्रत्येक चाँदी का थाल एक सौ
तीस शेकेल, एक-एक चाँदी का कटोरा सत्तर
शेकेल का था । पवित्र स्थान के शेकेल के
अनुसार ये सभी चाँदी के बर्तन दो हज़ार
चार सौ शेकेल के थे। 86 धूप से भरे सोने
के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल
के अनुसार दस-दस शेकेल के । ये सभी
धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने से बने
थे 87 होमबलि के लिए सब मिल कर बारह
बछड़े, बारह मेंढ़े और एक-एक साल के
बारह भेड़ी के बच्चे, अपने अन्नबलि समेत
थे । बारह बकरे अपराधबलि के लिए थे ।
88 मेलबलि के लिए चौबीस बैल, साठ मेंढ़े,
साठ बकरे एक साल के साठ भेड़ी के बच्चे थे
। वेदी को पवित्र किए जाने के बाद उसके
संस्कार की भेंट यही थी । 89 मिलाप वाले
तम्बू में प्रभु से वार्तालाप करने मूसा जब
दाखिल हुआ, तो उसने प्रायश्चित्त के ढकने

के ऊपर से, जो साक्षीपत्र के बक्से के ऊपर था । प्रभु की आवाज़ सुनी । यह आवाज़ दोनों करूबों के बीच में से आयी थी।

**8** प्रभु ने मूसा से कहा, “हारून को बतलाओ, कि वह जब कभी दीपकों को जलाए, तब सभी सात दीपकों की रोशनी दीवट के सामने हो। 3 हारून ने इस आज्ञा के अनुसार ही किया 4 दीवट पाए से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया गया था। 5,6 फिर मूसा से प्रभु ने कहा, “इस्राएलियों के बीच में से लेवियों को अलग लेना और शुद्ध करना 7 उन पर पवित्र करने वाला पानी छिड़क देना। इनके मुण्डन किए जाएँ और कपड़े धोए जाएँ। 8 इसके बाद तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि सहित एक बछड़ा और अपराधबलि के लिए दूसरा बछड़ा लेना। 9 लेवियों को तुम मिलाप वाले तम्बू के पास पहुँचाना और इस्राएलियों की पूरी मण्डली को एकत्र कर लेना। 10 इसके बाद लेवियों को सामने लाकर इस्त्रालियों के हाथ पर रखा जाए 11 इस्राएलियों की ओर से हिलायी भेंट हारून अर्पण करे, ताकि फिर वे प्रभु की सेवा करने वाले ठहरें। 12 इसके बाद उन बछड़ों के सिरों पर लेवीय अपने-अपने हाथों को रखेंगे। तुम लेवियों के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए एक बछड़ा अपराधबलि के लिए और दूसरा होमबलि के लिए चढ़ाना। 13 हारून के सामने लेवियों और उनके बेटों को खड़ा करना। हिलाने की भेंट के लिए प्रभु को अर्पण किया जाए। 14 इस तरह तुम उन्हें दूसरे लोगों से अलग करना। वे मेरे होंगे। 15 लेवियों को शुद्ध करने के बाद हिलायी जाने वाली भेंट के लिए अर्पण के बाद मिलाप वाले तम्बू से सम्बन्धित सेवकाई करने के लिए भीतर आया करें। 16 इसलिए कि वे इस्राएलियों में से पूरी तरह मेरे लिए अलग किए गए हैं, मैंने इन्हें इस्राएल के पहलौठों के बदले अपना कर लिया है। 17 पहलौठे चाहे वे इन्सान के हों या जानवर के - वे मेरे हैं। जब मैंने मिस्र देश के सभी पहलौठों को मार डाला था, उस समय इन को पवित्र ठहराया था। 18 सभी पहलौठों के बदले मैंने लेवियों को लिया है। 19 उनको लेकर मैंने हारून और उसके बेटों को इस्राएलियों में से दान, करके दे दिया है। ऐसा इसलिए ताकि वे मिलाप वाले तम्बू में इस्राएलियों के लिए सेवकाई और प्रायश्चित्त करें। यह भी कि कहीं वे पवित्रस्थान के निकट आकर किसी जान लेवा समस्या में न फँस जाएँ। 20 मूसा, हारून और इस्राएलियों ने ऐसा ही किया। 21 लेवियों ने अपने कपड़े धोए और खुद को गुनाह से भी धो डाला। हारून ने हिलायी हुयी भेंट के लिए अर्पण करने के साथ शुद्ध करने के लिए प्रायश्चित्त किया। 22 लेवीय, हारून और उनके बेटों के साथ मिलाप वाले तम्बू में अपनी सेवा काम निबटाने गए। 23 मूसा से प्रभु ने कहा, 24 “पच्चीस साल की उम्र से लेकर उस से अधिक उम्र वाले मिलाप वाले तम्बू के काम करने को अन्दर आएँ। 25 पचास साल की उम्र में उस सेवा को न करें। 26 लेकिन वे अपनी संगी-साथियों के रक्षा सम्बन्धी काम में हाथ बँटा सकते हैं।”

**9** सीनै के जंगल में मिस्र की गुलामी से निकलने के दूसरे साल के पहले महीने में मूसा ने प्रभु की आवाज़ सुनी 2 फ़सह के त्यौहार को इस्राएली निश्चित समय पर मनाया करें। 3 कहने का अर्थ है कि इसी महीने के चौदहवें दिन को सूरज डूबने के वक्त सभी विधियों-नियमों के अनुसार करें। 4 मूसा ने यह बात इस्राएलियों को बतला दी। 5 पहले

महीने के चौदहवें दिन को सूर्य अस्त होने
के समय सीनै के जंगल में उन लोगों ने
फ़सह मनाया। मूसा द्वारा मिली आज्ञाओं के
अनुसार इस्राएलियों ने किया भी 6,7 मृतक
शरीर के द्वारा अशुद्ध हो जाने के कारण कुछ
लोग उस दिन फ़सह न मना पाए। उन्होंने मूसा
और हारून से कहा, “हम लोग अशुद्ध तो हैं
लेकिन इस्राएलियों के साथ ही क्यों फ़सह
न मनाएँ ? 8 मूसा बोला, “थोड़ा ठहरो, मैं
मालूम करता हूँ कि प्रभु इस बारे में क्या
कहते हैं। 9,10 प्रभु का कहना था, ‘’ चाहे
कोई किसी मृतक शरीर के कारण अशुद्ध हो
या सफ़र में हो, वह फ़सह ज़रूर मनाए। 11 वे
दूसरे महीने के चौदहवें दिन को सूरज डूबने
के समय मनाएँ। कुर्बान किए हुए जानवर
के गोश्त को अखमीरी रोटी और कड़वी
साग-पात के साथ खाएँ। 12 सुबह तक उस
में से कुछ न छोड़ा जाए। पशु की हड्डी
न तोड़ी जाए। सारी विधि अनुसार फ़सह
मनाया जाए। 13 जो व्यक्ति शुद्ध हो, यात्रा में न
हो लेकिन फ़सह को न माने, उसे अपने बीच
जीवित न रहने देना । उस इन्सान को चढ़ावा
सही समय पर न ले आने के कारण अपराध
का बोझ उठाना पड़ेगा। 14 यदि तुम्हारे बीच
रहने वाला कोई परदेशी फ़सह मनाना चाहे,
तो वह भी सही तौर -तरीके को अपनाए।
देशी हो या परदेशी, दोनों ही के लिए एक
नियम हो। 15 जिस दिन साक्षी के तम्बू को
लगाया गया था, उसी दिन उस पर बादल
छा गया था। शाम के समय वही आग सा
दिखता था। यह सुबह एक रहा करता था।
16 इस तरह दिन में बादल दिखता था और
रात में आग दिखती थी। 17 तम्बू पर से बादल
उठते ही इस्राएली चल पड़ते थे। जिस जगह
बादल ठहरता, वहीं इस्राएली अपने तम्बू
गाड़ लिया करते थे। 18 प्रभु की सुन कर ही
वे अपना रूकना और प्रस्थान कर रहे थे।
19 यदि बादल कहीं अधिक दिन रूकता तो
वे भी रूकते थे 20 कभी-कभी थोड़े दिन तक
रूकता तो थोड़े ही दिन वे रूका करते थे
21 कभी-कभी शाम से सुबह तक ही बादल,
ठहरता था और सुबह उसके उठते ही वे भी
चल पड़ते थे। 22 बादल दिन, महीना या साल
जितना रूकता था, इस्राएली रूका करते थे।
उसके उठते ही वे चल पड़ा करते थे। 23 इस
तरह प्रभु और मूसा की आज्ञा में वे अपने दिन
गुज़ार रहे थे।

**10** प्रभु ने मूसा सेकहा,”गढ़ कर चाँदी
की दो तुरहियाँ बनाओ। लोगों को
बुलाने और छावनी से चल देने की घोषणा
के लिए इन्हें इस्तेमाल किया जाए। 3 उन
दोनों के फूँके जाने पर सभी लोग मिलाप
वाले तम्बू के दरवाज़े पर इकट्ठे हो जाएँ।
4 जब एक तुरही फूँकी जाए, तो मुख्य लोग
जो हज़ारों के ऊपर निगरानी रखते हैं, तुम्हारे
पास इकट्ठे हों। 5 जब तुम सांस बान्ध कर
फूँको, तो लोग पूर्व दिशा की छावनियाँ
की ओर चल पड़ें। 6 जब दूसरी बार सांस
बाँधकर फूँको, तब दक्षिण की छावनियों
वाले चल पड़ें। 7 जब लोगों की सभा करनी
है तब बिना सांस बाँधे फूँकना। 8 हारून के
पुरोहित बेटे, तुरही फूँकने का काम करे।
9 जब तुम किसी परेशान करने वाले दुश्मन
से लड़ाई करने निकलो, तब तुरहियों को
सांस बाँधकर फूँकना। तब तुम्हारे प्रभु तुम्हें
दुश्मन से बचाएँगे। 10 अपनी खुशी के दिन,
निश्चित त्यौहारों और महीनों के शुरूआत
में अपने होमबलियों और मेल-बलियों के
साथ इन तुरहियों को फूँकना। 11 दूसरे साल
के दूसरे महीने के बीसवें दिन का बादल
साक्षी के निवास पर से उठ गया। 12 तब

इस्राएली सीनै जंगल से चले और बादल
पारान नामक जंगल में ठहर गया। 13 मूसा
को दी गयी प्रभु की आज्ञा के अनुसार
ही उनका प्रस्थान हुआ। 14 सबसे पहले
यहूदियों की छावनी का झंडा वहाँ से चल
पड़ा। वे सभी दल बान्ध कर चले । उनका
सेनापति अम्मीनादाब का बेटा नहशोन था।
15 इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर
का बेटा नतनेल था। 16 जबूलूनियों के गोत्र
का हेलोन का बेटा एलीआब था 17 फिर
निवारा को उतारने के बाद, गेर्शोनी और
मरारी भी चल पड़े। 18 इसके बाद रूबेन
की छावनी के झण्डे की रवानगी हुयी।
उनका सेनापति शदेअर का बेटा एलीशूर था
19 शिमोनियों के कबीले के सेनापति सूरीशद्दै
का बेटा एलीशूर था। 20 गादियों के गोत्र
का सेनापति दूएल का बेटा एल्यासाप था।
21 कहाती लोग अलग की हुयी वस्तुएँ लेकर
चल पड़े। उनके पहुँचने तक गेर्शोनियों और
मरारियों ने निवारा को स्थिर कर दिया था।
22 इसके बाद एप्रेमी लोग निकल पड़े। उनके
सेनापति का नाम एलीशामा था, जो अम्मीहूद
का बेटा था। 23 मनश्शेइयों के कबीले का
सेनापति पदासूर का बेटा गमलीएल था
24 बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी
का बेटा अबीदान था। 25 दानियों की छावनी
सब छावनियों के पीछे थी, उसकी रवानगी
भी हो गयी। उनके सेनापति अम्मीशद्दै का पुत्र
अहीएज़ेर था। 26 आशेर के गोत्र का सेनापति
ओक्रान का बेटा यजीएल था। 27 नप्तालियों
के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा
था। 28 इस तरह इस्राएली आगे बढ़ते गए।
29 मूसा ने अपने ससुर रूएल के बेटे होबाब
से कहा, ‘‘ जिस जगह के बारे में प्रभु ने
बताया है, उस जगह जाने को हम तैयार
करते हैं। तुम भी हमारे साथ चलना। प्रभु
ने अपने लोगों के लिए भला करने को ही
कहा है। हम भी तुम्हारे साथ भला ही करेंगे।
30 होबाब बोला,“मैं वापस अपने लोगों में
जा रहा हूँ।” 31 मूसा ने कहा,” जंगल में कहाँ
तम्बू डालें, कहाँ नहीं - यह सब तुम्हें मालूम
है, इसलिए हमें मत छोड़ो 32 यदि तुम हमारे
साथ चलो, तो जो भलाई हम प्रभु की चखेंगे,
उसी के आधार पर तुम से व्यवहार करेंगे।
33 इस्राएली प्रभु के पहाड़ से चल पड़े ।इन
तीन दिनों के रास्ते में प्रभु की वाचा का
बक्सा उनके लिए आराम की जगह ढूँढता
हुआ उनके आगे-आगे चलता रहा। 34 जब
जब वे छावनी की जगह से चल पड़ते थे,
तब दिन भर प्रभु का बादल छाया रहता
था। 35 जब जब बक्से के आगे बढ़ने का
समय आ जाता था, मूसा के ये शब्द हुआ
करते थे,”हे प्रभु, आप उठें और आपके
दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएँ।” 36 जब-जब
वह ठहर जाता था, तब मूसा कहता था, “हे
प्रभु, हज़ारों-हज़ार इस्राएलियों में लौटकर आ
जाईए।”

**11** इस्राएली लोग प्रभु के विरोध में
शिकायत करने लगे । प्रभु को यह
सब सुनते ही बहुत गुस्सा आया । प्रभु की
आग उनके बीच में जल उठी और छावनी
के एक किनारे से भस्म करना चालू कर दिया
। 2,3 मूसा के पास आकर लोग चिल्लाने लगे
। जब मूसा ने प्रभु से बिनती की, तो आग
बुझ गयी । इसलिए कि प्रभु की आग वहाँ
जली थी, उस जगह का नाम तबेरा पड़ गया
। 4 लोगों का झुण्ड जो उनके साथ था, काम
वासना में लीन हो गया । इस्राएली रो-रोकर
यह भी कहने लगे “हमें मांसाहारी खाना कौन
देगा?” 5 मिस्र में हमने जो मछलियाँ खायीं,
खीरे, खरबूज़े, प्याज़ और लहसुन खाए वह

सब कुछ याद है 6 यहाँ तो हमें केवल मन्ना
खाना पड़ रहा है और हम थक चुके हैं ।
7 देखने में मन्ना धनिये की तरह और मोती
के रंग था । 8 बटोरने के बाद लोग चक्की में
पीसते थे या ओखली में कूटते थे । इसके
बाद वे इसे तसले में पकाते और फुलके
बनाते थे । स्वाद में यह तेल में बने हुए पूए
की तरह था । 9 रात में ओस गिरने के साथ
ही यह गिरा करता था । 10 मूसा ने आदमी
लोगों को अपने -अपने तम्बू के पास रोते
सुना । इस कारणवश मूसा को तो यह बात
बुरी लगी ही, प्रभु भी बहुत नाराज़ हो गए
और उनका क्रोध भड़क उठा । 11 तब मूसा ने
प्रभु से कहा "आप अपने दास से ऐसा बर्ताव
क्यों कर रहे है ? आपने इनकी ज़िम्मेंदारी
मेरे कन्धों पर क्यों डाल दी है ? मुझ पर
आपकी कृपा क्यों नहीं हुयी है ? 12 क्या इन
लोगों को मैंने ही जन्म दिया है कि जैसे एक
पिता शिशु को अपनी गोद में लेकर चलता है,
वैसे ही मैं इन लोगों को सुरक्षित उस देश में
पहुँचाऊँ, जिसे देने का वायदा आपने किया
है । 13 मैं इतने लोगों के लिए मांसाहारी खाने
का प्रबन्ध कैसे कर सकता हूँ । ये लोग मुझ
पर दबाव डाल रहे हैं कि मैं उन्हें मांसाहारी
भोजन दूँ । 14 इन लोगों की ज़िम्मेंदारी लेना
मेरी ताकत से बाहर है । इन का बोझ मैं
नहीं उठा सकता हूँ । 15 यदि प्रभु आप को
मेरे साथ ऐसा ही करना सही लगता है, तो
मुझे मार डालिए ताकि मेरी हालत बुरी न
हो जाए 16 प्रभु ने मूसा से कहा "इस्राएली
बुज़ुगों में से सत्तर ऐसे आदमी मेरे पास इकट्ठे
करो, जिन को तुम जानते हो । उन्हें मेरी प्रजा
के बुज़ुगों में से होना है और मुखिया होना
चाहिए । उन्हें तुम मिलाप वाले तम्बू के पास
लाना ताकि वे तुम्हारे साथ यहीं खड़े हों ।
17 वहीं पर मैं तुम से बातचीत करूँगा । जो
आत्मा तुम्हारे भीतर है, वही मैं उन लोगों में
डालूँगा । ये ही वे लोग हैं जो प्रजा का भार
उठाएँगे । अकेले तुम्हें यह ज़िम्मेंदारी उठानी
न पड़ेगी । 18 लोगों से बोलो, कल के लिए
अपने आप को शुद्ध[a] करें, तब तुम्हें मांसाहारी
भोजन मिलेगा । ऐसा इसलिए है क्योंकि मांस
खाने के लिए तुम बेचैन रहे और कुड़कुड़ाए
। तुमने यह भी कहा कि हमारा जीवन मिस्र
में अच्छा था । प्रभु तुम्हें मांसाहारी खाना
देंगे, जिसे तुम खाना । 19 कुछ ही दिन नहीं
लेकिन महीने भर तुम खाते रहोगे , 20 यहाँ
तक कि महीने भर खाते रहोगे, जब तक वह
तुम्हारी नाक से निकलने न लगे और तुम
उससे नफ़रत न करने लगो, क्योंकि तुमने प्रभु
को अपमानित किया है। वह तुम्हारे बीच में
हैं और तुम यह शिकायत करते रहे कि प्रभु ने
तुम्हें मिस्र से क्यों निकाला। 21 फिर मूसा ने
कहा '' जिन लोगों के साथ मैं हूँ, उन में से छै
लाख सिपाही हैं और आप कह रहे हैं कि मैं
उन्हें इतना मांस दूँगा कि महीने भर खाते रहेंगे
। 22 क्या उन्हें खिलाने के लिए हमारे सारे
मवेशी वध किए जाएँगे ? या क्या समुन्दर
की सारी मछलियाँ उन्हें खाने के लिए मिलेंगी
? 23 प्रभु ने मूसा से कहा "क्या प्रभु का हाथ
छोटा हो गया है ? अब तुम अपनी आँखों
से देखोगे कि मेरी कही बातें पूरी होती हैं या
नहीं ? 24 तब वह बाहर गया और इस्राएलियों
को यह सब कह सुनाया। उसने बुज़ुर्गो में
से सत्तर आदमियों को बुलाया और तम्बू के
चारों ओर खड़ा किया । 25 तब प्रभु ने मूसा
से बात की और जो आत्मा उसके अन्दर
था उस में से लेकर सत्तर बुज़ुर्गों में समवा
दिया । उस आत्मा के आते ही उन्होंने पहली
और आखिरी बार नबूवत की 26 छावनी में

[a] **11.18** अलग

जो दो आदमी रह गए थे, उनके नाम थे - एलदाद और मेंदाद । उनके ऊपर भी पवित्र आत्मा आया । जिन के नाम लिखे गए थे, उन्हीं में से ये थे । वे तम्बू के पास नहीं गए थे लेकिन छावनी ही में नबूवत करते रहे । 27 तब किसी ने जाकर मूसा को समाचार दिया कि एलदाद और मेंदाद भी नबूवत कर रहे हैं । 28 तब नून का बेटा यहोशू जो मूसा का सेवक और चुने हुए बहादुर लोगों में से था, मूसा से कहा "मेरे मालिक मूसा उन्हें रोको ।" 29 मूसा तुरन्त बोल उठा, "क्या तुम मेरे कारण जलते हो ? कितना अच्छा होता यदि प्रभु की प्रजा के सभी लोग नबी होते और प्रभु अपना आत्मा उन सभी में डाल देते ।" 30 इसके बाद बुज़ुर्गो सहित मूसा छावनी में चला गया । 31 तब प्रभु ने एक ज़ोरदार आँधी भेजी और समुन्दर से बटेरें उड़ कर छावनी के चारों ओर इकट्ठा हो गयीं । एक दिन समय लेने तक के रास्ते के दोनों ओर ज़मीन पर दो हाथ ऊँचाई तक ढेर लग गया । 32 उस दिन रात लोग उठे रहे और दूसरे दिन भी बटेरों को इकट्ठा करते रहे। कम से कम जो लोगों ने बटोरा था, वह दस होमेर तक था। छावनी के बाहर उन्होंने बटेरों को फैला दिया था। 33 वे लोग जब उनको खा ही रहे थे, तो प्रभु का गुस्सा भड़क गया और बुरी तरह उन्हें से मारा। 34 इसलिए कि जिन्होंने उस दिन कामुकता की थी, उन्हें वही दफ़नाया गया, उस जगह का नाम किब्रोथत्तावा पड़ गया। वहाँ से निकल कर इस्राएली हसेरोत पहुँचे और वहीं रहने लगे। 35 किब्रोथत्तावा से प्रजा निकलकर हसेरोत की दिशा में चली और हसेरोत में ठहर गई।

**12** कूश देश की एक लड़की से मूसा ने विवाह कर लिया था । इसलिए मूसा की बहन मरियम और भाई उसको बुरा-भला कहने लगे । 2 वे कहने लगे '' क्या मूसा ही से प्रभु ने बातचीत की है ? क्या, उसने हम से भी बातचीत नहीं की ?" ये सब कुड़कुड़ाना प्रभु ने सुन लिया । 3 इस दुनिया में उस समय मूसा सब से अधिक नम्र इन्सान न था । 4 इसलिए प्रभु ने मूसा और हारून से कहा '' मिलाप वाले तम्बू के पास तुम तीनों आ जाओ ।" उन तीनों ने ऐसा ही किया । 5 तब प्रभु ने वहाँ तम्बू के दरवाज़े के पास उपस्थित होकर हारून और मरियम को बुलाया । उन्होंने प्रभु की बात सुनी थी। 6 फिर प्रभु ने कहा, "मेरी सुनो" यदि तुम में से कोई नबी है तो मैं प्रभु दर्शन देकर या सपने में उस से बातचीत करूँगा । 7 मेरा दास मूसा इस तरह का आदमी नहीं है वह मेरे प्रति विश्वास योग्य है । 8 मैं छिपकर उस से बातचीत नहीं करता हूँ, लेकिन आमने - सामने। वह मेरी उपस्थिति में रहता है। इसलिए तुम उसकी बुराई करते हुए क्यों नहीं लजाए? 9 तब प्रभु उन पर आग बबूला हो उठे । 10 इसके बाद वह बादल तम्बू के ऊपर से गायब हो गया और मरियम कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गयी। हारून ने भी देखा की मरियम की देह सफ़ेद हो गयी 11 तब हारून ने मूसा से कहा '' मेरे मालिक हम दोनों ने बड़ी बेवकूफ़ी की और अपराध किया है। हमें इसकी सज़ा से बचा लें । 12 मरियम की भी अधगली सी देह ज्यों का त्यों कर दो। 13 इसलिए मूसा भी यह कह कर गिड़गिड़ाने लगा, "हे प्रभु कृपया उसे अच्छा कर दीजिए ।" 14 प्रभु ने मूसा से कहा, "यदि मरियम के पिता ने उसके चेहरे पर थूका होता तो क्या छावनी से बाहर उसे सात दिन तक रखा नहीं जाता ? इसलिए उसे सात दिन तक छावनी के बार रखा जाए 15 इसलिए

सात दिन तक मरियम बाहर रही । जब तक
मरियम वापस ली नहीं गयी, तब तक लोग
वहीं ठहरे रहे । 16 उसके बाद हसेरोत से चल
करके पारान नामक जंगल में उन्होंने अपने
डेरे डाले।

13 फिर प्रभु ने मूसा से कहा; 2 मैं
इस्राएलियों को कनान देश देने
वाला हूँ । उसकी जासूसी करने के लिए
आदमियों को भेजो । ये जासूस अपने
बापदादों[a] के प्रति कबीले के एक-एक प्रधान
आदमी हों । 3 यह आदेश प्रभु से पाकर मूसा
ने ऐसे पुरुषों को पारान नामक जंगल से भेजा
जो सब के सब इस्राएलियों के मुखिया थे
। 4 उनके नाम ये हैं : रूबेन के गोत्र में से
जक्कूर का बेटा शम्मू; 5 शिमोन के गोत्र में से
होरी का बेटा शापात 6 यहूदा के गोत्र में से
यपुन्ने का बेटा कालेब 7 इस्साकार के गोत्र
में से योसेप का बेटा यिगाल 8 एप्रैम के गोत्र
में से नून का बेटा होशे 9 बिन्यामीन के गोत्र
में रापू का पुत्र पलती 10 जबूलून के गोत्र में
से सोदी का बेटा गद्दीएल; 11 यूसुफ़ वंशियों
में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी
12 दान के गोत्र में से गमल्ली का बेटा अम्मीएल
13 आशेर के गोत्र में से मीकाएल का बेटा
सतूर, 14 नप्ताली के गोत्र में से वोप्सी का बेटा
नहूबी; 15 गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र
गूएल, 16 मूसा ने जिन आदमियों को जासूसी
करने के लिए भेजा था, उनके नाम ये ही थे
नून के बेटे होशे का नाम उसने यहोशू रख
दिया था । 17 मूसा ने उन्हें भेजते समय यह
निर्देश दिया था कि वे दक्षिण से जाएँ । 18 यह
भी कि पहाड़ी भाग में जाकर देश का जायज़ा
लें कि कैसा है । साथ ही यह कि वहाँ के
लोग कमज़ोर हैं या ताकतवर, थोड़े है या
बहुत । 19 उसके बारे में भी जानकारी लें वह
कैसा है - अच्छा या बुरा । उनकी बस्तियाँ,
किस तरह की हैं । उनके रहने के लिए तम्बू
है या इमारतें 20 उनकी ज़मीन उपजाऊ है या
बंजर । पेड़ है या नहीं । तुम हिम्मत रख कर
चलते चलो और उस देश की उपज में से कुछ
ले आना । यह समय[b] अंगूर के पकने का
था । 21 इसलिए वे चल पड़े । सीन नामक
जंगल से लेकर रहोब तक, जो हमात के
रास्ते में है पूरे देश का अच्छी तरह से भेद
लिया । 22 वे लोग दक्षिण की ओर से चले
और हेब्रोन तक गए । उस जग अहीमन रोशै
और तल्मै नामक अनाकवंशी रहा करते थे
। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात साल पहले
बसाया गया था । 23 तब वे ऐशकोल नामक
नाले तक पहुँचे वहाँ उन्होंने एक डाली अंगूरों
के गुच्छे सहित तोड़ ली । दो आदमियों ने
उसे एक लाठी पर लटकाया और चल पड़े
उन्होंने अनार लिया और अंजीर भी अपने
साथ ली, 24 इसलिए कि इस्राएलियों ने वहाँ
से अंगूर का गुच्छा तोड़ लिया था, उस
स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया
। 25 चालीस दिन[c] के बाद वे उस देश की
जासूसी करके लौटे । 26 वे पारान नामक
जंगल के कादेश नामक स्थान में मूसा, हारून
और इस्राएलियों के पास पहुँचे । उन्होंने सारा
समाचार उन्हें दिया । जो फल वे अपने साथ
लाए, उन्होंने वे भी दिखाए । 27 मूसा से वे
बोले, “जिस देश की जानकारी लेने तुमने
हमें भेजा था, वह सचमुच में सम्पन्न देश
है । वहाँ की उपज का नमूना यह देखो ।
28 लेकिन उस देश के निवासी ताकतवर हैं
उनके नगर भी किलों से घिरे हुए हैं और
बड़े हैं । हम ने वहाँ अनाकवंशियों को भी
देखा है । 29 दक्षिण देश में अमालेकी बसे

[a] 13.2 बुज़ुर्गों [b] 13.20 मौसम [c] 13.25 एक लम्बे समय

हुए हैं । पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी और
अमोरी रहा करते हैं । समुद्र के किनारे और
यर्दन नदी के किनारे कनानी रहते हैं। 30 मूसा
के सामने इस्राएलियों को खामोश करने के
विचार से कालेब ने कहा,"तुरन्त हम चढ़ाई
करके उस देश पर कब्ज़ा कर सकते हैं ।
ऐसा करने के लिए हमारे पास ताकत है।"
31 कालेब के साथ जाने वाले लोगों ने कहा,
"उन पर हमला करने के योग्य हम लोग नहीं
है । वे हम से अधिक ताकत रखते हैं ।"
32 इस्राएलियों के सामने ही उन्होंने उस देश
की बुराई यह कह कर ही, "जिस देश का
भेद लेने हम लोग गए थे, वह अपने लोगों
को खा जाता है । उस देश के लोग जिन्हें हम
ने देखा लम्बे-चौड़े हैं। 33 हम ने वहाँ नफ़ीली
जाति वाले अनाकवंशियों को भी देखा । उन
से अपनी तुलना करने पर हम टिड्डियों की
तरह ही दिखते हैं ।"

**14** तब सभी लोग ऊँची आवाज़ से
चिल्लाए और रोने लगे । 2 वे लोग
मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाने कर कहने
लगे,"अच्छा होता यदि हम मिस्र या जंगल
ही में मर जाते । 3 प्रभु हमें उस देश में ले
जाकर मरवा क्यों डालना मांगते हैं ? हमारी
महिलाएँ और बच्चे लूट में चले जाएँगे । हमारे
लिए क्या भला नहीं होगा कि हम वापस मिस्र
चले जाएँ । 4 वे आपस में कहने लगे,"आओ
हम किसी एक को चुनें कि हमारा अगुवा
बन जाए और हम मिस्र वापस जाएँ । 5 तभी
मूसा और हारून इस्राएलियों के सामने मुँह
के बल गिर पड़े 6 नून का बेटा यहोशू और
यपुन्ने का बेटा कालेब जो उस दल में शामिल
थे, जो जासूसी करने गए थे, अपने कपड़े
फाड़ कर 7 इस्राएलियों से कहने लगे," हम
जिस देश की जासूसी करके आए हैं, वह
बहुत ही बढ़िया देश है 8 यदि प्रभु हम से
खुश हैं तो हमें उस सम्पन्न देश में पहुँचाएँगे
और दे देंगे । 9 तुम प्रभु के विरोध में बलवा
मत करो, न ही उस देश के लोगों से डरो
। वे लोग अब सुरक्षित नहीं हैं । वे हमारे
अधीन हो जाएँगे । हमारे साथ प्रभु हैं । उन
से डरना नहीं । 10 तभी सब लोग फिर से
चिल्लाए और उन पर पथराव करना चाहा ।
तब प्रभु की रोशनी[a] मिलाप वाले तम्बू में
सभी इस्राएलियों पर चमकी 11 तभी प्रभु मूसा
से बोले, '' ये लोग कब तक मुझे आदर नहीं
देंगे ? मरे किए हुए अचरज के कामों को
देखने के बावजूद कब तक मुझ पर भरोसा
नहीं करेंगे ? 12 उन्हें मैं विपत्ति से मारूँगा।
उनके अपने स्थान से उन्हें निकाल दूँगा ।
मैं तुम से एक ऐसा वंश निकालूँगा जो उन
से बड़ा और ताकतवर होगा। 13 मूसा ने प्रभु
से कहा, "तब तो जो मिस्रियों जिन के बीच
में से आपने अपनी शक्ति दिखा कर उनको
निकाल जाए थे, यह सुनेंगे । 14 इस देश में
रहने वालों से कहेंगे, "हम ने तो यह सुना है
कि प्रभु इन के बीच में हैं और दिन में बादल
के खम्भे और रात में आग के खम्भे में होकर
चलते हैं" 15 इसलिए यदि आप इन लोगों
को एक ही बार में मार डालें, तो जिन देशों
ने आपकी बड़ाई सुनी है वे कहेंगे, 16 "प्रभु
अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें प्रतिज्ञा किए
हुए देश पहुँचा न सका, इसलिए जंगल ही
में उन्हें बर्बाद कर डाला" 17 इसलिए अब
प्रभु की शक्ति की बड़ाई आपके कहने के
अनुसार हो 18 कि प्रभु गुस्सा प्रगट करने में
धीरजवन्त और तरस से भरे हुए हैं । आप
बुराई को माफ़ करने वाले हैं । आप अपराधी
को निर्दोष नहीं ठहराएँगे। आप उनके पूर्वजों

[a] **14.10** उपस्थिति

की दुष्टता की सज़ा[a] उनके बेटों, पोतों और
परपोतों को भी भुगतने देते हैं । 19 अब इन
लोगों की बुराई को अपनी दया के कारण
जैसे मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करते आए
हैं, वैसे ही अभी भी कर दें । 20 प्रभु का यह
उत्तर था, “इसलिए कि तुम यह चाहते हो, मैं
उन्हें माफ़ कर देता हूँ । 21 लेकिन सारी पृथ्वी
प्रभु परमेश्वर की महिमा से भर जाएगी ।
22 मिस्र देश और जंगल में जिन लोगों ने मेरी
महिमा[b] देखी और मेरे किए गए अजीब को
देखने के बावजूद दस बार मुझे परखा और
मेरी न सुनी 23 इसलिए उनके पुरखों से मैंने
जिस देश को देने का वायदा किया था, वे
न देख पाएँगे। कहने का मतलब यह है कि
मेरी बेइज़्ज़ती करने वाले उस देश को न
देख सकेंगे । 24 लेकिन कालेब के भीतर एक
अलग ही आत्मा[c] है और उसने पूरी तरह से
मेरी बातों को माना है । जिस देश का भेद लेने
वह गया था, उसे मैं वापस वहाँ ले जाऊँगा ।
उस का वंश भी उस देश का अधिकारी होगा
। 25 अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहा
करते हैं इसलिए कल तुम घूम कर चल पड़ो
। तुम लोग लाल समुन्दर के रास्ते से होकर
जाना 26 फिर प्रभु ने मूसा और हारून से कहा,
27 “ये बुरे लोग मेरे विरोध में कुड़कुड़ाते
रहते हैं, मैं कब तक सहूँ ? 28 इसलिए उन्हें
बताओ कि प्रभु का कहना यह है कि जो
कुछ उन्होंने कहा है, उसी के अनुसार तुम
सब से बर्ताव करेंगे । 29 तुम्हारी लाशें इसी
जंगल में पड़ी रहेंगी । बीस साल और उस
से अधिक के सभी लोग जो शिकायत करते
रहे हैं, 30 उन में से यपुन्ने के बेटे कालेब और
नून के बेटे यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश
में न प्रवेश कर पाएगा जिस का वचन मैंने
दिया था । 31 लेकिन तुम्हारी सन्तान जिस
के बारे में तुमने सोचा था कि वह लूट में
चली जाएगी, उसे मैं प्रतिज्ञा किए हुए देश
में पहुँचा दूँगा वे लोग उस देश का आनन्द
उठाएँगे’, जिस की कीमत तुमने नहीं जानी ।
32 लेकिन तुम्हारी लाशें इसी जंगल में पड़ी
रहेंगी। 33 जब तक तुम्हारी लाशें जंगल में
गल न जाएँ तब तक[d] तुम्हारी औलाद तुम्हारे
व्यभिचार का परिणाम भोगते हुए चरवाही
करते रहेंगे ।” 34 जिन आदमियों को मूसा ने
देश की जासूसी करने के लिए भेजा था और
जिन्होंने लौटने पर डरावनी तस्वीर पेश की
थी कि सारी प्रजा उस पर कुड़कुड़ाने लगी
थी। 35 मैं, याहवे कह चुका हूँ कि मैं इस
बुरी प्रजासे, जो मेरे खिलाफ एक हो चुकी है,
ज़रूर ऐसा करूँगा। यही इस जंगल में उनकी
बर्बादी होगी’।” 36 जिन आदमियों को मूसा
ने देश की जासूसी करने के लिए भेजा था
और जिन्होंने लौटकर डरावनी तस्वीर पेश
की थी, कि पूरी प्रजा उस पर बड़बड़ाने लगी
37 हाँ, वे ही आदमी जिन्होंने डरावनी तस्वीर
रखी थी, प्रभु के सामने ही महामारी से मर गए
थे। 38 लेकिन जितने लोग देश का भेद लेने
गए थे, उनमें से नून का बेटा यहोशू और यपुन्ने
का बेटा कालेब दोनो ज़िन्दा थे। 39 जब मूसा
यह सब कह चुका, तब बड़ा रोना धोना चालू
हो गया। 40 सुबह वे जल्दी उठे और यह
कहते हुए पहाड़ी पर चढ़ने लगे,कि देखो हम
आ गए हैं। सचमुच हमने बलवा किया है,
लेकिन अभी जाने के लिए तैयार हैं, जिसके
बारे में प्रभु ने वायदा किया है। 41 लेकिन मूसा
ने कहा, “तुम क्यों याहवे के खिलाफ बलवा
कर रहे हो? तुम नाकामयाब हो जाओगे।
42 चढ़ो मत, ऐसा न हो कि दुश्मन तुम्हें मार
गिराए, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ नहीं हैं ।
43 तुम्हें अमालेकी और कनानी लोगों का

[a] **14.18** परिणाम [b] **14.22** कार्यों के द्वारा [c] **14.24** रवैया [d] **14.33** चालीस वर्ष या एक लम्बी अवधि

मुकाबला करना पड़ेगा और तुम तलवार से
मारे जाओगे, क्योंकि याहवे तुम्हारे बीच में
नहीं हैं।" 44 लेकिन उन लोगों ने नहीं सुना
और चढ़ते चले गए,लेकिन याहवे की वाचा
का बक्सा और मूसा छवनी से न हटे। 45 तब
उस पहाड़ी इलाके में रहनेवाले अमालेकियों
और कनानियों ने उतरकर उन पर हमला
बोल दिया और होर्मा तक मारते चले गए।

15 फिर प्रभु ने मूसा से कहा,
"इस्राएलियों को बताओ कि जब
वे अपनी प्रतिज्ञा की हुयी, भूमि पर पहुँचे
3 और मेरे लिये होमबलि, मेलबलि या
कुछ और चढ़ाएँ, चाहे वह खास मन्नत
पूरी करने या स्वेच्छाबलि के बारे में हो,
यह सब गाय-बैल या भेड़-बकरी का हो
सकता है 4 उस बलि के संग भेड़ के बच्चे
के पीछे चौथाई हीन तेल से सना एपा का
दो दसवाँ हिस्सा मैदा अन्नबलि के रूप
में चढ़ाया जाए, 5 और अर्घ के लिए एक
चौथाई हीन दाखमधु अपने होमबलि या
मेलबलि के हर एक मेमने के साथ तैयार
करे, 6 या एक मेढ़े के पीछे एपा का दो
दसवाँ अंश मैदा जो एक तिहाई हीन तेल
से सना हुआ हो, अन्नबलि के लिए तैयार
करना। 7 उस का अर्थ प्रभु को सन्तुष्ट करने
वाला तिहाई हीन दाखमधु देना 8 जब तुम
प्रभु को होमबलि या किसी खास मन्नत पूरी
करने के लिए कुर्बानी या मेलबलि करके
बछड़ा चढ़ाओ, 9 तब बछड़ा चढ़ाने वाला
उसके साथ आधा हीन तेल से सना एपा
का तीन दसवाँ भाग मैदा अन्नबलि की तरह
चढ़ाए, 10 उस का अर्घ आधा हीन दाखमधु
चढ़ाए । उस से प्रभु को सन्तुष्टि होगी ।
11 एक-एक बछड़े, मेंढ़े या भेड़ के बच्चे या
बकरी के बच्चे को इसी तरह से चढ़ाना
चाहिए 12 तुम्हारे कुर्बानी वाले जानवरों की
गिनती के अनुसार हर एक के साथ ऐसा ही
हो 13 देशी लोग प्रभु को खुश करने वाला
हवन चढ़ाते समय इसी तरीके से काम करें
14 तुम्हारे साथ रहने वाला परदेशी, या कोई
और इस तरह का हवन चढ़ाना चाहे, तो
जैसे तुम करो, वैसे ही वह करे 15 तुम्हारे
साथ रहने वाले लोगों और तुम्हारे लिए
समान तौर तरीका है। 16 नियम-व्यवस्था
सभी समान होंगे । 17,18 प्रभु ने मूसा से
यह भी कहा, "इस्राएलियों को मेरा यह
आदेश दो कि नए देश में तुम पहुँचने वाले
हो 19 वहाँ की फ़सल का उपयोग करो
और प्रभु को उठायी हुयी भेंट चढ़ाते रहो।
20 अपने पहले गुंधे आटे की एक पपड़ी
उठायी हुयी भेंट करके प्रभु के लिए चढ़ायी
जाए जिस तरह से तुम खलिहान के भीतर
से उठायी भेंट चढ़ाओ, वैसे ही उसे उठाया
भी करना । 21 पीढ़ी दर पीढ़ी अपने गुंधे
आटे में से प्रभु को उठाने वाली भेंट देते
रहना 22 इन सभी आदेशों में से जिन्हें प्रभु ने
मूसा को दिया है, किसी के खिलाफ़ मत
जाना 23 जिस दिन से प्रभु आज्ञाएँ देने लगे,
और बाद में दी गयी 24 उसमें यदि अनजाने
में किया गयाअपराध जिसे लोग नहीं जानते
हैं, एक बछड़ा और अन्नबलि और उस
का अर्घ चढ़ाए साथ ही में अपराधबलि
करके बकरा चढ़ाए 25 फिर पुरोहित सभी
लोगों के लिए क्षमा माँगे और क्षमा मिलेगी
26 इसलिए अनजाने में जो भी गुनाह करे -
चाहे देशी हो या परदेशी वह माफ़ी पाएगा
27 यदि कोई भूले से अपराध कर डालता है,
तो एक साल की एक बकरी अपराधबलि
के रूप में चढ़ाए 28 पुरोहित उसके लिए
प्रायश्चित्त करता है 29 भूल से कोई भी कुछ
क्यों न करे, सब के लिए एक ही कानून है ।

30 लेकिन यदि कोई ढिठाई से कुछ गुनाह
करे, वह प्रभु की बेइज्ज़ती करने वाला
होगा । उसे जान से मार डालना पड़ेगा ।
31 जो प्रभु को तुच्छ जानता है, उनकी बात
को टालता हे, उसे भी बर्बाद किया जाना
चाहिए । 32 जब इस्राएली मरूस्थल में थे,
उस दिन एक आदमी विश्राम दिन के दिन
लकड़ी बिनता हुआ पाया गया । 33 उसे
मूसा और हारून के पास लाया गया 34 उसे
हवालात में रखा गया, क्योंकि उसके साथ
क्या बर्ताव किया जाना चाहिए, यह साफ़
नहीं था 35 प्रभु के मूसा को दिए गए निर्देश
के अनुसार उस पत्थरवाह करके मारा जाना
चाहिए था। 36 लोगों ने ऐसा कर भी डाला
37,38 प्रभु का एक और आदेश मूसा को
मिला वह यह था कि लोग अपने कपड़ों
के छोर पर झालर लगाएँ । एक छोर की
झालर पर नीला फ़ीता भी लगाएँ। 39 इसका
मकसद यह है कि उसे देखते ही प्रभु की
आज्ञाएँ याद आ जाएँ । तुम उनकी मानना
तुम अपने मन और आँखों के वश में आकर
व्यभिचार न करना, जैसे करते आए हो ।
40 उनकी सभी आज्ञाओं को याद करके
उन्हें पूरा करो । अपने प्रभु के लिए पवित्र
बनो । 41 मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ जो
तुम्हें मिस्र की दासता में से निकाल लाया
था ।

**16** कोरह जो लेवी का परपोता, कहात
का पोता और यिसहार का बेटा था।
वह एलीआब के बेटे दातान अबीराम और
पेलेत के बेटे ओन, 2 इन तीनों ने रूबेनियों
से मिल कर ढाई सौ मुखिया जो सभा में
आदरणीय स्थान रखते थे, उन्हें अपने साथ
लिया 3 वे मूसा और हारून की खिलाफ़त
करने में लग गए । वे बोले ‘‘ अब हम
तुम्हारी नहीं सुनते । सभी लोग पवित्र हैं ।
प्रभु हम सब के बीच में हैं । तुम अपने को
बड़ा क्यों समझ रहे हो? 4 यह सुनते ही मूसा
मुँह के बल गिर गया । 5 वह कोरह और
उसके साथ के लोगों से बोला प्रातःकाल प्रभु
सबूत दे देंगे, कि पवित्र कौन है 6 हे कोरह,
“तुम अपने और साथ के लोगों के धूपदान
ठीक करो । 7 तुम उस में आग रख कर कल
प्रभु के सामने धूप देना । जिस किसी को
प्रभु चुन लेंगे वही पवित्र ठहरेगा।” 8,9 मूसा
लेवियों से भी बोला, “हे लेवियों क्या यह
मामूली बात है कि अपने निवास की सेवा
के लिए प्रभु ने तुम्हें बुलाया है ? 10 इतना ही
नहीं, तुम्हारे लेवी भाईयों को भी यह अवसर
दिया है, फिर भी तुम पुरोहित पद के भूखे
हो 11 इसीलिए तुमने सभी लोगों को प्रभु के
विरोध बलवा करने के लिए उकसाया है ।
हारून पर तुम क्यों खिसिया रहे हो 12 इसके
बाद एलीआब के बेटे दातान और अबीराम
को मूसा ने बुलवाया । उन्होंने आने से इन्कार
कर दिया 13 उन्होंने कहा,” यह एक मामूली
बात नहीं कि तुम हमें सम्पन्न देश से निकाल
कर जंगल में ले आए हो ताकि हम सभी
यही मर जाएँ । तुम हम पर अधिकार जताते
आ रहे हो । 14 तुम हमें एक सम्पन्न देश
नहीं पहुँचा पाए हो । हम न ही खेतों और
बगीचों के अधिकारी हुए हैं। क्या इसी तरह
तुम लोगों की आँख में धूल झोंकते रहोगे?”
15 मूसा ने गुस्से में कहा,” उन लोगों की भेंट
की तरफ़ निगाह मत कीजिए । मैंने इन से
कभी भी एक पशु नहीं लिया न ही किसी का
नुकसान किया है।” 16 फिर कोरह से मूसा
बोल उठा,“तुम अपने झुण्ड के साथ कल
हारून के साथ प्रभु के सामने हाज़िर होना
17 तुम अपने -अपने धूपदानों से धूप देना,
जिन की गिनती ढाई सौ होगी विशेष कर तुम

और हारून 18 इसलिए उन्होंने अपना-अपना
धूपदान लेकर वैसा ही किया 19 कोरह अपने
झुण्ड के साथ मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े
पर खड़ा हुआ । तभी प्रभु की रोशनी दिखायी
दी । 20,21 प्रभु मूसा और हारून से बोले,
“इन लोगों के बीच में से हट जाओ ताकि
मैं उन्हें भस्म कर डालूँ ।” 22 उन्होंने मुँह के
बाल गिरते हुए कहा, “हे प्रभु आप जो सभी
के प्रभु हैं, क्या एक व्यक्ति की गलती के
कारण आपका गुस्सा सब लोगों पर आए
23,24 प्रभु ने मूसा से कहा, मण्डली के लोगों
को बताओ कि कोरह दातान और अबीराम
के तम्बुओं से दूर चले जाएँ । 25 तब मूसा
उठ कर दातान और अबीराम के पास गया
। साथ ही साथ इस्राएली बुज़ुर्ग लोग उसके
पीछे-पीछे गए 26 वह मण्डली के लोगों से
बोला,” तुम लोग उन बुरे लोगों के निवास
के पास से हट जाओ। यहाँ तक कि उनकी
किसी चीज़ को मत छूना । कहीं ऐसा न
हो कि उनके साथ तुम्हें भी नुकसान उठाना
पड़े । 27 यह सुनते ही वे लोग कोरह दातान
और अबीराम के डेरों के पास से दूर चले
गए । लेकिन दातान और अबीराम निकल
कर अपनी पत्नियों और बच्चों सहित दरवाज़े
पर आ खड़े हुए । 28 तब मूसा बोला,“अब
तुम्हें मालूम पड़ जाएगा कि मुझे प्रभु ने चुना
है । यह भी कि मैं मनमानी नहीं करता हूँ
29 यदि उन लोगों की मौत और लोगों की
तरह हो और उनको मिलने वाली सज़ा दूसरों
की तरह हो, तब यह साबित हो जाएगा कि
मुझे प्रभु ने नहीं भेजा है । 30 लेकिन यदि प्रभु
परमेश्वर अपनी अजीब शक्ति को दिखा दें,
और सभी बलवा करने वाले तथा उनका सब
कुछ पृथ्वी अपना मुँह खोलकर उन्हें निगल
ले, तब समझ लेना कि इन लोगों ने प्रभु की
बेइज्ज़ती की है । 31 वह इतना कह ही रहा
था, कि पृथ्वी नीचे से फट गयी । 32 पृथ्वी ने
कोरह और उसके सभी साथ के लोगों और
उनके समान तथा सम्पत्ति को निगल लिया ।
33 उनका पूरा घरबार ज़िन्दा मृत्युलोक में जा
पड़ा । 34 आस-पास में खड़े इस्राएली यह सब
देख कर चिल्लाते हुए भागे ताकि उनके साथ
भी वैसा न हो । 35 उसी समय प्रभु ने आग भेज
कर ढाई सौ धूप चढ़ाने वालों को जला डाला
36,37 इसके बाद प्रभु ने मूसा को निर्देष दिया
कि वह हारून पुरोहित के बेटे एलीआजार
से कहे कि वह धूपदानों को आग में से
उठाए और आग के अंगारों को बिखरा दे
। 38 जिन लोगों ने बलवा किया और नाश
हो गए, उनके धूपदानों के पत्तर पीट दिए
जाएँ ताकि वेदी के मढ़ने में वह काम आए ।
39 इसलिए एलीआजार पुरोहित ने उन पीतल
के धूपदानों को पिटवा दिया। 40 यह इसलिए
किया गया ताकि इस्राएली जान लें कि आने
वाली पीढ़ियों में धूप चढ़ाने के लिए, हारून
के वंश के अलावा कोई हिम्मत न करे,
नहीं तो कोरह और उसके साथी के समान
वे भी सज़ा पाएँगे । 41 दूसरे दिन इस्राएली
लोग मूसा और हारून पर बड़बड़ाने लगे कि
हारून और मूसा के कारण लोग मारे गए ।
42 जब वे सभी वहाँ इकट्ठा हो रहे थे, मिलाप
वाले तम्बू के पास उन्होंने छाए हुए बादल
और प्रभु के प्रकाश को देखा 43 फ़िर मूसा
और हारून तम्बू के सामने आए 44,45 मूस से
प्रभु बोले, “तुम इन लोगों के बीच से निकल
जाओ, ताकि मैं इन्हें बर्बाद कर डालूँ । यह
सुन वे भूमि पर मुँह के बल गिर पड़े 46 मूसा
हारून से बोला, “धूपदान को लेकर, वेदी
की आग रख कर उस पर धूप डालो । जल्दी
से जाओ मण्डली के लिए प्रभु से माफ़ी माँग
लो । प्रभु आग बबूला हैं और मरी फैलने लगी
है।” 47 यह सुन उसने वैसा ही किया । तभी

मरी भी रूक गयी 48 जब वह ज़िन्दों और मरे
हुओं के बीच खड़ा हुआ, महामारी रूक गयी
49 जो लोग कोरह के बलवा में शामिल थे
और मर गए थे, उसके अलावा चौदह हज़ार
सात सौ इस बार मरे । 50 मिलाप वाले तम्बू
के दरवाज़े पर मूसा के पास हारून जैसे ही
लौटे महामारी रूक गयी ।

**17** तब प्रभु मूसा से बोले, "इस्राएलियों
के पूर्वजों के अनुसार उनके सारे
प्रधानों के पास से एक छड़ी लो । बारह
छड़ियों में से एक-एक पर एक-एक के
मूल पुरुष का नाम लिख लो । 3 जो
लेवियों की छड़ी है उस पर हारून का नाम
लिखना। इस्त्रालियों के पूर्वजों के परिवारों[a]
के एक-एक मुख्य पुरुष की एक-एक छड़ी
रहेगी । 4 इन छड़ियों को मिलाप वाले तम्बू
में साक्षीपत्र के सामने रख देना । 5 मेरे
चुने हुए पुरुष का सबूत यह होगा कि
उस छड़ी में कलियाँ निकल आएँगी । इस
से इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना भी खत्म हो
जाएगा । 6 इसलिए ये बातें मूसा ने उन्हें
बतायीं और वैसा ही किया गया 7 छड़ियों को
भी साक्षीपत्र के तम्बू में रखा 8 दूसरे दिन जब
मूसा वहाँ गया तो पाया कि हारून की छड़ी
में कलियाँ निकलीं, फूल खिले और पके
बादाम भी हैं । 9 मूसा ने वे छड़ियाँ उठायीं
और इस्राएलियों के सामने रखीं । सभी ने
अपनी-अपनी छड़ पहचान ली 10 फिर मूसा
ने प्रभु की आवाज़ सुनी,"हारून की छड़
को साक्षीपत्र के सामने रखना । यह बलवा
करने वालों के लिए एक चिन्ह होगा ताकि
वे भविष्य में कभी वे कुड़कुड़ाएँ नहीं और
नाश न हों" 11 मूसा ने ऐसा किया भी। 12 तब
इस्राएली आकर मूसा से कहने लगे, '' देखो
हम सब नाश होने पर हैं । 13 जो कोई प्रभु के
निवास के पास जाता है वह मर जाता है ।
क्या हम सभी मर जाएँगे ?"

**18** फिर हारून से प्रभु ने कहा कि पवित्र
स्थान के अधर्म का बोझ तुम पर
और तुम्हारे बेटों और पिता के परिवार पर
होगा । तुम्हारे पुरोहितों के अपराध की सज़ा
भी तुम्हारे बेटों पर आएगी । 2 लेवी के गोत्र
को अपने साथ लाना । वे तुम्हारी सेवा करें ।
लेकिन साक्षीपत्र के तम्बू के सामने तुम और
तुम्हारे बेटे आया करें 3 जो कुछ तुम्हारे सुपुर्द
किया गया है, वे लोग उसकी देख-रेख करें।
पवित्र स्थान के बर्तनों और वेदी के पास मत
आना। कहीं ऐसा न हो कि वे लोग और तुम
मर जाओ 4 वे तुम्हारे साथ मिलकर मिलाप
वाले तम्बू की सभी सेवकाई करें और चीज़ों
की रक्षा करें । लेकिन जो तुम्हारे कुल का
नहीं है वह पास न आए। 5 पवित्र स्थान और
वेदी की रखवाली तुम खुद करना, जिस से
इस्राएलियों पर दण्ड न आए । 6 मैंने लेवियों
को पहले ही से अलग किया है । वे लोग
मिलाप वाले तम्बू की सेवा के लिए तुम को
और प्रभु को सोंपे गए हैं । 7 वेदी और बीच
वाले पर्दे के अन्दर की बातों की सेवा के
लिए तुम और तुम्हारे बेटे अपने पुरोहितपन
की रक्षा करें । सेवा तुम ही करना । मैं
तुम्हें पुरोहितपन की सेवा दान करता हूँ ।
जो लोग तुम्हारे कुल के नहीं है, यदि वे
पास आएँ तो मार डाले जाएँ। 8 प्रभु हारून से
बोले, "मैं तुम्हें उठायी भेंट को तुम्हारा हिस्सा
देने के लिए ठहराता हूँ । कहने का अर्थ
है, इस्राएलियों की पवित्र की हुयी वस्तुएँ,
जितनी भी हों, उन्हें तुम्हारे और तुम्हारे बेटों
का हक करके ठहराता हूँ । 9 जो पवित्र चीज़ें

[a] 17.3 घरानों

आग में होम न की जाएँ, वे तुम्हारी रहें। मतलब यह कि इस्राएलियों के सभी चढ़ावों में से उनके सभी अन्नबलि, अपराधबलि और दोषबलि जो वे मुझे देंगे वह तुम्हारे और तुम्हारे बेटों के लिए अलग[a] ठहरें। 10 तुम उन्हें खास समझ कर खाया करना। और हर एक पुरुष खाए। 11 ये चीज़ें भी तुम्हारी हों। इस्राएलियों से मिलने वाली हिलाने की भेंटें हमेशा के लिये तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा होंगे। तुम्हारे परिवार में अलग किये हुए लोग ही उनको खाएँ। 12 बढ़िया तेल, दाखमधु और अनाज वे पहले फल के रूप में लाएँगे। वह सब तुम्हारा होगा। 13 उनके देश की हर तरह की पहली उपज, जो वे भेंट की तरह लाएँ, वह सब तुम्हारी होगी। सभी उन सब को नहीं खाएँ। 14 इस्राएल में जो भी अर्पित किया जाए, वह सब तुम्हारा हो। 15 मनुष्यों और जानवरों में जो भी पहलौठा होगा, वह प्रभु के लिये अलग ठहरे और वह सब तुम्हारे लिये हो। इन्सान का पहलौठा कीमत लेकर आज़ाद कर देना।।अशुद्ध जानवर के पहलौठे को भी दाम लेकर मुक्त कर देना। 16 जिन्हें कीमत देकर छोड़ना है, जब वे एक महीने के हों,तब ठहराए मूल्य के हिसाब से अर्थात पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल के मुताबिक चाँदी के पाँच शेकेल लेकर उन्हें आज़ाद कर देना। 17 लेकिन गाय, भेड़ और बकरी के पहलौठों को कीमत लेकर मुक्त न करना। वे प्रभु के लिये अलग किये गये हैं।उनके खून को वेदी पर छिड़कना और चर्बी को अग्निबलि करके जला देना । वह प्रभु के लिये सुखदायक खुशबू हो। 18 लेकिन उस का मांस तुम्हारे लिये हो। हिलाई हुई छाती और दाहिनी जाँघ भी तुम्हारी हो। 19 अलग की हुई जितनी भेंट इस्राएली लाएँ, वह सब मैं तुम्हारे और तुम्हारी सन्तान के लिये सदा काल का हिस्सा ठहराता हूँ।यह तुम्हारे और तुम्हारे वंश के लिये प्रभु के सामने नमक की सदा ठहरने वाली वाचा है। 20 फिर प्रभु ने हारून से कहा,"उनके देश में तुम्हारी कोई मीरास न होगी और न ही उनके बीच कोई हिस्सा।इस्राएलियों के बीच तुम्हारा हिस्सा और मीरास मैं ही हूँ। 21 मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा लेवी लोग करते हैं, उसके बदले मैं आया हुआ सारा दसवाँ हिस्सा उनके लिये ठहराता हूँ। 22 आने वाले समयों में इस्राएलियों को इस तम्बू के पास कभी नहीं आना चाहिये। इस से वे मौत के कौर बन सकते हैं। 23 लेकिन लेवी मिलाप वाले तम्बू की सेवा किया करें। उन्हें ही उनकी बुराई का बोझ उठाना चाहिये। उनकी निजी सम्पत्ति न होगी । 24 जो इस्राएली दसवाँ हिस्सा लाएँगे, वही उनका हिस्सा होगा। 25 फिर प्रभु ने मूसा से कहा, 26 "लेवी भी मिले हुए दान में से दसवाँ भाग अलग करें। 27 उनकी भेंट उनके फ़ायदे के लिये इस तरह की होगी जैसी कि अनाज और अँगूर का रस। 28 इस तरह से लेवियों की भेंट हारून के लिये होगी। 29 जितनी चीज़ें तुम्हें मिलती हैं , उनका बढ़िया से बढ़िया हिस्सा प्रभु का होना चाहिये। 30 मूसा से प्रभु ने कहा," तुम लेवियों को बतलाओ कि वे लोग जो अच्छी-अच्छी चीजों को देंगे, वह सब खलिहान के अनाज और रस-कुण्ड के रस की तरह होगा। 31 सभी जगहों पर तुम उसे अपने परिवार के साथ खा सकोगे। प्रभु से भेंट करने वाली जगह पर तुम्हारी की जाने वाली मेहनत का यह मेहनताना होगा। 32 उत्तम हिस्सा देने से

[a] **18.8** पवित्र

तुम दोषी भी न ठहरोगे। लेकिन इस्राएलियों
की अलग की हुई वस्तुओं को तुम न छूना,
ताकि दण्ड से बचे रहो।

**19** प्रभु की आवाज़ मूसा और हारून
तक पहुँची "आदेश यह है कि तुम
इस्राएलियों को बताओ, कि मेरे पास एक
लाल निर्दोष बछिया लाएँ। उसे निर्दोष होना
चाहिए। उस से कभी काम न लिया गया
हो। 3 फिर एलीआज़र पुरोहित उसे छावनी
के बाहर ले जाए, जहाँ उसे कोई कुर्बान
करे। 4 फिर एलीआजार अपनी उंगली से
खून लेकर मिलाप वाले तम्बू के सामने सात
बार छिड़क दे। 5 फिर कोई उस बछिया
की खाल, मांस, खून और गोबर सहित
उसके सामने जलाए। 6 पुरोहित देवदार की
लकड़ी, ज़ूफ़ा और लाल रंग का कपड़ा ले
और आग में, जिस में बछिया जलती हो,
डाल दे। 7 तब वह अपने कपड़े धोकर
नहाए और छावनी में आए लेकिन शाम
तक अशुद्ध रहो 8 जो इन्सान उसे जलाए
वह पानी से अपने कपड़े धोए, नहाए और
शाम तक अशुद्ध रहे। 9 फिर कोई शुद्ध पुरुष
उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के
बाहर किसी साफ़ जगह में रख दे। वह
राख इस्राएलियों के लिए अशुद्धता से छुड़ाने
वाले पानी के लिए हो - वह अपराधबलि
है। 10 जो व्यक्ति बछिया की राख को
बटोरेगा, वह शाम तक अशुद्ध ठहरेगा। उसे
भी अपने कपड़े धोने पड़ेंगे। 11 मृत शरीर
को छूने वाला सात दिन तक अशुद्ध रहे।
12 वह तीसरे दिन पानी से अपराध छुड़ा कर
पवित्र हो जाए और सातवें दिन शुद्ध कहलाए
। 13 जो मृतक देह को छू कर अपराध
छुड़वाकर अपने आप को पवित्र न करे, वह
प्रभु के निवासस्थान को अशुद्ध करेगा। उसे
नष्ट किया जाना चाहिए। क्योंकि शुद्ध करने
वाला पानी उस पर छिड़का नहीं गया था,
इसलिए उसे अशुद्ध ही समझा जा चाहिए
14 यदि कोई डेरे ही में मर जाए तो उस डेरे
में रहने वाले सात दिन तक अशुद्ध ठहरेंगे।
15 वहाँ का हर एक खुला बर्तन भी अशुद्ध
ठहरेगा। 16 तलवार से मारे गए या अपनी
मौत से मरे व्यक्ति, या इन्सान की हड्डी छूने
वाले और कब्र को छूने वाला सात दिन तक
अशुद्ध कहलाए 17 अशुद्ध इन्सान के लिए
जलाए गए अपराधबलि की राख में से कुछ
लेकर बर्तन में डाल कर उस पर सोते का
पानी उण्डेले। 18 फिर एक जन ज़ूफ़ा लेकर
उस पानी में डुबा कर पानी को उस डेरे पर
और जितने बर्तन तथा लोग उस में हो, उन पर
छिड़के। मारे हुए व्यक्ति, हड्डी के या अपनी
मौत से मरे या कब्र के छूने वाले पर छिड़के।
19 वह शुद्ध हुआ आदमी तीसरे और सातवें
दिन उस अशुद्ध आदमी पर छिड़के। उसके
पास से वह उसे सातवें दिन छुड़ाए और
पवित्र करे। इसके बाद वह अपने कपड़ों
को धोए, नहाए और सन्ध्या तक शुद्ध रहे
। 20 जो व्यक्ति अशुद्ध होकर अपने अपराध
छुड़ा कर स्वयं को पवित्र न कराए, वह प्रभु
की पवित्र जगह को अशुद्ध करने वाला होगा
। उसे सभी लोगों के बीच से नष्ट किया जाए
। क्योंकि उस पर अशुद्धता से छुड़ाने वाला
पानी न डाला गया, इसलिए वह अशुद्ध ही
होगा। 21 जो अशुद्धता से छुड़ाने वाला पानी
छिड़के, वह अपने कपड़ों को धोए। जिस
व्यक्ति से अशुद्धता से छुड़ाने वाला पानी छू
जाए, वह भी शाम तक अशुद्ध रहे। 22 वह
इन्सान जिस को भी छूएगा, वह भी अपवित्र
हो जाएगा। जो प्राणी उस चीज़ को छूएगा
वह भी सन्ध्या तक अशुद्ध हो।"

**20** पूरी मण्डली पहले महीने में सीनै
पहाड़ पर आयी । वे सभी कादेश
नामक जगह पर रहने लगे । वहीं मरियम
का देहान्त हो गया 2 उस स्थान पर पानी
की कमी होने के कारण, सब लोग मूसा
और हारून की खिलाफ़त के लिए इकट्ठे
हुए 3 उन्होंने बुड़बुड़ाते हुए कहा, ‘‘ अच्छा
यह होता कि हम भी उसी समय मर जाते,
जब हमारे दूसरे भाई-बन्धु मर गए 4 क्या तुम
हम सभी को इसलिए ले आए हो, कि हम
लोग अपने मवेशी समेत मर जाएँ । 5 मिस्र
से निकाल कर तुम हमें इस बुरी जगह क्यों
ले आए हो ,यहाँ बीज, अंजीर, अंगूर, अनार
आदि फल और पीने के लिए पानी नहीं है
6 तब मूसा और हारून मिलाप वाले तम्बू
के दरवाज़े पर अपने मुँह के बल गिर पड़े
। वहीं प्रभु का तेज उन्हें दिखायी दिया ।
7,8 मूसा से प्रभु बोले, “लाठी लाकर हारून
सहित लोगों को एकत्र करके उनके सामने
ही उस चट्टान से बातें करो । वहाँ से पानी
निकलेगा । वे लोग खुद पीएँगे और अपने
जानवरों का पिला सकेंगे । 9 मूसा ने ऐसा
ही किया 10 मूसा बोला,” हे बलवईयो क्या
तुम्हारे लिए इस चट्टान से पानी निकालें?
11 मूसा ने चट्टान पर लाठी दो बार मारी । उस
में से पानी निकल पड़ा और सब की ज़रूरत
पूरी हुयी । 12 प्रभु का वचन मूसा और हारून
तक पहुँचा, “क्योंकि तुमने मुझ पर भरोसा
नहीं रखा । इस्राएलियों की निगाहों में मुझे
इज़्ज़त नहीं दी, इसलिए तुम इन लोगों को
प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं पहुँचा सकोगे
। 13 इसलिए कि इस्राएलियों ने वहाँ प्रभु से
झगड़ा किया था, सोते का नाम मरीबा पड़
गया 14 मूसा ने संदेश के साथ एदोम के राजा
के पास दूत भेजे,” आपका भाई इस्राएल
यह कहता है: हमारे दुखों को तुम जानते
हो । 15 मिस्रियों लोगों ने हमारे साथ और
हमारे पूर्वजों के साथ बुरा बर्ताव किया था
16 हमारे गिड़गिड़ाने को सुन कर प्रभु ने दूत
को भेज कर हमें आज़ादी दी । अभी हम
सीमावर्ती क्षेत्र कादेश में हैं । 17 हमें अपने
देश में से गुज़रने दो । किसी खेत या अंगूर के
बगीचे को खराब न करेंगे । कुओं का पानी
इस्तेमाल न करेंगे । सड़क-सड़क चलते हुए
सीधे निकल जाएँगे ।” 18 एदोमियों का उसे
संदेश यह मिला, “नहीं तुम्हें इजाज़त नहीं
है।” 19 फिर इस्राएली बोले, ‘‘ हम सीधे
निकल जाएँगे, यदि हमारे जानवर पानी पीएँ
भी तो हम उसकी कीमत चुकाएँगे । 20 एदोम
बड़ी फ़ौज लेकर इस्राएलियों का मुकाबला
करने निकल आया 21 अनुमति नहीं मिलने
से ये लोग दूसरी ओर मुड़ गए 22 इस्राएली
वहाँ से चल कर होर नामक पहाड़ तक
आए । 23,24 मूसा और हारून से वहाँ प्रभु ने
कहा, “हारून का निधन हो जाएगा, क्योंकि
तुम दोनों ने मरीबा सोते पर मेरी बात न
मानी । हारून वायदा किए हुए देश को
न देख सकेगा । 25 तुम हारून और उसके
बेटे एलीआज़र को होर पहाड़ पर ले जाओ
। 26 उसके कपड़े उतार कर उसके बेटे
एलीआजार को पहनाओ । 27 इस आदेश को
मानकर मूसा ने किया । वे पूरे झुण्ड के साथ
होर पहाड़ पर चढ़ गए । 28 मूसा ने हारून के
कपड़े उतार कर उसके बेटे एलीआजार को
पहना दिया । वहीं शिखर पर हारून की मौत
हो गयी । 29 यह देख कर इस्राएली तीस दिन
तक रोते रहे ।

**21** अराद के कनानी राजा ने सुना कि
जिस रास्ते से जासूस आए थे, उसी
रास्ते से इस्राएली आ रहे हैं। इसलिए उसने
उन से युद्ध किया और तमाम लोगों को

गुलाम बना ले गया 2 फिर इस्राएलियों ने यह
मन्नत मानी कि यदि प्रभु उन लोगों को उनके
अधिकार में कर दे तो वे उनके नगरों को
बर्बाद कर डालेंगे । 3 प्रभु ने ऐसा कर भी
दिया। इसलिए उन्होंने उनके नगरों सहित
उन्हें मार डाला । उस जगह का नाम होर्मा
रख दिया गया 4 फिर उन लोगों ने होर पहाड़
से निकल कर लाल समुद्र का रास्ता लिया
। लोगों का मन मुश्किल रास्ते की वजह से
घबरा गया । 5 वे प्रभु के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने
लगे और मूसा से बोले, “हम सभी को मारने
के लिए तुम हमें यहाँ ले आए हो । यहाँ हमारे
खाने का कोई ठिकाना नहीं है । 6 इसलिए
प्रभु ने उनके बीच ज़हर वाले साँप भेजे ।
सांपों के डसने से बहुत से मर गए 7 तब लोग
मूसा से कहने लगे, “हम ने प्रभु और तुम्हारे
खिलाफ़ बोला है । हमारे लिए बिनती करो,
कि ये साँप यहाँ से चले जाएँ।” 8 प्रभु ने मूसा
से कहा, “एक बहुत ज़हरीले साँप की प्रतिमा
बना कर खम्भे पर लटकाओ । तभी साँप
से डसे लोग बच सकेंगे।” 9 इसलिए मूसा
ने पीतल का एक साँप बनवाया और खम्भे
पर लटका दिया । साँप के काटे हुए जितने
लोगों ने उसकी ओर दृष्टि की, वे बच गए
10 फिर इस्राएलियों ने वहाँ से निकल कर
ओबोत में पड़ाव किया । 11 फिर आबोत
से वे निकले और अबारीम नामक डीहो में
पड़ाव डाला । यह मोआब के सामने के
जंगल में पूर्व की ओर है । 12 वहाँ से निकल
कर वे जेरेद नामक नाले में रूक गए ।
13 वहाँ से निकल कर उन्होंने अर्नोन नदी
के दूसरी ओर डेरे खड़े किए । 14 इसलिए
प्रभु के संग्राम नामक किताब में इस तरह
लिखा है, “सूपा में बाहेब, और अर्नोन की
घाटी, 15 उन घाटियों की ढलान जो आर नगर
की तरफ़ है और जो मोआब की सरहद पर
है।” 16 वहाँ से वे जो निकले, तो बैर तक
पहुँचे । यहीं पर वह कुआँ है, जिस के बारे
में प्रभु ने वायदा किया था कि उस से वह
पानी देंगे । 17 तभी इस्राएलियों ने यह गीत
गाया था, “कुएँ! पानी से उमड़ बहो! इस
का गीत गाओ’ 18 जिस को गर्वनरों ने खोदा
और इस्राएल के अमीरों ने अपने सोंटों और
लाठियों से खोद लिया” फिर वे जंगल से
मत्ताना को 19 और मत्ताना से नहलीएल और
नहलीएल से बामोत को 20 बामोत से निकल
कर उस घाटी तक जो मोआब के मैदान में है
और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन
की ओर झुका है, पहुँच गए 21 इस्राएलियों ने
एमोरियों के बादशाह सीहोन के पास खबर
भेजी 22 तुम हम लोगों को अपने क्षेत्र में से
गुज़रने दो । हम किसी खेत या बगीचे को
नुकसान नहीं पहुँचाएँगे कुएँ का इस्तेमाल
नहीं करेंगे और सड़क-सड़क निकल जाएँगे
23 फिर भी सीहोन ने इजाज़त नहीं दी, इसके
विपरीत उसने मुकाबला करने के लिए सेना
का सहारा लिया 24 इस्राएलियों ने उन पर
जीत हासिल कर ली 25 इसलिए इस्राएलियों
ने एमोरियों के सभी नगरों को हथिया लिया
वहाँ तथा हेशबोन के आस-पास के इलाकों
में रहने लगे 26 एमोरियों के राजा का शहर
हेशबोन ही था । 27 ऐसा कहा जाता है
“हेशबोन में आओ सीहोन का नगर बसे और
मज़बूत किया जाए 28 क्योंकि हेशबोन से
आग अर्थात् सीहोन नगर से लपट निकली
जिस से मोआब देश का आर नगर और
अर्नोन के ऊँचे स्थानों के मालिक भस्म हो
गए । 29 हे मोआब, तुम पर हाय! कमोश
देवता के लोग बर्बाद हुए उसने अपने बेटों
को भगेडू और अपनी बेटियों को एमोरी
राजा सीहोन की दासी बना दिया । 30 हम ने
उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन और दीबोन तक

बर्बाद हो गया हम ने नोपह और मेदबा तक
भी उजाड़ दिया है । 31 इस तरह इस्राएली
वहाँ बस गए 32 याजेर नगर का भेद लेने के
लिए मूसा ने भेदिए भेजे और उनके गाँव जप्त
कर लिए । उसने वहाँ के वासियों को बाहर
खदेड़ दिया 33 इसके बाद वे मुड़ कर बाशान
के रास्ते से निकले । वहीं बाशान के राजा ने
उन से मुकाबला किया । 34 प्रभु का वचन
मूसा तक पहुँचा, "तुम उस से डरना नहीं,
क्योंकि मैं उसको, उसकी सेवा को और
उसके देश को तुम्हारे वश में कर दूँगा । जैसा
व्यवहार तुमने एमोरियों के राजा के साथ
किया था, वैसा ही इसके साथ भी करना।"
35 इसलिए उन्होंने उसके बेटों और उसकी
प्रजा को यहाँ तक मारा कि कोई न बचा;
और उन्होंने उसके देश पर अधिकार कर
लिया।

**22** फिर इस्राएली वहाँ से निकले तथा
यरीहो के निकट यरदन नदी के
इस पार मोआब के अराबा में तम्बू गाड़े ।
2 इस्राएल ने एमोरियों के साथ क्या -क्या
किया था, यह सब सिप्पोर के बेटे बालाक ने
देखा था 3 इस्राएलियों की बड़ी संख्या देख
कर मोआब डर गया था। 4 तब मोआबियों
ने मिद्यानी बुज़ुर्गो से कहा, '' ये लोग हमें
इस तरह चट कर जाएँगे, जैसे बैल खेत
की हरी घास को चट कर जाता है। इन
दिनों में सिप्पोर का बेटा बालाक मोआब
का बादशाह था 5 उसने बिलाम के पास
संदेशवाहक भेज कर बुलवाया, "मिस्र से
बड़ी संख्या में लोग आकर मेरे सामने ही बस
गए हैं । 6 वे लोग मुझ से ज़्यादा ताकतवर
हैं। यदि तुम आकर शाप दो, तो हमारी
उनके ऊपर जीत मुमकिन है । मुझे मालूम
है कि जिन्हें तुम आशीर्वाद देते हो उस
का भला होता है। जिसे तुम शाप देते हो,
उस का बुरा होता है 7 इसके बाद मोआबी
और मिद्यानी बुरे भविष्य बताने के लिए
पैसा लेकर बिलाम के यहाँ गए जहाँ उन्होंने
बालाक की बातें कह सुनायी 8 उसने उन्हें
नेवता दिया कि वे उस रात वहीं टिक जाएँ ।
यह भी कि जो वचन प्रभु से मिलेगा, उसी के
मुताबिक वह जवाब देगा । इस पर मोआब
के हाकिम बिलाम के यहाँ ठहर गए । 9 तब
बिलाम से प्रभु ने पूछा,"ये लोग जो तुम्हारे
यहाँ हैं, कौन हैं ? 10 बिलाम ने प्रभु को
उत्तर दिया, "सिप्पोर के बेटे मोआब के राजा
बालाक ने मुझे यह संदेश भेजा है 11 कि जो
लोग मिस्र से निकल कर आए हैं, उन से
पृथ्वी भर गयी है। इसलिए तुम आओ और
उन्हें शाप दो। शायद मैं इन्हें खदेड़ पाऊँगा ।
12 प्रभु बिलाम से बोले, '' तुम न ही इन लोगों
के साथ जाओ और न ही शाप दो । वे लोग
पहले ही आशीषित हैं। 13 सुबह उठते ही
बिलाम ने बालाक के हाकिमों से कहा,"तुम
वापस अपने देश को चले जाओ, क्योंकि प्रभु
मुझे तुम्हारे साथ चलने की इजाज़त नहीं दे
रहे हैं । 14 तब मोआबी गवर्नरों[a] ने जाकर
बालाक से कहा, "बिलाम ने हमारे साथ
आने से इन्कार कर दिया है । 15 इसलिए
बालाक ने फिर से और हाकिम भेजे । ये
लोग और अधिक प्रभावशाली होने के साथ
साथ संख्या में भी ज़्यादा थे । 16 बिलाम के
पास आकर वे लोग बोले, '' सिप्पोर का
बेटा बालाक कहता है,मेरे पास ज़रूर आओ,
17 मैं तुम्हें सम्मान दूँगा । जो कुछ तुम कहो,
मैं करूँगा, इसलिए आकर इन्हें शाप दो ।"
18 बिलाम ने बालाक के सेवकों को कहा,
"बालाक चाहे मुझे सोने चाँदी को बहुतायत

[a] **22.14** हाकिमों

से दे, फिर भी प्रभु की आज्ञा के खिलाफ़ नहीं
जा सकता । 19 इसलिए तुम लोग आज रात
यही टिको, कि मैं फिर से मालूम करूँ कि प्रभु
क्या कह रहे हैं । 20 रात में बिलाम के पास
आकर प्रभु ने कहा, “जो लोग तुम्हें बुलाने
आए हैं, उनके संग ज़रूर जाओ, लेकिन
मेरे कहने के अनुसार ही करना । 21 सुबह
बिलाम उठा और तैयारी कर मोआबी गवर्नरों
के साथ चल पड़ा 22 प्रभु यह देख आग
बबूला हो गए और उनका दूत उस का विरोध
करने अड़ गया। अपनी गदही पर वह सवार
था और उसके साथ उसके दो नौकर भी
थे। 23 प्रभु का दूत उस गदही को तलवार
लिए हुए दिखायी पड़ा । डर कर गदही ने
रास्ता छोड़ दिया और खेत में भाग गयी ।
तभी बिलाम ने गदही की पिटायी कर दी
। 24 तब प्रभु का दूत अंगूर के बगीचे के
बीच की गली में, जिस के दोनों ओर बगीचे
की दीवार थी खड़ा हो गया 25 प्रभु के दूत
को देख कर गदही दीवार से ऐसी सट गयी,
कि बिलाम का पैर दीवार से दब गया और
उसने फिर उसे मारा 26 इसके बाद ही प्रभु
का दूत आगे बढ़ा और एक सकरी जगह
पर खड़ा हो गया । वहाँ बाएँ - दाएँ जाने
की संभावना नहीं थी । 27 प्रभु के दूत को
वहाँ देख कर गदही बैठ गयी । तभी बिलाम
आगबबूला हो गया । उसने उस पर लाठी
उठायी 28 प्रभु ने गदही को बोलने के योग्य
किया और बिलाम से बोली, ‘‘ मैंने तुम्हारा
क्या बिगाड़ा है कि तुम मुझे मार रहे हो ?
29 बिलाम गदही से बोला, ‘‘ क्योंकि तुम
ठीक से काम नहीं कर रहे हो । यदि मेरे
पास तलवार होती, तो मैं तुम्हें मार डालता
। 30 गदही ने कहा, “क्या तुम भूल गए हो
कि तुम एक लम्बे अरसे से मेरी सवारी करते
आ रहे हो, क्या, मैंने आज तक गलत किया
है ? उसने कहा, “कभी नहीं ।” 31 तब प्रभु
ने बिलाम की आँखें खोल दीं और वह देख
सका कि प्रभु का दूत हाथ में तलवार लिए
खड़ा है । वही बिलाम मुँह के बल गिर गया
32 प्रभु का दूत उस से बोला, ‘‘ अपनी गदही
को तुमने तीन बार क्यों मारा है ? तुम्हारा
सामना करने मैं खुद आया हूँ । तुम्हारी चाल
सीधी नहीं है । 33 मुझे देख कर यह गदही
तीन बार रास्ते से हट गयी । यदि यह ऐसा
नहीं करती तो तुम अब तक मर गए होते
34 फिर बिलाम प्रभु के दूत से बोला, ‘‘ मैंने
आज्ञा नहीं मानी, मुझे नहीं मालूम था कि मेरा
मुकाबला करने आप रास्ते में थे । इसलिए
यदि आप राज़ी नहीं है, तो मैं लौट जाता हूँ
। 35 प्रभु के दूत ने कहा, “इन आदमियों के
साथ तुम चले तो जाओ, लेकिन कहना वही,
जो मैं तुम्हें बताऊँगा । “तब उसने ऐसा ही
किया। 36 बिलाम के आने की खबर सुन कर
बालाक उस से भेंट करने आया 37 बालाक
बिलाम से बोला, ‘‘ बड़ी उम्मीद से मैंने तुम्हें
बुलाया था । तुम तुरन्त क्यों नहीं चले आए थे
? क्या मेरी औकात नहीं कि तुम्हें धन-दौलत
से भर दूँ ? 38 बिलाम बालाक से कहने लगा,
“देखो मैं आ तो गया हूँ लेकिन मैं बोलूँगा वही
जो प्रभु मुझे इज़ाज़त देंगे ।” 39 तब वे दोनों
किर्यथूसोत तक आए । 40 बालाक ने बैल
और भेड़-बकरियों को कुर्बान किया । वह
सब साथ के गर्वनरों को भेजा गया । 41 सुबह
सवेरे बालाक बिलाम को बाल देवता के
पूजा स्थानों पर ले गया । वहीं से वे लोग
सभी इस्राएलियों को देख सकते थे ।

**23** बिलाम, बालाक से बोला, “यहाँ
मेरे लिए सात वेदियाँ बनवाओ ।
इसी जगह पर सात बछड़े और सात मेंढ़े
तैयार करो । 2 बालाक ने वैसा ही किया ।

दोनों ने एक-एक वेदी पर एक बछड़ा और
एक मेंढा चढ़ाया 3 बिलाम ने बालाक से
कहा, “तुम अपने होमबलि के पास ही रहो,
मैं जा रहा हूँ । प्रभु मुझ से भेंट करने आ सकते
हैं । वह मुझे जो कुछ बताएँ मैं तुम्हें बताऊँगा
। 4 प्रभु ने बिलाम से जब भेंट की तब बिलाम
बोला, “मैंने सात वेदी बना कर हर एक पर
एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया है ।” 5 प्रभु
ने उसके मुँह में एक बात डाली और कहा
कि वह जाकर बालाक को बताए । 6 जब
वह उसके पास लौटा तो देखा कि वह सभी
मोआबी गवर्नरों सहित होमबलि के पास ही
खड़ा है । 7 तब बिलाम कहने लगा, “बालाक
ने मुझे आराम अर्थात् मोआब के राजा ने
मुझे पूर्व के पर्वतों से बुलवाया ‘आओ, मेरे
लिए याकूब को शाप दो, आओ इस्राएल को
धमकाओ । 8 लेकिन मैं उन लोगों को शाप
कैसे दूँ, जिन्हें प्रभु ने नहीं दिया । जिन्हें प्रभु ने
धमकी नहीं दी, उन्हें मैं कैसे दूँ ? 9 चट्टानों की
चोटी पर से वे मुझे दिखायी दिए हैं, वे ऐसे
लोग हैं, जो अकेले बसे हैं । वे दूसरे राष्ट्रों
से अलग गिने जाएँगे । 10 याकूब के मिट्टी
के कणों को गिन कौन सकता है या इस्राएल
की चौथाई की गिनती कौन कर सकता है
? अच्छा होता यदि मेरी मौत भले लोगों की
तरह होती 11 तब बालाक बिलाम से बोला,
“यह तुमने मेरे साथ क्या किया है ? मैंने तुम्हें
अपने दुश्मनों को शाप देने के लिए बुलवाया
था, लेकिन तुम तो आशीर्वाद ही दे रहे हो
।” 12 क्या प्रभु की कही हुयी बात मैं न मानूँ।
13 बालाक उस से बोला, ‘’ मेरे साथ दूसरी
जगह चलो, जहाँ से वे दिखायी देंगे । तुम
सभी को नहीं लेकिन बाहर वालों को देख
सकोगे, उन्हीं को शाप देना 14 फिर वह उसे
सोपीम नामक मैदान में पिसगा के कोने पर
ले गया । वहाँ सात वेदियाँ बना कर हर एक
पर बछड़ा और मेंढ़ा कुर्बान किया 15 बिलाम
बालाक से बोला,“अपने होमबलि के पास
यहीं खड़े रहो । मैं प्रभु से मुलाकात करने
जा रहा हूँ । 16 प्रभु की भेंट बिलाम से हुयी
और उन्होंने उसके मुँह में एक बात डाली
और कहा, ‘’ वापस बालाक के पास जाओ
।” 17 वह वापस लौट भी गया । वहाँ जाकर
उसने देखा कि वह मोआबी गवर्नरों सहित
अपने होमबलि के निकट खड़ा है। बालाक
ने सवाल किया कि प्रभु क्या चाहते हैं ।
18 बिलाम कहने लगा, “हे बालाक सिप्पोर
के बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दो । 19 प्रभु
इन्सान नहीं हैं कि झूठी बात करें और अपनी
इच्छा को बदल डालें । जो कुछ वह कह
चुके हैं, क्या करेंगे नहीं ? क्या अपनी कही
बात को वह पूरा नहीं करेंगे ? 20 मुझे तो
आदेश मिला है कि मैं आशीर्वाद दूँ । इसलिए
कि वह भलाई की बातों को ठहरा चुके हैं,
उसे बदला नहीं जा सकता 21 प्रभु ने इस्राएल
में अनर्थ नहीं देखा है और न ही बेइन्साफ़ी
देखी है। उन लोगों के साथ प्रभु हैं । 22 मिस्र
की गुलामी से प्रभु ही उनको बाहर लाए हैं
। उन लोगों की शक्ति बनैले सांड की तरह
है 23 इन लोगों के खिलाफ़ कोई मन्तर काम
न आएगा । उनके बारे में भावी कहने से भी
काम नहीं चलेगा । याकूब और इस्राएल के
बारे में अब ऐसा कहा जाएगा, कि प्रभु ने क्या
ही अजीब काम किया है । 24 सुनो, वह झुण्ड
शेरनी की तरह खड़ा होगा, जब तक वह
शिकार को खा न ले और मारे हुओं के खून
को पी न ले तब तक लौटेगा नहीं ।” 25 तब
बालाक बिलाम से बोला, न ही उन्हें शाप
देना और न आशीष । 26 बिलाम बालाक से
बोला, “क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि
जो कुछ प्रभु मुझे से कहेंगे, वही मैं करूँगा
27 बालाक, बिलाम से बोला, “चलो मैं तुम्हें

एक और जगह पर ले चलता हूँ हो सकता
है कि वहाँ से शाप देना प्रभु को मंज़ूर हो।”
28 तब बालाक बिलाम को पोर के सिरे पर
ले गया । वहाँ से यशीमोन देश दिखता है ।
29 बिलाम ने बालाक से कहा, ‘‘ यहाँ पर मेरे
लिए सात वेदियाँ बनाओ । सात बछड़े और
सात मेंढ़े भी तैयार रखना ।” 30 जैसा बिलाम
ने कहा था, बालाक ने हर एक वेदी पर एक
बछड़ा और एक मेंढ़ा रखा ।

**24** प्रभु के इस उद्देश्य को, कि इस्राएल
का भला हो बिलाम पहले की तरह
शकुन जानने नहीं गया । लेकिन उसने अपना
चेहरा जंगल की ओर कर लिया 2 बिलाम ने
वहाँ से इस्राएलियों के तमाम गोत्रों को रहते
हुए देखा । प्रभु का आत्मा उस पर उतरा।
3 वह कहने लगा, बोर के बेटे बिलाम का यह
कहना है, जिस आदमी की आँखों में ज्योति
नहीं थी वह कहता है, 4 प्रभु की बातों का
सुनने वाला जो मुँह के बल पड़े हुए खुली
आँखों से सर्वशक्तिमान को देख पाता है, वह
कहता है कि 5 हे याकूब तुम्हारे तम्बू, और हे
इस्राएल, तुम्हारे रहने की जगह कितनी खुश
कर देने वाली हैं। 6 वे घाटियों और नदी के
किनारे लगे बगीचों की तरह फैली हुई हैं ।
ये प्रभु के लगाए हुए अगर के वृक्ष और पानी
के किनारे के देवदार की तरह हैं । 7 उसके
घड़ों से पानी उमण्डता रहेगा । उस का बीज
तमाम पानी से भरे खेतों में पड़ेगा, उस का
राजा अगाग से बड़ा होगा, और उस का
राज्य बढ़ता जाएगा। 8 मिस्र से प्रभु ही उसे
निकाल ले आ रहे हैं, उसकी ताकत बनैले
सांड की तरह है वह द्रोही देशों के लोगों को
खा जाएगा। उनकी हड्डियों को वह टुकड़े-
टुकड़े करेगा और उन्हें अपने तीरों से भेदेगा।
9 वह डरा हुआ है और शेर या शेरनी की तरह
लेट गया है, उसे छेड़ कौन सकता है ? जो
कोई तुम्हें आशीर्वाद दें, उस का भी भला
हो, जो तुम्हें शाप दे, वह खुद शापित हो ।”
10 फिर बालाक बिलाम पर आग बबूला हो
गया । हाथ पर हाथ पटक कर उसने बिलाम
से कहा, “अपने दुश्मनों को शाप देने के लिए
मैंने तुम्हें बुलाया था लेकिन तीन बार तुमने
आशीष के शब्द कहे हैं ।” 11 इसलिए तुम
अब यहाँ से भाग लो । मैं तुम्हें काफी कुछ देने
वाला था । लेकिन अब यह संभव नहीं है ।”
12 बिलाम बालाक से बोला,” जो दूत तुमने
मेरे पास भेजे थे, क्या मैंने उन्हें बता नहीं दिया
था ? 13 कि चाहे बालाक अपने चाँदी - सोने
से भरा घर भी दे दे, फिर भी प्रभु के आदेश
के विरोध में अपने मन से भला- बुरा कुछ भी
नहीं कह सकता। 14 “सुनो, अपने लोगों के
पास मैं वापस जा रहा हूँ । लेकिन मैं पहले से
यह बता देना चाहता हूँ, कि आखिर के दिनों
में तुम्हारी प्रजा के साथ वे लोग कैसे पेश
आएँगे। 15 फिर वह अपनी गहरी बातें कहने
लगा, “बोर का बेटा बिलाम यह कहता हैः
जिस आदमी की आँखें बन्द थीं उसी के ये
शब्द हैं, 16 प्रभु की बातों को सुनने वाला
और परम प्रधान के ज्ञान का अनुभवी, जो
दण्डवत् की मुद्रा में पड़ा हुआ प्रभु से दर्शन
पाता है, वह यह कह रहा है 17 उन्हें मैं देखूँगा
ज़रूर, लेकिन अभी नहीं, मैं उन्हें टकटकी
लगा कर देखूँगा तो सही, लेकिन पास से
नहीं । एक तारा याकूब में से निकलेगा और
इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा, वह
मोआब की सरहद को बर्बाद कर डालेगा,
और दंगा करने वालों को गिरा डालेगा ।
18 तब एदोम और सेईर भी, जो उसके दुश्मन
हैं, दोनों उसके वश में हो जाएँगे और इस्राएल
बहादुरी दिखाएगा । 19 याकूब ही में से एक
राजा निकलेगा जो शासन करेगा, और नगर

में से बचे हुओं को भी बर्बाद कर डालेगा ।
20 फिर अमालेक पर अपनी दृष्टि करके उसने
अपने गंभीर वचन दिए, '' अमालेक राष्टों में
प्रथम तो थे, लेकिन अन्त में वे नाश हो जाएँगे
।" 21 केनियों पर निगाह डाल कर वह बोलने
लगा, "तुम्हारे रहने की जगह बहुत मज़बूत
है और बसेरा चट्टान पर है 22 फिर भी केन
उजड़ जाएगा। अन्त में असीरिया तुम्हें बन्दी
बना कर ले आएगा" 23 उसने फिर से अपनी
कठिन बातें कहनी शुरू कीं," हाय, जब प्रभु
ऐसा करेंगे, तब ज़िन्दा कौन बच पाएगा ?
24 फिर भी कित्तियों के पास से जहाज़ वाले
आकर असीरिया को और एबेर को भी पीड़ा
देंगे।" 25 तब बिलाम चल पड़ा और अपनी
जगह पर लौट गया। तभी बालाक भी रवाना
हो गया ।

**25** शित्तीम में इस्राएली रहा करते थे। वे
लोग मोआबी लड़कियों से सम्भोग
करने लगे । 2 उन महिलाओं ने अपने
देवताओं के यज्ञ में उन्हें निमन्त्रण दिया ।
वहाँ जाकर खाने के बाद देवताओं को पूजने
लगे । 3 इस तरह से इस्राएली बालपोर देवता
की आराधना करने लगे । इसलिए प्रभु का
गुस्सा भड़क उठा। 4 मूसा से प्रभु ने कहा,
"सब प्रधानों को पकड़ कर प्रभु के लिए धूप
में लटका दो, जिस से मेरा गुस्सा ठण्डा हो
जाए । 5 मूसा इस्राएलियों से बोला, जो जो
आदमी बालपोर की पूजा में शामिल हो गए
हैं, उन्हें मार डालो ।" 6 जब इस्राएली मिलाप
वाले तम्बू के पास रोना -धोना मचाए हुए थे,
तभी एक एक इस्राएली सभी लोगों के देखते
देखते एक मिद्यानी महिला को अपने साथ
अपने भाईयों के पास लाया । 7 यह देखते
ही एलीआजार का बेटा पीनहास, जो हारून
का पोता था, हाथ में बरछी लिए हुए उठा
। 8,9 उस इस्राएली पुरुष के तम्बू में जाने के
बाद वह भी अन्दर गया । उस महिला और
पुरुष दोनों ही के पेट में बरछी भेद दी ।
इस तरह इस्राएलियों में जो मरी फैल चुकी
थी, रूक गयी । उस दिन की मरी से चौबीस
हज़ार लोग मर गए । 10,11 तब मूसा से प्रभु ने
कहा, "हारून पुरोहित का पोता एलीआजार
का बेटा पीनहास, जिसे इस्राएलियों के बीच
मेरी तरह ईर्ष्या हुयी, 12 इसलिए तुम बता दो
कि मैं उस से शान्ति की वाचा बान्धता हूँ;
13 वह उसके लिए और बाद में उसके वंश के
लिए, हमेशा के पुरोहित पद की वाचा होगी
। ऐसा इसलिए क्योंकि उसे अपने प्रभु के
लिए जलन हुयी और उसने इस्राएलियों के
लिए प्रायश्चित्त किया।" 14 मिद्यानी महिला
के साथ मारे जाने वाले इस्राएली का नाम
जिम्री था वह साल का बेटा और शिमोनियों
में से अपने पूर्वजों के घराने का मुखिया
था। 15 मारी गयी मिद्यानी महिला का नाम
कोजबी था। उसके पिता का नाम सूर था।
वह मिद्यानियों में एक प्रधान था। 16,17 प्रभु ने
मूसा से कहा," मिद्यानियों को सताओ और
मारो। 18 क्योंकि पोर के बारे और कोजबी
के बारे में वे तुम को धोखा देकर सताते हैं।"
कोजबी एक मिद्यानी मुखिया की बेटी थी।
पोर के सम्बन्ध में मरी के दिन वह मारी गयी
थी ।

**26** प्रभु ने मूसा, और एलीआजार
जो हारून का बेटा था से कहा,
"इस्राएलियों में जो बीस साल या उस से
अधिक उम्र के हैं या ज़्यादा के हैं और युद्ध
में लड़ सकते हैं, उनके पितरों के घरानों
के अनुसार उन सब की गिनती करो ।"
3 इसलिए मूसा और एलीआजार पुरोहित ने
यरीहो के पास यर्दन नदी के किनारे मोआब

में सब को समझाया, 4 “बीस साल और
उस से अधिक उम्र के लोगों को गिन लो
।” इसी तरह का आदेश मिस्र से निकलते
समय मूसा को दिया गया था । 5 इस्राएल
के ज्येष्ठ पुत्र के बेटों के नाम ये थे हनोक,
जिस से हनोकियों के कुल की शुरूआत
हुयी । पहलू से पहलूईयों का आरम्भ हुआ।
6 हेस्रोन से हेस्त्रोनी बढ़ने लगे । कर्मी से
कर्मियों की पीढ़ी चली 7 रूबेन के कुल से
तैंतालीस हज़ार सात सौ तीस आदमी थे ।
8 पल्लू का बेटा एलीआब था। 9 एलीआब के
बेटे नमूएल, दातान और अबीराम थे । यह
दातान और अबीराम वही हैं जो सभा के
सदस्य थे । कोरह के लोगों के बलवे के
समय ये शामिल थे । 10 उस समय ढाई सौ
लोग भस्म हो गए थे और पृथ्वी में समा गए थे
। कोरह भी इन के साथ था, 11 लेकिन कोरह
के बेटे बच गए थे । 12 शिमोन के बेटे जिन से
उनके कुलों की शुरुआत हुयी ये थे : अर्थात्
नमूएल, जिस से नमूएल का कुल चला ।
यामीन से यामीनियों की शुरूआत हुयी थी ।
13 जेरह से जेरहियों का कुल चला। शाऊल से
शाऊल का कुल। 14 शिमोन वाले कुल यही
थे, इन में से बाईस हज़ार दो सो पुरुष गिने गए
। 15 गाद के बेटे जिन से उनके कुल निकले
वे ये थे : अर्थात् सपोन, जिस से सपोनियों के
कुल की शुरूआत हुयी । हाग्गी से हाग्गियों
की पीढ़ी चली और ओजनी से ओजनियों
का 16 एरी से एरियों का कुल 17 अरेली से
अरेलियों का 18 गाद के वंश के सब मिला
कर ये थे : इन में से साढ़े चालीस हज़ार पुरुष
गिने गए थे। 19 यहूदा के एर और ओनान
नाम से बेटे थे, लेकिन वे कनान में ही मर
गए थे। 20 यहूदा के जिन बेटों से उनके कुलों
का प्रारम्भ हुआ वे ये थे; अर्थात् शेला, जिस
से शेली निकले; पेरेस से पेरेसी निकले और
जेरह से जेरही। 21 पेरेस के बेटे ये थे : हेस्त्रोन,
जिस से हेस्त्रोनी हुए,हामूल से हामूली। 22 ये
यहूदियों के कुल थे; इन में से साढ़े छिहत्तर
हज़ार पुरुष गिने गए। 23 इस्साकार के पुत्र
जिन से उनके कुलों की शुरूआत हुयी ये थे
: अर्थात् तोला, जिन से तोला हुए और पुव्वा
जिस से पुव्वियों का कुल चला । 24 याशूब
से याशूबियों का कुल चलता रहा । शिम्रोन
से शिम्रोनी । 25 इस्साकारियों के ये ही कुल
थे : इनमें से चौंसठ हज़ार तीन सौ आदमी थे
। 26 जबूलून के बेटे जिन से उनके कुल शुरू
हुए वे ये थे : सेरेद से सेरेदी, एलोन से एलोनी
और यहलेल से यहलेली। 27 जबूलूनियों में
से साढ़े साठ हज़ार जन थे । 28 यूसुफ़ के
पुत्र से मनश्शे और एप्रैम थे। 29 मनश्शे के
पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिस से मकारियों
का कुल हुआ । माकीर से गिलाद पैदा हुआ;
उसे से गिलादी हुए। 30 गिलाद के बेटे ये थे;
अर्थात् ईएज़ेर-जिस से ईएज़ेरियों का कुल
शुरू हुआ। 31 हेलेक से हेलेकी, अस्त्रीएल
से अस्त्राएली, शेकेम से शेकेम, शमीदा से
शमीदी 32 हेपेर से हेपेरी। 33 हेपेर के बेटे
सलोफ़ाद के बेटे नहीं, सिर्फ बेटियाँ हुयीं।
इन बेटियों का नाम महला, नोआ, होग्ला,
मिल्का और तिर्सा है। 34 मनश्शे वाले कुल
ये ही थे; इन में से कुल मिला कर बावन हज़ार
सात सौ आदमी थे । 35 एप्रैम पुत्र से निकलने
वाले कुल शूतेलह, बेकेर और तहन थे। इन
के कुल भी चलते रहे। 36 शूतेलह का पुत्र
एरान था जिस से एरानी लोग हुए। 37 एप्रैमियों
के कुल ये ही थे : इन में से साढ़े बत्तीस
हज़ार पुरुष हुए। ये ही यूसुफ़ के वंश के लोग
थे। 38 बिन्यामीन के पुत्र से बेला, अशबेल,
अहीराम, शपूपान, हूपाम थे 39 शपूपाम से
शपूपामी, हूपाम से हूपामी कुल हुए। 40 बेला
के बेटे अर्द और नामान थे। 41 अपने कुलों

के मुताबिक बिन्यामीनी ये ही थे; इन में से
जो गिने गए उनकी संख्या पैंतालीस हज़ार
छः सौ पुरुष थे। 42 दान का बेटा जिस
से कुल निकला वह था शूहाम। शूहाम से
शूहामी बने। दान का कुल यही था। 43 जो
आदमी शूहामियों में से गिने गए वे चौंसठ
हज़ार चार सौ थे। 44 आशेर के बेटे जिन से
अलग- अलग कुल निकले वे थे : यिम्ना,
यिश्वी, बरीआ 45 बरीआ के बेटे थे : हेबेर,
महकीएल । 46 आशेर की बेटी सेरह थी ।
47 आशेरियों में से तिरपन हज़ार चार सौ पुरुष
थे । 48 नप्ताली के पुत्र थे : यहसेल, गूनी येसेर,
शिल्लेम। 49 येसेर से येसेरी, शिल्लेम से शिल्लेमी
बने । 50 इन के कुलों में से पैंतालीस हज़ार
चार सौ पुरुष गिने गए । 51 अपने कुलों के
अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे : अर्थात् छैः
लाख एक हज़ार सात सौ तीस। 52,53 मूसा से
प्रभु ने कहा, '' इतनी संख्या के अनुसार वह
ज़मीन इन्हें बाँट दी जाए। 54 जिस कुल में
लोग अधिक हैं इन्हें अधिक ज़मीन, जिस
में कम हों, इन्हें कम देना। 55 चिट्ठी डाल
कर देश का बँटवारा हो। इस्राएलियों के
पितरों, के गोत्रों का नाम जैसे जैसे निकलता
जाए, उन्हें अपना - अपना हिस्सा मिलता
जाए। 56 बँटवारा चिट्ठी डाल ही कर किया
जाए। 57 लेवियों में से जो गिने हुए वे हैं -
गेशानियों का कुल, कहातियों का कुल और
मरारियों का कुल। 58 लेवियों के कुल हैं -
लिब्नी, हेब्रोनी, महली, मूशी और कोरही।
कहात से अम्राम पैदा हुआ था । 59 अम्राम
की पत्नी थी, योकेबेद। वह लेवी के वंश
की थी और मिस्र में उस का जन्म हुआ था।
उसने अम्राम से हारून, मूसा और मरियम को
भी जन्म दिया। 60 हारून से नादाब, अबीहू
एलीआजार और ईतामार पैदा हुए । 61 प्रभु के
सामने ऊपरी आग ले जाने के समय नादाब
और अबीहू मर गए थे। 62 लेवियों में से उन
आदमियों को गिने जाने के बाद जो एक
महीने या उस से अधिक के थे, वे तेईस
हज़ार निकले। उन्हें इसलिए नहीं गिना गया
था क्योंकि देश का कोई भी हिस्सा उन्हें
नहीं दिया गया था । 63 मूसा और एलीआजार
पुरोहित जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो
के पास की यरदन नहीं के किनारे इस्राएलियों
को गिन लिया, उनके गिने इतने लोग ही
थे। 64 लेकिन जिन इस्राएलियों की मूसा और
हारून पुरोहित ने सीनै के जंगल में गिनती की
थी, उन में से एक भी आदमी इस समय के
गिने हुओं में से नहीं था। 65 क्योंकि प्रभु ने
उनके बारे में कहा था, "वे ज़रूर ही जंगल
में मरेंगे ।" इसलिए यपुन्ने के बेटे कालेब और
नून के बेटे यहोशू के अलावा उन में से एक
भी पुरुष नहीं बचा।

**27** यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के वंश के
कुलों में से सलोफ़ाद था। वह जेपेर
का बेटा और गिलाद का पोता और मनश्शे
के बेटे माकीर का परपोता था। उसकी
बेटियों के नाम महला, नेवा, होग्ला, मिल्का
और तिर्सा थे। वे सभी एक साथ आयीं
। 2 मूसा, एलीआजार पुरोहित, प्रधानों और
सब लोगों की मौजूदगी में मिलाप वाले तम्बू
के दरवाज़े पर खड़ी होकर वे कहने लगी,
3 "हमारे पिताजी की मौत जंगल ही में हो
गयी। कोरह के साथ जिन लोगों ने प्रभु के
खिलाफ़ बलवा किया था, उन में वह नहीं
थे। खुद के गुनाह के कारण वह मर गए।
जीवन भर उनके कोई बेटा उत्पन्न न हुआ ।
4 हम नहीं चाहते कि इस कारणवश उनका
नाम मिट जाए इसलिए हमारे चाचाओं के
बीच हमें ही कुछ ज़मीन दी जाए।" 5 मूसा
ने उनके इस निवेदन को स्वीकार कर लिया

6,7 मूसा से प्रभु ने कहा," सलोफ़ाद की,
बेटियों का कहना यही है । इसलिए उनके
चाचाओं के बीच उन्हें कुछ ज़मीन दे दो।
8 इस्राएलियों से कहो, यदि कोई व्यक्ति बिना
बेटे के मर जाता है, तो उस का हिस्सा
उसकी बेटी को देना । 9 यदि उसकी कोई
बेटी न हो, तो उसके भाईयों को उस का
हिस्सा देना । 10 यदि उसके भाई भी न हो,
तो उस का भाग उसके चाचाओं को दे
देना । 11 यदि उसके चाचा भी न हों, तो
उसके घराने में जो रिश्तेदार नज़दीक का हो,
उसको दे देना ।" 12 फिर प्रभु मूसा से बोले,
"अबारीम पहाड़ पर चढ़कर उस देश को
देख लो, जिसे मैंने इस्राएलियों को दिया है
।" 13 तुम जब उसे देख चुकोगे, तब अपने
भाई हारून की तरह मर जाओगे, 14 क्योंकि
सीन नामक जंगल में तुम दोनों ने मेरी बात
नहीं मानी जब सभी लोग मुझ से झगड़ा
कर रहे थे। तुम लोगों ने मुझे वहाँ सोते के
पास उनकी निगाह में पवित्र नहीं ठहराया।"[a]
15,16 मूसा ने प्रभु से कहा,"प्रभु सभी लोगों
की आत्माओं के प्रभु हैं। वह स्वयं इन लोगों
के ऊपर किसी पुरुष को रख दें, 17 वह
व्यक्ति उनके सामने आए-जाए । वही उनकी
निकालने वाला और बसाने वाला हो । इस से
प्रभु के लोग बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों
की तरह न होंगे ।" 18 मूसा से प्रभु ने कहा,
"तुम नून के बेटे यहोशू को लो और उस पर
हाथ रखो । उस व्यक्ति में मेरा आत्मा है।
19 एलीआजार पुरोहित और पूरी मण्डली के
सामने उसे खड़ा कर आदेश दो। 20 तुम्हारे
पास जो सम्मान[b] है उस में से कुछ यहोशू
को भी दो, ताकि सभी इस्राएली उसकी
सुनें और मानें। 21 यहोशू एलीआजार याजक[c]
के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआजार
उसके लिए प्रभु से अरीम की आज्ञा पूछे ।
सभी उसकी अनुमति ही से जाएँ और वापस
आएँ। 22 इस आज्ञा से मूसा ने यहोशू को
लिया और एलीआजार तथा जनता के सामने
खड़ा किया। 23 उसने यहोशू पर हाथ रखते
हुए आज्ञा दी जैसा प्रभु ने मूसा के माध्यम से
कहा था।

**28** फिर प्रभु ने मूसा से कहा,
"इस्राएलियों को बताओ, मेरा
चढ़ावा (खुशबू देने वाला हव्यरूपी खाना,
निश्चित समय पर चढ़ाने के लिए याद
रखना। 3 उसने कहा, "प्रभु को चढ़ाने के
लिए हर रोज़ नित्य होमबलि के लिए एक
साल के दो निर्दोष भेड़ के नर बच्चे हर दिन
चढ़ाना । 4 एक बच्चे को सुबह और दूसरे
को सूरज ढलने पर चढ़ाना । 5 एक भेड़ के
बच्चे के लिए एक चौथाई हीन कूट कर
बनाए गए तेल से सने हुए एपा के दसवें
अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना। 6 यह हर
दिन की होम बलि है, जिसे सीनै पहाड़ पर
प्रभु के लिए तृप्त करने वाला खुशबूदार
हव्य होने के लिए ठहराया गया था । 7 उस
का अर्थ प्रति एक भेड़ के बच्चे के साथ एक
चौथाई हीन हो । मदिरा के इस अर्घ को प्रभु
के लिए पवित्र स्थान में देना । 8 दूसरे बच्चे
को सूरज डूबने पर चढ़ाया जाए । अन्नबलि
और अर्घ सहित सुबह के होमबलि की तरह
उसे प्रभु को सन्तुष्ट करने वाला खुशबूदार
हवन करके चढ़ाना । 9 "विश्राम दिन को
दो निर्दोष भेड़ के एक साल के नर बच्चे
और अन्नबलि के लिए तेल से सना एपा का
दो दसवाँ अंश मैदा अर्घ के साथ चढ़ाना
। 10 हर दिन होमबलि और उसके अर्घ के
अलावा हर दिन विश्राम दिन का होमबलि

[a] **27.14** यह सोता, मरीबा है जो सीन जंगल के कादेश में है। [b] **27.20** महिमा [c] **27.21** पुरोहित

इसे ही रखा गया है 11 “फिर अपने महीनों
की शुरूआत में हर महीने होम बलि देना
अर्थात् दो बछड़े, एक मेंढ़ा और एक-एक
साल के निर्दोष भेड़ के सात पर बच्चे 12 एक
बछड़े के लिए तेल से सना हुआ एपा का
दसवाँ अंश मैदा, उसके मेंढ़े के साथ तेल
से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा
13 हर एक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से
सना हुआ एपा का दसवाँ भाग मैदा, उन
सब को अन्नबलि की तरह चढ़ाना। वह तृप्त
करने वाली खुशबू देने के लिए होमबलि
और हवन होगा। 14 उसके साथ अर्घ ये होने
चाहिएः बछड़े पीछे आधा हीन, मेंढ़े के
संग तिहाई हीन, भेड़ के बच्चे पीछे चौथाई
हीन दाखमधु दिया जाए । साल के सभी
महीनों में से हर एक माह का होमबलि यही
हो । 15 एक बकरा अपराधबलि की तरह
कुर्बान किया जाए। यह हर दिन होमबलि
ओर उसके अर्घ के अलावा चढ़ाया जाए ।
16 पहले महीने के चौदहवें दिन को प्रभु के
लिए फ़सह मनाया जाए । 17 उसी महीने के
पन्द्रहवें दिन को त्यौहार मनाया जाए । सात
दिन तक केवल अखमीरी रोटी का सेवन
हो । 18 पहले दिन पवित्र सभा की जाए ।
उस दिन मेहनत का काम न किया जाए ।
19 उस में तुम प्रभु के लिए एक हव्य यानि
कि होमबलि करना : इस में दो बछड़े, एक
मेंढ़ा एक एक साल के सात भेड़ के नर बच्चे
होः ये सभी निर्दोष हों । 20 उनका अन्नबलि
तेल से सने मैदे का हो । बछड़े पीछे एपा
का तीन दसवाँ भाग और मेंढ़े के साथ एपा
का दो दसवाँ अंश मैदा हो 21 सातों भेड़ के
बच्चों में से हर बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ
भाग चढ़ाना । 22 एक बकरा अपराधबलि
करके चढ़ाया जाए, जो कि प्रायश्चित्त के
लिए है । 23 सुबह का होमबलि जो हर दिन
होता है, उसके अलावा यह चढ़ाया जाए ।
24 इस तरह तुम उन सातों दिनों में भी हव्य
का खाना चढ़ाना, जो प्रभु को सुखदायक
सुगन्ध देने के लिए होगा । यह भी हर दिन
होमबलि और उसके अर्घ के अतिरिक्त
चढ़ाना । 25 सातवें दिन तुम पवित्र सभा
करना । मेहनत का काम उस दिन कोई न
करे। 26 पहली फ़सल के दिन में, जब तुम
अपनी कटनी के त्यौहार में प्रभु के लिए
नया अन्नबलि चढ़ाओ, तब पवित्र सभा भी
करना, और मेहनत के काम को न किया
जाए । 27 होमबलि चढ़ाना, इस से प्रभु को
तृप्त करने वाली खुशबू पहुँचेगी : अर्थात् दो
बछड़े , एक मेंढ़ा और एक-एक साल के
सात भेड़ के नर बच्चे । 28 अन्नबलि तेल से
सने मैदे का हो, मतलब यह कि एक बछड़े
के पीछे एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेंढ़े
के साथ एपा का दो दसवाँ भाग । 29 सातों
भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे
एपा का दसवाँ हिस्सा मैदा देना । 30 और
अपने प्रायश्चित्त के लिए एक बकरा भी
चढ़ाना। 31 ये सभी जानवर बिना दोष के हों
। हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि
और अर्घ के अलावा इसको भी चढ़ाना ।

**29** सातवें माह के पहले दिन तुम
आत्मिक सभा करना, उस दिन
मेहनत के काम से सब बचें । वह तुम्हारे
लिए खुशी का और नरसिंगा फूँकने का दिन
होगा । 2 होमबलि की सन्तोष देने वाली
सुगन्ध प्रभु के लिए हो : एक बछड़ा एक
मेंढा और एक-एक साल के सात बिना खोट
भेड़ के बच्चे 3 उनका अन्नबलि तेल से सने मैदे
का हो ; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का दो
दसवाँ हिस्सा 4 सातों भेड़ के बच्चों में से एक
एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ भाग मैदा

चढ़ाना 5 एक बकरा अपराधबलि के लिए
चढ़ाया जाए । 6 सब से अधिक नए चाँद
का होमबलि और अन्नबलि और प्रतिदिन
होमबलि और उस का अन्नबलि और उन
सभी के अर्थ भी जो उनके नियम के अनुसार
सुख देने वाली खुशबू देने के लिए प्रभु का
हव्य करके चढ़ाना 7 सातवें महीने के दसवें
दिन को तुम्हारी विशेष सभा की जाए । अपने
आप को वश में करना, मेहनत मत करना ।
8 प्रभु के लिए दिल बहला देने वाली सुगन्ध
का होमबलि : एक बछड़ा, एक मेंढ़ा और
एक एक साल के भेड़ के नर बच्चों को चढ़ाना
। उन में किसी तरह की कमी न हो । 9 उनका
अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो । मतलब
यह कि बछड़े के साथ एपा का दो दसवाँ
भाग । 10 सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक
बच्चे के लिए एपा का दसवाँ भाग मैदा चढ़ाना
11 अपराधबलि के लिए एक बकरा कुर्बान
करना ये सभी प्रायश्चित्त के अपराधबलि
और हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि
के और उन सभों के अर्घों के अतिरिक्त चढ़ाए
जाएँ । 12 “सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन
को तुम्हारी पवित्र सभा की जाए । उस में
कोई मेहनत न करे । सात दिन तक प्रभु का
त्यौहार मनाया जाए । 13 होमबलि प्रभु को
प्रसन्न करने के लिए हव्य करके देना : तेरह
बछड़े, दो मेंढ़े और एक एक के चौदह भेड़
के नर बच्चे जिन में कोई कमी न हों । 14 उनका
अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो, अर्थात्
तेरह बछड़ों में से एक एक बछड़े के लिए
एपा का तीन दसवाँ भाग और दोनों मेंढ़ों में
से एक-एक मेंढ़े के पीछे एपा का दो दसवाँ
भाग, 15 चौदह भेड़ के बच्चों में से एक बच्चे
के पीछे एपा का दसवाँ हिस्सा मैदा चढ़ाना
16 अपराधबलि के लिए एक बकरा चढ़ाना
हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और
अर्घ को छोड़कर चढ़ाए जाएँ। 17 “दूसरे दिन
बारह बछड़े और दो मेंढ़े और एक-एक साल
के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना।
18 बछड़ों, मेंढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ
उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी संख्या के
मुताबिक और नियम के मुताबिक चढ़ाए
जाएँ 19 एक बकरा अपराधबलि के लिए
चढ़ाया जाए । हर दिन होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाने चाहिये
। 20 फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेंढ़े,
एक-एक साल के चौदह निर्दोष भेड़ के नर
बच्चे चढ़ाना। 21 बछड़ों, मेंढ़ों भेड़ के बच्चों
के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ उनकी
गिनती के अनुसार और विधि के अनुसार
चढ़ाना 22 अपराधबलि के लिए एक बकरा
भी चढ़ाया जाए । प्रत्येक दिन होमबलि और
उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए
जाने चाहिए 23 फिर चौथे दिन दस बछड़े, दो
मेंढ़े, एक एक साल के चौदह निर्दोष भेड़
के नर बच्चे चढ़ाना। 24 बछड़ों, मेंढ़ो और
भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और
अर्घ उनकी गिनती के अनुसार और निर्देष के
आधार पर कुर्बान करना। 25 अपराधबलि
के लिए एक बकरा चढ़ाना हर दिन होमबलि
और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा
चढ़ाएँ । 26 पाँचवे दिन नौ बछड़े, दो मेंढ़े और
एक एक साल के चौदह बिना किसी दोष के
भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना । 27 बछड़ों, मेंढ़ो और
भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और
अर्घ उनकी गिनती और नियम के मुताबिक
करना। 28 अपराधबलि के लिए एक बकरा
कुर्बान हो । हर रोज़ होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ
। 29 छठवें दिन आठ बछड़े, दो मेंढ़े, एक
साल के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे कुर्बान
करना । 30 बछड़ों, मेंढ़ों, भेड़ के बच्चों के

साथ उनके अन्नबलि और अर्घ उनकी गणना के अनुसार और तरीके से अर्पण करना । 31 अपराधबलि के लिए बकरा कुर्बान करना । हर दिन होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ। 32 “फिर सातवें दिन सात बछड़े, दो मेंढ़े, एक एक साल के चौदह बिना खोट के भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। 33 और बछड़ों, मेंढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि, अर्घ उनकी गिनती के अनुसार नियम मानते हुए चढ़ाना । 34 अपराधबलि के लिए एक बकरा चढ़ाना ये हर दिन होमबलि और अन्नबलि और अर्घ के अलावा हो । 35 फिर आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा होगी । उस में परिश्रम का काम कोई नहीं करेगा । 36 उस में होमबलि प्रभु को खुश करने के लिए किया जाए । वह एक बछड़े, एक मेंढ़े, एक-एक साल के सात गिद्ध, भेड़ के नर बच्चों का हो, 37 बछड़े, मेंढ़े और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ उनकी गिनती के अनुसार और विधि के हिसाब से चढ़ाना । 38 अपराधबलि के लिए बकरा भी कुर्बान करना हर दिन होमबलि -अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ । 39 लोग अपनी मन्नतों और मन से लायी गयी बलियों के साथ साथ निश्चित समयों पर होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि प्रभु के लिए लाएँ । 40 यह सब आदेश प्रभु ने मूसा को दिएऔर उसने इस्राएलियों को सुना दिया।

**30** मूसा ने इस्राएल के सभी कबीलों के प्रधानों को बुलाकर कहा,“प्रभु का आदेश यह है, 2 ‘यदि एक आदमी कुछ प्रण करता है, तो उसे अपने वचन को पूरा करना चाहिए।” 3 इसी तरह यदि एक जवान महिला जो अपने पिता के घर में रह रही है कुछ प्रतिज्ञा करती है, तो उसे भी अपनी कही हुयी बात को पूरा करना चाहिए। 4 उसके पिता के कामों में उसके शब्द पड़ने के बाद भी यदि पिता कुछ भी नहीं कहता है, तो उस महिला को अपने कहे शब्दों के अनुसार करना ही चाहिए। 5 लेकिन उसकी ही मन्नत को यदि पिता स्वीकार नहीं करता, तो वह महिला कसूरवार नहीं ठहरेगी। पिता की बात मानने की वजह से प्रभु भी उसे माफ़ी दे देंगे। 6 यदि विवाह के बाद महिला कोई प्रतिज्ञा करती है, 7 और पति उसे सुन लेता है, लेकिन कुछ कहता नहीं है, तो ठीक है। 8 लेकिन उतावली से की गयी प्रतिज्ञा को यदि उस का पति सुन कर रद्द कर देता है, तो महिला को प्रभु से माफ़ी मिलेगी। 9 लेकिन विधवा और तलाकशुदा महिला जो भी वचन दे देती है, उसे पूरा करना चाहिए। 10 यदि उस महिला ने अपने पति के घर में रहते हुए कुछ प्रण किया है। 11 और उसके पति के कान तक बात नहीं पहुँची है और उसके पति को कोई शिकायत नहीं है, तो कोई बात नहीं, वह अपना वचन पूरा कर सकती है। 12 किन्तु यदि उस का पति जिस दिन उसे सुनता है और उसे रद्द कर देता है, तो वह रद्द ही रहे और प्रभु उसे क्षमा करेंगे। 13 उस का पति उसके वचन में हाँ में हाँ मिला सकता है या उसे रद्द कर सकता है। 14 लेकिन यदि उस का पति कोई टीका-टिप्पणी नहीं करता, तो इस का मतलब होगा कि वह अपनी पत्नी से सहमत है। 15 लेकिन यदि समय बीतने के बाद वह रद्द करता है तो उसकी सज़ा उसे ही मिलेगी। 16 ये ही वे निर्देष हैं जो पति -पत्नी और पिता के घर पर रहने वाली कुँवारी बेटी के बारे में हैं।

**31** मूसा से प्रभु ने कहा, ‘‘ मिद्यानियों
से इस्राएलियों का बदला लो। 3 तब
मूसा ने इस्राएलियों से कहा, “पुरुषों को युद्ध
के लिए तैयार करो, ताकि वे मिद्यानियों से
युद्ध करें। 4 सभी गोत्रों में से एक-एक हज़ार,
पुरुषों को चुनो। 5 तब ऐसा किया गया और
हथियारों से लैस बारह हज़ार सैनिक तैयार
हो गए। 6 हर एक गोत्र में से उन हज़ार हज़ार
आदमियों को और एलीआजार पुरोहित के
बेटे पीनहास को युद्ध के लिए भेजा गया।
उसके हाथ में पवित्रस्थान के बर्तन और
तुरहियाँ थी जो फूँकी जाती थीं। 7 प्रभु की
आज्ञा से सैनिकों ने काफ़ी लोगों को हताहत
किया। 8 उन्होंने एबी, रेकेम, सूर, हूर और
रेबा नाम के पाँच मिद्यानी राजाओं को भी
मार डाला। उन्होंने बोर के बेटे बिलाम को
भी तलवार से मार डाला। 9 इस्राएलियों ने
मिद्यानी महिलाओं को बाल बच्चों सहित
हिरासत में ले लिया। उनके गाय-बैल, भेड़
बकरी और दौलत को ज़ब्त कर लिया।
10 उनकी रहने की बस्तियों और छावनियों
को भी उन्होंने फूँक डाला। 11 तब इन्सान,
जानवर, बन्दियों और ज़ब्त किए सामान
को लेकर 12 यरीहो के पास यरदन नदी के
किनारे मोआब के अराबा में छावनी के पास
मूसा और एलीआजार पुरोहित और सभी
छावनी इस्राएलियों के पास आए। 13 इसके
पश्चात् मूसा, एलीआजार और मण्डली के
मुख्य लोग छावनी के बाहर उनका स्वागत
करने आए। 14 मूसा सहस्रपति-शतपति आदि
सेनापतियों से जो लड़ाई करके आए थे,
गुस्से में कहने लगा, 15 क्या सब महिलाओं
को तुमने ज़िन्दा छोड़ दिया ? 16 देखो,
बिलाम की सलाह से, पोर के बारे में
इस्राएलियों से प्रभु का विश्वासघात इन्हीं
महिलाओं ने कराया था। इसीलिए फिर वहाँ
मरी फैली थी। 17 इसलिए अब बाल बच्चों में
से प्रत्येक लड़के को और जितनी महिलाओं
ने आदमियों का मुँह देखा हो, उन सभी को
मार डालो। 18 जिन लड़कियों ने आदमियों
का मुँह नहीं देखा है, उन सभी को तुम अपने
लिए ज़िन्दा रखना। 19 सात दिन तक तुम
बाहर रहना और तुम में से जितने लोगों ने
किसी को घात किया और जितनों ने किसी
मरे हुए को छुआ हो, वे सभी अपने-अपने
बन्दियों सहित तीसरे और सातवें दिनों में
अपने अपने गुनाह छुड़ा कर पवित्र करें।
20 सभी कपड़ों, चमड़े की बनी चीजों, बकरी
के बालों की और लकड़ी की बनी सभी
चीजों को शुद्ध कर लो ।” 21 तब एलीआज़र
ने फ़ौज के उन आदमियों से जो युद्ध में गए
थे कहा, “जो आदेश दिया गया था वह
यह है : 22 सोना चाँदी, पीतल, लोहा, टिन
और सीसा 23 आग में जो डालने पर ठहरे,
उसे डालो वह साफ़ हो जाएगा। वह गंदगी
को साफ़ करने वाले पानी से युद्ध किया
जाए। लेकिन जो कुछ आग में न ठहरे उसे
पानी में डुबाओ। 24 सातवें दिन अपने कपड़ों
को धोकर शुद्ध होकर छावनी में आना।
25,26 फिर प्रभु ने मूसा से कहा, “एलीआज़र
और मण्डली के पितरों के परिवारों के मुख्य
आदमियों को संग लेकर लूटे हुए मनुष्यों
और जानवरों की गिनती कर लेना 27 तब जो
सैनिक युद्ध करने गए थे, उन्हें आधा-आधा
करके एक हिस्सा और दूसरा हिस्सा लोगों
को दे। 28 फिर जो सैनिक युद्ध में लड़ने गए
थे, उनके आधे में से प्रभु के लिए, चाहे
इन्सान हो या जानवर 29 पाँच सौ के पीछे
एक को टॅक्स मानकर ले ले। इसे प्रभु को भेंट
चढ़ाकर याजक को दे दे। 30 इस्राएलियों के
आधे में से क्या इन्सान क्या जानवर, पचास
पीछे एक लेकर प्रभु के निवास की रखवाली

करने वाले लेवियों को दे। 31 ऐसा किया भी
गया 32 जो चीजें फ़ौज के पुरुषों ने अपने
लिए लूट ली थीं, उन से ज़्यादा की लूट यह
थीः छै लाख पचहत्तर हज़ार भेड़ बकरियाँ,
33 बहत्तर हज़ार गाय-बैल, 34 इकसठ हज़ार
गधे 35 ऐसे पुरुष जिन्होंने महिलाओं का मुँह
तक नहीं देखा था उनकी संख्या बत्तीस हज़ार
थी। 36 जो लड़ाई पर गए थे 37 पौने सात सौ
भेड़ बकरियाँ प्रभु का टॅक्स ठहरी। 38 गाय
बैल छत्तीस हज़ार, जिन में से बहत्तर प्रभु
का टॅक्स। 39 साढ़े तीस हज़ार गदहों में से
इकसठ टॅक्स 40 सोलह हज़ार मनुष्य, जिस
में से बत्तीस प्राणी कर ठहरे 41 यह कर प्रभु
के लिए दान था। इसे मूसा ने एलीआजार
को दिया 42 इस्राएलियों का आधा 43 तीन
लाख साढ़े सैंतीस हज़ार भेड़ बकरियाँ,
44 छत्तीस हज़ार गाय-बैल 45 साढ़े तीस ज़ार
गदहे 46 सोलह हज़ार मनुष्य 47 इस आधे में
से जिसे मूसा ने युद्ध करने वाले आदमियों के
पास से अलग किया था, प्रभु के आदेश के
मुताबिक मूसा ने मनुष्य और जानवर, पचास
पीछे एक लेकर रखवाली करने वाले लेवियों
को दिया। 48 सेना में हज़ारों के ऊपर जिन्हें
नियुक्त किया गया था, मूसा से कहने लगे
49 जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी गिनती
की गयी है और कोई कम नहीं है। 50 इसलिए
बाजूबन्द, कड़े, मुंदरिया, बालियाँ, सोने के
गहने जिन को मिले हैं, उन्हें हम प्रभु के
सामने अपने प्राणों के लिए प्रायश्चित्त करने
को भेंट दें। 51 तब मूसा और एलीआजार ने
उन से वे आभूषण ले लिए, 52 सहस्त्रपति
और शतपति जो भेंट को सोना, प्रभु को दे
चुके थे वह सब सोलह हज़ार साढ़े सात
सो शेकेल था। 53 योद्धाओं ने अपने अपने
लिए लूट ले ली थी। 54 यह सोना मूसा और
एलीआजार याजक[a] ने सहस्त्रपतियों और
शतपतियों से लेकर मिलाप वाले तम्बू में
पहुँचा दिया। यह इसलिए कि इस्राएलियों के
लिए प्रभु के सामने याद दिलाने वाली चीज़
ठहरे।

**32** रूबेनियों और गादियों के पास बहुत
से जानवर थे। उन्होंने यह पाया कि
याजेर और गिलाद देश अच्छा चरागाह होने
की वजह से उपयोगी है 2 तब मूसा और
एलीआजार ने प्रधानों के पास आकर कहा,
3 "अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन,
एलाले, सबाम, नबो और बोन नगर हमारे
पशुओं के लिए बिल्कुल सही जगह है। 4 इन
पर हमारा ही राज्य है 5 वे बोले, "यदि तुम
कहो तो ये देश हमारी अपनी ज़मीन हो जाए
और हमें यरदन पार आना न पड़े। 6 मूसा ने
गादियों और रूबेनियों से कहा, "जब तुम्हारे
भाई लड़ाई पर जाएँगे, तब क्या तुम यहाँ
हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहोगे ? 7 अब
तुम इस्राएलियों के मन को कमज़ोर क्यों कर
रहे हो कि वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में दाखिल
हों। 8 मैंने तुम्हारे पूर्वजों को जब कादेशबर्ने
से कनान देश देखने के लिए भेजा था, तब
उन्होंने भी ऐसा ही किया था। 9 एशकोल
घाटी तक पहुँचकर देश को देखने पर उन्होंने
भी इन्कार कर दिया था। 10 इसलिए गुस्से में
आकर प्रभु ने प्रण कर लिया। 11 "इस में कोई
सन्देह नहीं कि जो लोग मिस्र की गुलामी से
निकल आए है और बीस या उस में अधिक
उम्र के हैं, वे उस देश को न देख सकेंगे।
हालांकि इस भूमि को देने का वायदा मैंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से किया था।
लेकिन ये मिस्र से निकले लोग पूरे मन से मेरी
इच्छा को पूरा न कर सके। 12 यपुन्ने कनजी

[a] **3.54** पुरोहित

का बेटा कालेब और नून का बेटा यदोष पूरी तरह से मेरे प्रति आज्ञाकारी रहे हे, ये इस नए देश को देख सकेंगे. 13 इसलिए प्रभु का क्रोध इस्राएलियों पर भड़क गया और जब तक उस पीढ़ी के लोग खत्म न हो गए, जिन्होंने प्रभु के लिए बुरा किया था, तब तक यानि कि चालीस साल तक वे लोग जंगल में मारे-मारे फिरते रहे। 14 हाँ सुना, तुम लोग उन गुनाहगारों की सन्तान होकर इसीलिए अपने पूर्वजों की जगह पर प्रकट हुए हो, कि इस्राएल के खिलाफ़ प्रभु के भड़के हुए गुस्से को और भी भड़काओ। 15 यदि तुम भी उनकी इच्छा पर न चले तो वह हम सभी को जंगल में छोड़ देंगे, इस तरह से तुम सभी बर्बाद हो जाओगे। 16 तब वे मूसा से बोले," अपने जानवरों के लिए हम बसेरा बनाने के साथ अपने बाल बच्चों के लिए नगर बसाएँगे। 17 लेकिन खुद इस्राएलियों के आगे-आगे हथियार बन्द तब तक चलते जाएँगे जब तक उनको उनके स्थान में न पहुँचा दे, लेकिन हमारे बाल-बच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़ वाले नगरों में रहेंगे। 18 लेकिन जब तक इस्राएली अपने अपने हिस्सों के अधिकारी न हो जाएँ तब तक हम अपने घरों को वापस न जाएँगे। 19 उनके साथ हम यरदन पार या कहीं आगे अपना हिस्सा न लेंगे, क्योंकि हमारा हिस्सा यरदन के इस पार पूर्व की तरफ़ मिला है।" 20 तब मूसा उन से बोला, "यदि तुम ऐसा करो ,मतलब यह कि यदि तुम प्रभु के आगे - आगे लड़ाई करने के हथियारों से लैस हो, 21 और हर एक हथियारों से लैस यरदन के पार तब तक चले, जब तक प्रभु अपने आगे से अपने दुश्मनों को न निकाले. 22 और देश प्रभु के अधिकार में न जाए, तो उसके पीछे तुम यहाँ लौटोगे, और प्रभु के और इस्राएल के बारे में निरपराध ठहरोगे। 23 यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो प्रभु के खिलाफ़ गुनाहगार ठहरोगे और इसका भुगतान तुम्हें ही करना पड़ेगा। 24 अपने परिवारों के लिए नगर बसाओ। अपनी भेड़ों का निर्माण करो। जैसा तुमने कहा है वैसा करना भी 25 तब गादी और रूबेनी बोले, "हम ज़रूर ऐसा करेंगे।" 26 हमारे परिवार और मवेशी यही गिलाद के नगरों में रहेंगे। 27 लेकिन अपने प्रभु के कहने के अनुसार आपके दास सब के सब युद्ध के लिए हथियार बन्द प्रभु के आगे लड़ने को पार जाएँगे। 28 तब मूसा ने एलीआजार यहोशू और इस्राएली गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य आदमियों को यह आदेश दिया, 29 कि यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युद्ध के लिए हथियारों से लैस तुम्हारे साथ यरदन पार जाएँ और देश तुम्हारे अधिकार में आ जाए तो गिलाद उनकी अपनी भूमि होने के लिए उन्हें दे देना। 30 लेकिन यदि वे तुम्हारे साथ हथियारों से लैस पार न जाएँ तो उनकी अपनी भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरो।" 31 तब गादी और रूबेनी बोले, जैसा प्रभु ने तुम्हारे दासों से कहलाया है, वैसा ही हम करेंगे। 32 हम हथियारों से लैस होकर प्रभु के आगे आगे उस पर कनान देश में जाएँगे, लेकिन हमारी अपनी ज़मीन यरदन के इसी पार हो। 33 तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को और यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के आधे गोत्रियों को ऍमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश, नगरों और उनके आस पास की ज़मीन सहित दे दिया। 34 तब गादियों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर 35 अत्रौत, शोपान, याजेर, योगबहा, 36 बेतनिम्रा और बेथारान नामक नगरों को मज़बूत किया। वहाँ जानवरों के

लिए शरण स्थान भी बनाया। 37 रूबेनियों ने
हेशबोन, एलाले, और किर्यातैम को, 38 फिर
नबो और बलमोन के नाम बदल कर उनको
और सिबमा को मज़बूत किया। उन्होंने अपने
मज़बूत बनाए नगरों के दूसरे और नाम भी
रखे। 39 मनश्शे के बेटे माकीर के वंश वालों
ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया जो
उमरी उस में रहा करते थे, उनको निकाल भी
दिया। 40 तब मूसा ने मनश्शे के बेटे माकीर
के वंश को गिलाद दे दिया, और वे उस
में रहने लगे। 41 मनश्श्येई याईर ने जाकर
गिलाद की तमाम बस्तियाँ ले ली। उनके नाम
हव्वोत्याईर रखे। 42 वह नोबह गया और
वहाँ के गाँवों सहित कनात को ले लिया।
उस का नाम उसने नोबह रखा।

**33** जब से इस्राएली मूसा और हारून
के मार्गदर्शन में दल बना कर मिस्र
की गुलामी से निकले, तब से ये पड़ाव
उन्होंने डाले। 2 प्रभु से निर्देष पाकर मूसा ने
उनके रवाना होने और पड़ावों को डालने
के मुताबिक लिख डाला। 3 पहले महीने
के पन्द्रहवें दिन को वे रामसेस से चल
पड़े। फ़सह के दूसरे दिन इस्राएली लोग
मिस्रियों के सामने ही निडरता से निकल
गए थे। 4 उस समय जब प्रभु द्वारा मारे गए
पहलौठों को, मिस्री लोग मिट्टी रहे थे, तथी
उनके देवताओं को भी प्रभु ने सज़ा दी थी।
5 इस्राएली रामसेस से निकले और सुक्कोत
में डेरे डाले। 6 सुक्कोत से निकल कर एताम
में, जो जंगल के छोर पर है, तम्बू लगाए।
7 एताम से निकल कर वे पीहहीरोत की
तरफ़ मुड़ गए, जो बालसपोन के सामने है।
वही मिगदोल के सामने उन्होंने तम्बू लगाए।
8 तब वे पीहहीरोत के सामने से निकले और
समुन्दर से होते हुए जंगल में गए। उन्होंने
एताम नामक जंगल का रास्ता तय करते
हुए मारा पहुँचे। 9 मारा से निकल कर वे
एलीम पहुँचे। एलीम में पानी के बारह सोते
और खजूर के सत्तर पेड़ थे। वही उन्होंने
अपने तम्बू गाड़ दिए। 10 एलीम से निकल
कर वे लाल समुद्र के किनारे आए और वही
डेरे डाले। 11 लाल समुद्र से रवाना होने के
बाद सीन नाम जंगल में तम्बू खड़े किए।
12 सीन से निकलने के बाद उनका ठिकाना
था दोपका। 13 दोपका से निकलने के बाद
आलूश में डेरा डाला। 14 आलूश से विदा
हुए तो अगला पड़ाव रफ़ीदीम में था, जहाँ
पानी नहीं था। 15 रफ़ीदीम से निकलने के
बाद सीनै के जंगल में डेरे डाले। 16 सीनै
के जंगल से निकल कर किब्रोथत्तावा में
डेरा किया। 17 किब्रोथत्तावा से निकल कर
हसेरोत में पड़ाव डाला। 18 हसेरोत से निकल
करने के बाद रित्मा में डेरे डाले। 19 रित्मा
से निकले तो रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किए।
20 रिम्मोनपेरेस से निकल कर लिब्ना में डेरे
डाले। 21 लिब्ना से निकल कर रिस्सा में डेरे
खड़े किए। 22 रिस्सा से निकल किया तो
कहलाता में डेरे खड़े किए। 23 कहेलाता से
रवाना हुए तो शेपेर पहाड़ के पास ठहरे।
24 शेपेर से जाने के बाद हरादा में रूके।
25 हरादा के बाद मखेलोत। 26 मखेलोत के
बाद तहत। 27 तहत के पश्चात् तेरह। 28 तेरह
से निकले तो मित्का पहुँचे। 29 मित्का से गए
तो हशमोना में डेरे खड़े किए। 30 हशमोना
से निकलने के बाद मोसेरोत । 31 मोसेरोत
से निकल करके यकानियों के मध्य रहे।
32 यकानियों से निकले तो होग्गिदगाद पहुँचे।
33 होग्गिदगाद से निकलने के बाद योतबाता
में रूके। 34 योतबाता से निकल गए तो
अर्बाना में आ रूके। 35 अब्राना से निकलने
के पश्चात् एश्योनगेबेर में । 36 एश्योनगेबेर के

बाद कादेश । 37 कादेश के बाद होर पहाड़
के नज़दीक 38 तब तक मिस्र की गुलामी से
छूटे इस्राएलियों को चालीस साल हो गए।
वहीं पाँचवे महीने के पहले दिन को प्रभु से
आदेश पाकर हारून पहाड़ पर चढ़ा और
वहीं मर भी गया, 39 उसकी उम्र उस समय
एक सौ तेईस साल थी। 40 कनान के दक्षिण
भाग में उस समय अरात का कनानी राजा रहा
करता था। इस्राएलियों के वहाँ पहुँचने का
समाचार उसे मिला। 41 इस्राएली होर पहाड़
से निकल कर सलमोना आए। 42 सलमोना से
निकले तो पूर्नान में तम्बू खड़े किए। 43 पूनोन
से गए तो ओबोस में रूके। 44 ओबोस के
बाद इजयाबरीम में जो मोआब की सरहद
पर है, डेरे डाल दिए। जहाँ से निकल कर
उन्होंने दीबोनगाद में पैर रखे। 45 और वे लिम
से निकल गए और दिबोन- गाद में जाकर
डेरा किया। 46 दीबोनगाद के छोड़ने के बाद
अल्मोनदिबलातैम 47 अल्मोनदिबलातैम से
निकल कर उन्होंने अबारीम नामक पहाड़ों
में नबो के सामने पड़ाव किया। 48 अबारीम
पहाड़ों से निकल कर मोआब के अराबा में,
यरीहो के पास यर्दन नदी के किनारे वे रहे।
49 उन्होंने मोआब के अराबा में बेतयशीमोत
से लेकर आबेलशित्तीम तक यर्दन के किनारे
पड़ाव किया। 50 फिर मोआब के अराबा में
यरीहो के पास की यर्दन नदी के किनारे, प्रभु
ने मूसा से कहा, 51 "इस्राएलियों को बताओ
कि जब तुम यर्दन नदी पार करके कनान
देश पहुँचो, 52 तब उसके रहने वालों को
उनके देश से निकाल देना । उनके नक्काशीदार
पत्थरों को और ढली मूर्तियों को बर्बाद कर
डालना। उनकी पूजा की जगहों को ढा देना
53 उस देश को अपने वश में करके वहीं
रहना। तुम को वह देश मैंने दिया है। 54 चिट्ठी
डाल कर अपने कुलों के अनुसार उसे बाँट
लेना। जिस कुल में लोग ज़्यादा हैं उन्हें ज़्यादा
ज़मीन और जो थोड़े वाले हैं, उन्हें कम।
55 लेकिन यदि तुम वहाँ के रहने वालों को
खदेड़ोगे नहीं तो वे तुम्हारी आँखों में काँटे
और पांजरों में कीलों की तरह होंगे। वे तुम्हें
परेशानी में डाल देंगे। 56 और जैसा बर्ताव उन
से करने का मैंने निश्चित किया है, तुम ही से
करूँगा।

**34** मूसा से प्रभु बोले,"यह आदेश
इस्राएलियों को दोः जो देश तुम्हारा
होने जा रहा है, वह चारों ओर की सीमा तक
का कनान देश है। 3 इसलिए कनान पहुँचने
पर दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से लेकर
एदोम देश के किनारे होता हुआ और तुम्हारी
दक्षिणी सरहद खारे ताल के सिरे पर शुरू
होकर पश्चिम की ओर चले । 4 वहाँ से तुम्हारी
सीमा अक्रब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिण
की ओर पहुँचकर मुड़े और सीन तक आए
फिर कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले
और हसरद्दार तक बढ़ कर अस्मोन तक
पहुँचे। 5 फिर वह सरहद अस्मोन से घूम कर
मिस्र के नाले तक पहुँचे और उस का अन्त
समुद्र की तह हो। 6 "फिर पश्चिमी सीमा तक
महासमुद्र तुम्हारी पश्चिमी सीमा ठहरे। 7 यही
तुम्हारी उत्तरी सीमा हो, अर्थात् तुम महासमुद्र
से लेकर होर पहाड़ तक सीमा बान्धना।
8 होर पहाड़ से हमात की घाटी तक सीमा
रखना, वह सदाद तक हो। 9 वह जिप्रोन तक
पहुँचकर हसरेनान पर निकले। उत्तरी सीमा
तुम्हारी यही होगी। 10 फिर अपनी पूर्वी सीमा
हसरेनान से शपाम तक रखना। 11 वह शपाम
से रिबला और नीचे उतरते उतरते किन्नेरेत
नामक तालाब के पूर्व से लगा रहा। 12 वह
सीमा यर्दन नदी तक उतर कर खारे तालाब
के किनारे निकले। तुम्हारे देश की चारों

सीमाएँ यही होंगी। 13 तब मूसा ने इस्राएलियों
से कहा, तुम जिस देश के हकदार चिट्ठी
डालने से होंगे, उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को
देना होगा। 14 लेकिन रूबेनियों और गादियों
के गोत्र अपने अपने पितरों के कुलों के
अनुसार अपना-अपना हिस्सा ले चुके हैं।
मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों को भी उनका
भाग मिल चुका है। 15 उन ढाई गोत्रों के
लोग यरीहो के पास यरदन के पार पूरब
की ओर अपना-अपना हिस्सा पा चुके हैं।
16,17 मूसा से प्रभु बोले,"जो लोग तुम लोगों
के लिए बाँटने का काम करेंगे, उनके नाम
हैं, एलीआजार याजक[a] और नून का बेटा
यहोशू। 18 देश का बँटवारा करने के लिए
एक-एक गोत्र का एक प्रधान हो। 19 इन
पुरुषों के नाम ये हैं : यहूदा के गोत्र का
यपुन्ने का बेटा कालेब, 20 शिमोन के गोत्र
का अम्मीहूद का बेटा शमूएल। 21 बिन्यामीन
के गोत्र का किसलोन का बेटा एलीदाद
22 दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का बेटा
बुक्की 23 यूसुफ़ियों में से मनश्शेइयों के गोत्र
का प्रधान एपोद का बेटा हन्नीएल 24 एप्रैमियों
के गोत्र का प्रधान शिप्तान का बेटा कमूएल,
25 जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का
बेटा एलीसापान 26 इस्साकारियों के गोत्र
का प्रधान अज्जान का बेटा पलतीएल,
27 आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का
बेटा अहीहूद, 28 नप्तालियों के गोत्र का प्रधान
अम्मीहूद का बेटा पदहेल। 29 जिन पुरुषों को
प्रभु कनान देश को इस्राएलियों के लिए बाँटने
का हुक्म दिया, वे ये ही हैं।

**35** प्रभु ने मोआब के अराबा में यरीहो
के पास के यर्दन नदी के किनारे पर
मूसा से कहा, 2 "इस्राएलियों को आदेश दो
,कि वे अपने खुद के हिस्से में से लेवियों
के रहने के लिए नगर दें। नगरों के चारों
ओर की चरागाह भी उन्हें दी जाए। 3 नगरों में
वे रहेंगे और चरागाह में अपने जानवरों को
चराएँगे। 4 ये चरागाह नगर की शहरपनाह से
बाहर चारों ओर एक-एक हज़ार हाथ तक की
हों। 5 नगर के बाहर पूर्व दक्षिण, पश्चिम और
उत्तर की ओर दो-दो हज़ार हाथ इस तरीके
से नापना कि नगर बिल्कुल बीच में हो।
लेवियों के एक-एक नगर के लिए चरागाह
की इतनी ज़मीन तो होनी ही चाहिए। 6 जो
नगर तुम लेवियों को दोगे, उन में से छैः
शरण के लिए हों। ये शहर खूनियों के बचाव
के लिए होंगे। इसके अलावा बयालीस नगर
और देना। 7 जितने नगर तुम लेवियों को
दो उनकी संख्या अड़तालीस हो। उन्हीं के
साथ चरागाह भी दिए जाएँ। 8 इस्राएलियों की
अपनी ज़मीन में जो नगर तुम लेवियों को दो,
जिन के बहुत नगर हों, उन से अधिक और
जिन के पास कम नगर हों, उन से कम लेकर
देना। सभी अपने-अपने नगरों में से लेवियों
को अपने ही हिस्से के अनुसार दें। 9,10 फिर
मूसा से प्रभु ने कहा, "यह बात इस्राएलियों
को बतलाओ कि जब वे यरदन नदी पार
कर कनान देश में पहुँचें, 11 तो ऐसे नगर भी
अलग करना, कर देने वाला वहाँ जाकर
अपना बचाव कर सकता है। 12 वे नगर
तुम्हारे लिए बदला लेने वाले से शरण लेने
के काम आएँगे। जब तक हत्यारा इन्साफ़
के लिए मण्डली के सामने न लाया जाए तब
तक उसे काट न डाला जाए। 13 शरण के
लिए दिए जाने वाले छैः नगर होंगे। 14 तीन
नगर यरदन नदी की इस ओर और तीन
कनान देश में। 15 ये छैः नगर इस्राएलियों
और उनके बीच रहने वाले परदेशियों के

[a] **34.16** पुरोहित

लिए भी शरण स्थान ठहरें, ताकि जो कोई
किसी को भूल से मारे, वह वही भाग जाएँ।
16 लेकिन यदि कोई व्यक्ति किसी को लोहे
के शस्त्र से इस तरह मारे कि वह मर जाए,
तो वह हत्यारा कहलाएगा। उसे मौत की
सज़ा अवश्य मिले। 17 यदि कोई पत्थर से
किसी पर हमला करके उसकी जान ले ले, तो
वह भी खूनी कहलाएगा और उसे मृत्यु-दण्ड
मिलना ही चाहिए। 18 या किसी के हाथ की
लकड़ी की मार से कोई मर जाए तो वह
भी हत्यारा होगा और उसे फाँसी की सज़ा
मिलनी चाहिए। 19 बदला लेने वाला खुद ही
हत्यारे की जान ले ले। 20 यदि दुश्मनी के
कारण कोई किसी को धक्का दे या छिपकर
कुछ फेंक कर मारे जिस से व्यक्ति की मौत
हो जाए, तो वह खूनी ही ठहरेगा। लहू का
बदला लेने वाला उसे पाते ही मार डाले।
21 या दुश्मनी से उसे अपने हाथ से ऐसा मारे
कि उसकी जान चली जाए, तो वह खूनी
ठहरेगा। वह जब भी खूनी को पाए, उसे
मार डाले। 22 लेकिन यदि कोई किसी को
बिना सोचे समझे या बिना किसी शत्रुता के
ढकेल दे या फेंक कर कुछ मारे 23 या ऐसा
पत्थर मारे जिस से जान जा सकती है। 24 तो
मण्डली मारने वाले और खून का बदला लेने
वाले के बीच इन नियमों के आधार पर न्याय
करे। 25 मण्डली उस खूनी को लहू का बदला
लेने वाले के हाथ से छुड़ा कर उसे शरण
नगर में जहाँ वह भाग कर रह रहा हो, लौटा
दे। महायाजक[a] के देहान्त तक वह वहीं रहे,
जिसे पवित्र तेल से अभिषेक दिया गया था।
26 लेकिन यदि वह हत्यारा उस शरण नगर
की सरहद से जिस में वह भाग गया हो, बाहर
निकल कर और किसी स्थान पर चला जाए।
27 खून का बदला लेने वाला उसको शरण
नगर की सीमा के बाहर कही जाकर मार
डाले, तो वह खूनी नहीं कहलाएगा। 28 खूनी
को महायाजक[b] के देहान्त तक शरण नगर
में रहना चाहिए और महापुरोहित की मृत्यु के
बाद वह अपनी भूमि पर वापस जा सकेगा।
29 भविष्य में तुम्हारी सन्तानों के लिए भी यही
रीति अपनायी जाए। 30 जो व्यक्ति किसी की
जान ले, गवाहियों के आधार पर मार डाला
जाए। केवल एक ही गवाह की कोई कीमत
नहीं है। 31 जो व्यक्ति फाँसी की सज़ा के
लायक है, उस से जुर्माना लेकर छोड़ मत
देना। 32 शरण नगर में शरण लेने वाले से भी
जुर्माना मत लेना कि वह याजक की मृत्यु से
पहले फिर अपने देश में रहने के लिए लौटे।
33 इसलिए जिस देश में तुम वास करो उसे
अशुद्ध न करना। हत्या से देश अपवित्र हो
जाता है। जिस देश में खून किया जाता है,
तब मात्र खूनी के खून बहाने ही से उस का
प्रायश्चित्त होता है। 34 जिस देश में तुम रहोगे,
उसको अशुद्ध मत करना। मैं प्रभु इस्राएल की
प्रजा के मध्य रहता हूँ।

**36** यूसुफ़ियों के कुलों में से गिलाद जो
माकीर का बेटा और मनश्शे का
पोता था, उसके वंश के कुल के पितरों
के घरानों के खास-खास पुरुष मूसा के
पास जाकर उन मुख्य लोगों के सामने, जो
इस्राएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य
पुरुष थे, कहने लगे, 2 "प्रभु ने हमारे प्रभु
को आदेश दिया है कि इस्राएलियों को चिट्ठी
डाल कर देश को बाँटना। फिर प्रभु की यह
भी आज्ञा हमारे स्वामी को मिली कि हमारे
भाई सलोफ़ाद का हिस्सा, उसकी बेटियों
को मिले। 3 लेकिन यदि वे इस्त्रालियों के
किसी अन्य गोत्र के पुरुष से ब्याही जाएँ तो

[a] **35.25** पुरोहित [b] **35.28** महापुरोहित

उनका हिस्सा हमारे पितरों के भाग से छूट
जाएगा। और जिस गोत्र में उनका विवाह हो,
उसी गोत्र के हिस्से में मिल जाएगा। ऐसे में
हमारा हिस्सा कम हो जाएगा। 4 इस्राएलियों
की जुबली के समय, जिस गोत्र में उनका
विवाह हो उसके हिस्से में उनका हिस्सा
ज़रूर मिल जाएगा। ऐसे में वह हमारे पितरों
के और वह हमारे पितरों के गोत्र के हिस्से
से हमेशा के लिए मुक्त हो जाएगा। 5 तब प्रभु
से आदेश हासिल करके मूसा ने इस्राएलियों
से कहा, "यूसुफ़ वंशियों के गोत्र सही कहते
हैं। 6 सलोफ़ाद की बेटियों के बारे में प्रभु ने
आज्ञा यह दी है, कि जो वर जिस की निगाह
में सही लगे, वह उसी से ब्याही जाए। 7 और
इस्राएलियों के किसी भी गोत्र का हिस्सा
दूसरे गोत्र के हिस्से में मिल सके। इस्राएली
लोग अपने-अपने मूल पुरुष के गोत्र के भाग
पर बने रहें। 8 इस्राएलियों के किसी भी गोत्र
में किसी की भी बेटी हो, जिस को उस का
हिस्सा मिलने वाला हो, वह अपने ही मूल
पुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से विवाह करे।
ऐसा इसलिए ताकि इस्राएली अपने अपने
मूल-पुरुष के भाग के हकदार रहें। 9 किसी
गोत्र का हिस्सा दूसरे गोत्र के हिस्से में न
मिल सके। इस्राएलियों के एक-एक गोत्र के
लोग अपनी -अपनी जगह बने रहें। 10 प्रभु से
निर्देष पाकर सलोफ़ाद की बेटियों ने वैसा
ही किया। 11 अर्थात् महला, तिर्सा, होग्ला,
मिल्का और नोआ, जो सलोफ़ाद की बेटियाँ
थी। उन्होंने अपने चचेरे भाईयों से शादी
की। 12 वे यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के वंश के
कुलों में ब्याही गयी थीं। उनका हिस्सा उनके
मूल-पुरुष के कुलों के गोत्र के वंश में ही बना
रहा। 13 मोआब के अराबा में यरीहो के पास
की यरदन नदी के किनारे पर जो आज्ञाएँ और
नियम प्रभु ने मूसा के माध्यम से इस्राएलियों
को दी थीं, वे ये ही हैं।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com